BLM Academy

Affiliated to C.B.S.E. New Delhi, C.B.S.E. Affiliation No.: 3530343
ISO 9001:2015 (QMS) Certified School

Wish You all a
Very Happy New Year

"The Best Way To Predict Your Future Is To Create It With BLM Academy."

Vision -
To prepare the children empowered with Indian ethical and spiritual values to face the global challenges.

Mission-
To produce enriched and enlightened human resource for the country.

Pillars -
SATYA, PURUSHARTH & PARAMARTH

Goal-
ब्रह्म तत् लक्ष्यम्

Admission Open
For The Academic Session 2024-25
(Classes Nursery to IX & XI)

LIMITED SEATS
APPLY NOW

Streams: Science, Commerce & Humanities

Celebrate The Gift of Life

+91 7055515681
+91 7055515683
www.blmacademy.com

Padampur Devaliya, Gora Parao,
Haldwani (Nainital), Uttarakhand

blma.principal@gmail.com

प्रणवो धनुः शरो हि आत्मा ब्रह्म तल्लक्ष्मुच्यते।
अप्रमत्तेन वेद्धव्यं शरवत्तन्मयो भवेत् ।। (मुण्डक उपनिषद)

पोस्टल रजि.नं.यूए-नैनीताल-356-2021-2023

अक्टूबर 2024

उत्तरांचल दीप

यशस्वी पत्रकार वेदप्रकाश गुप्ता को समर्पित

पत्रिका

धर्मनगरी में बढ़ती मुस्लिम आबादी

₹:40

संघर्ष की आग में झुलसता भारत ?

इजराइल, ईरान, लेबनान संघर्ष के सीमित रहने की संभावना कम है, इसका असर पूरे मिडिल ईस्ट में देखने को मिलेगा और भारत भी इस संघर्ष की आग में झुलस सकता है, भारत में महंगाई से लेकर शेयर मार्केट तक पर इसका असर देखने को मिलने लगा है।

ई-मेल: uttranchaldeepatrika@gmail.com

Web: uttaranchaldeep.com

मासिक
उत्तरांचल दीप
पत्रिका
वर्ष:7, अंक 6, अक्टूबर 2024

संस्थापक संपादक
स्व.वेदप्रकाश गुप्ता
प्रधान संपादक
साकेत अग्रवाल
संपादक
श्रीमती आदेश अग्रवाल
मुख्य कार्यकारी संपादक
केके चौहान
मुख्य उप संपादक
उदयभान सिंह
मार्केटिंग हेड
तारु तिवारी
प्रबंधक
दीपक तिवारी
वरिष्ठ संवाददाता
रवि दुर्गापाल

उत्तरांचल दीप ब्यूरो
दिल्ली : शालिनी चौहान
लखनऊ : पारस अमरोही
रुद्रप्रयाग : हिमांशु पुरोहित
नैनीताल : अफजल फौजी
अल्मोड़ा : कमल कपूर
पिथौरागढ़ : ललित जोशी
बागेश्वर : नरेंद्र बिष्ट
चंपावत : मनोज राय
बरेली : अनुज सक्सेना
मुरादाबाद : आशेंद्र कुमार अग्रवाल
डोईवाला : चंद्रमोहन कोठियाल
किच्छा : राजकुमार राज
रामनगर : एचसी भट्ट
थलूड़ : मुकेश रावत
रुद्रपुर : मुकेश गुप्ता
बाजपुर : इंद्रजीत सिंह
ग्राफिक्स डिजाइन: देवेंद्र सिंह बिष्ट
सभी पद अवैतनिक एवं परिवर्तनीय

मुख्यालय
हल्द्वानी: चंद्रकांता हाउस, जजी के सामने
नैनीताल रोड, हल्द्वानी (उत्तराखंड)

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक व संपादक श्रीमती आदेश अग्रवाल द्वारा उत्तरांचल दीप, चंद्रकांता हाउस, जजी के सामने नैनीताल रोड हल्द्वानी से मुद्रित व प्रकाशित।
आएनआई नंबर: UTTHIN/2018/77440
पोस्टल रजि.नं.यूए-नैनीतील-356-2021-2023

उत्तरांचल दीप पत्रिका में प्रकाशित लेख, पत्र व अन्य कालम में लेखकों के विचार होते हैं, उनसे संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
समस्त विवाद हल्द्वानी न्यायालय के अधीन होंगे।

www.uttaranchaldeep.com
uttranchaldeepatrika@gmail.com
+91 8881788066 @uttranchaldeep

अंदर

यादव, मुसलमान या सपा समर्थक जाति के अपराधियों को डकैती डालने की छूट होनी चाहिए? क्या सपा समर्थकों को बलात्कार तथा नकली करेंसी का कारोबार करने छूट होनी चाहिए, समाजवादी लोहिया वाहिनी के राष्ट्रीय सचिव तो नकली करेंसी का धंधा कर करते हुए पकड़े गए हैं।

साहस

टारगेट पर भारतीय रेल

सरकार और रेलवे को पटरियों के आसपास बनी मजारों की जांच करानी चाहिए यदि ये अवैध ...

सियासत

कांग्रेस के हिंदू विरोधी होनेके दस सबूत

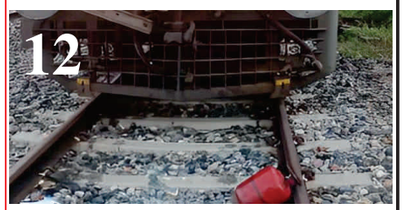

राहुल गांधी के बयानों की पाकिस्तानी मीडिया भी निंदा कर रही है, अमेरिका में रहने ...

चिंता

महाप्रसाद में महापाप

जांच रिपोर्ट में प्रसादम लड्डू में सोयाबीन, सूरजमुखी, जैतून, रेपसीड, अलसी, गेहूं के बीज, मक्का के बीज, कपास के बीज ...

सामायिक

क्या भरोसेमंद है न्यूयॉर्क टाइम्स?

द न्यूयॉर्क टाइम्स में एकदम टॉप पर दिल्ली के शिक्षा मॉडल की रिपोर्ट के साथ जो फोटो प्रकाशित हुई है वो दिल्ली के ...

साकेत अग्रवाल

सशक्त भू-कानून की उम्मीद

उत्तराखंड राज्य गठन के बाद से सशक्त भू-कानून लागू करने और मूल निवास प्रमाण-पत्र की मांग को लेकर आंदोलन होते रहे हैं, लेकिन अब तक की सरकारों ने इस पर कोई ध्यान नहीं दिया, किंतु मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी इन मुद्दों पर संवेदनशील नजर आते हैं इसलिए उन्होंने बड़ी घोषणा कर उत्तराखंड की इस मांग को पूरा करने की दिशा में बड़ा कदम उठाया है। सीएम पुष्कर सिंह धामी ने मीडिया से कहा कि वर्तमान में उत्तराखंड में नगर निकाय क्षेत्र से बाहर जिन उद्देश्यों से बाहरी लोगों को ढाई सौ वर्ग मीटर भूमि खरीदने की छूट दी गई थी उसका दुरुपयोग हुआ है। कुछ लोगों ने इस छूट को लूट का जरिया बना लिया, छूट का नाजायज फायदा उठाया और एक ही परिवार के कई सदस्यों के नाम से अलग-अलग भूमि खरीद कर लैंड बैंक बना लिया। यह सरकार के प्रावधानों का सीधे सीधे उल्लंघन है। लिहाजा सरकार इसकी जांच कराएगी और जिन लोगों ने छूट का अनुचित लाभ लिया है उनकी भूमि राज्य सरकार में निहित की जाएगी। उत्तराखंड में कुछ लोगों ने पर्यटन, उद्योग आदि व्यवसायिक गतिविधियों के लिए सरकार से अनुमति लेकर भूमि क्रय की है, परंतु उस भूमि का उपयोग दूसरे कार्यों में किया गया है, ऐसी जमीनों का सरकार विवरण तैयार करा रही है। मुख्यमंत्री ने स्पष्ट कर दिया कि जिन लोगों ने गलत तरीके से लैंड बैंक तैयार किया है या भू-उपयोग में गड़बड़ी की है उन्हें चिह्नित करने का पूरा होने पर दोषियों के खिलाफ सरकार सख्त कार्रवाई करेगी। उनकी जमीन राज्य सरकार में निहित की जाएगी। धामी का दावा है कि अगले सत्र में यानी शीतकालीन सत्र में उनकी सरकार प्रदेश की भौगोलिक परिस्थितियों के अनुरूप प्रदेश में भू-कानून का प्रस्ताव पेश करेगी। प्रदेश में सख्त भू-कानून का प्रारूप तैयार करने के लिए मुख्य सचिव की अध्यक्षता में कमेटी का गठन पहले ही किया जा चुका है। इसके बाद उत्तराखंड में बाहरी लोगों को जमीन की खरीद फरोख्त करने में सख्त भू-कानून का सामना करना होगा। जिन लोगों ने चालाकी से या सरकार की छूट का अनुचित लाभ लिया है उन पर गाज गिर सकती है। यानी धामी सरकार उत्तराखंड में जमीन का मिसयूज करने, गलत तरीके से लैंड बैंक तैयार करने वालों के पंख कतरने वाली है। सीएम धामी का मानना है कि सरकार यदि कुछ छूट लोगों की सहुलियत के लिए देती है, लेकिन कुछ लोग इसका दुरुपयोग करते हैं। क्योंकि 2017 में भू-कानून में जो बदलाव किए गए थे, उसके परिणाम सकारात्मक नहीं आए हैं। 2017 से पहले भूमि खरीदने के लिए जो अनुमति शासन स्तर से दी जाती थी, उसे बदलकर जिला स्तर पर कर दिया गया था। इसलिए माना जा रहा है कि सरकार 2017 के प्रावधानों की समीक्षा करने के बाद आवश्यक हुआ तो उन्हें समाप्त कर सकती है। क्योंकि 2017 में भू-कानून में जो प्रावधान किए गए उसके बाद बाहरी लोगों ने उत्तराखंड में बे-रोकटोक जमीने खरीदी और लैंड बैंक बना लिया।

उत्तराखंड गठन के बाद यहां बाहरी लोगों ने कृषि और बागवानी की जमीन मनमाने तरीके से खरीद कर होटल, गेस्ट हाउस बनाने शुरू कर दिए जिससे पहाड़ के लोगों को लगने लगा कि इस तरह की गतिविधियां कायम रही तो पहाड़ की पहचान संस्कृति, विरासत और यहां के मूल निवासियों की रोजी-रोटी को बड़ा नुकसान होगा। लिहाजा 2000 में राज्य गठन के साथ ही सख्त भू-कानून की मांग उठनी शुरू हो गई थी। अपनी पहचान, संस्कृति और विरासत कायम रखने के लिए भू-कानून की मांग को लेकर राजधानी देहरादून में पहली बार विशाल आंदोलन किया गया था। इस आंदोलन के दो मुद्दे थे, पहला सशक्त भू-कानून और दूसरा मूल निवास प्रमाण पत्र। उत्तराखंड के लोगों की मांग थी कि हिमाचल प्रदेश की तर्ज पर उत्तराखंड में भी सख्त भू-कानून बने। क्योंकि 2000 में उत्तर प्रदेश से अलग होकर उत्तराखंड का गठन ही अलग संस्कृति, बोली-भाषा को लेकर किया गया था। उस समय आंदोलनकारियों समेत प्रदेश के बुद्धिजीवियों को डर था कि प्रदेश की जमीन और संस्कृति भू-माफियाओं के हाथ में न चली जाए। इसलिए सरकार से भू-कानून की मांग की गई। उत्तराखंड के मूल निवासियों को लगता है कि कहीं ऐसा ना हो कि राज्य की सारी जमीन बिक जाए और यहां के लोग बेघर हो जाएं, इसलिए भी मजबूत भू-कानून की आवश्यकता है। वैसे भी मार्च 2021 और उससे पहले लंबे समय से ऐसे बहुत से तमाम मामले थे, जिन पर फैसले नहीं हो पा रहे थे। लेकिन धामी सरकार बनने के बाद कुछ कड़े और बड़े फैसले लिए गए हैं। लिहाजा माना जा रहा है कि भाजपा सरकार ही भू कानून के मुद्दे का समाधान करेगी। जनभावनाओं और सभी पक्षों से बातचीत करने, विशेषज्ञों के साथ बातचीत करके सही समय पर सही निर्णय लिया जा सकता है। हालांकि भू-कानून के मुद्दे पर राजनीति न हो ऐसा कैसे हो सकता है? कांग्रेस का कहना है कि कांग्रेस की पहली चुनी हुई सरकार के तत्कालीन मुख्यमंत्री एनडी तिवारी ने भू-कानून बनाया था, लेकिन त्रिवेंद्र सिंह रावत सरकार ने कॉरपोरेट के नाम पर, इंवेस्टमेंट के नाम पर, निवेश के नाम पर, भू कानून तहस-नहस कर दिया। खैर राजनीति अपनी जगह है और लोगों की चिंता अपनी जगह इसलिए है क्योंकि 24 सालों में एक सख्त भू-कानून नहीं बन पाया और उत्तराखंड की डेमाग्राफी चेंज हो गई। डेमोग्राफी चेंज होने से देवभूमि में जहां तहां मजारे, मस्जिद, मदरसे बनते चले गए और सरकारें तथा सरकारी स्सिटम सोता रहा, नतीजे सबके सामने हैं। बाहर से आकर बसे मुस्लिम सिर्फ पहाड़ की भोली-भाली बेटियों को बहला-फुसलाकर लव जिहाद का शिकार बना रहे हैं, धर्मान्तरण की कोशिश कर रहे हैं। यही होता रहा तो एक दिन उत्तराखंड जम्मू-कश्मीर की तरह मुस्लिम बहुल राज्य बन जाएगा।

वन नेशन वन इलेक्शन का विरोध क्यों

उत्तरांचल दीप डेस्क

न नेशन वन इलेक्शन यानी 'एक देश, एक चुनाव' की संभावना पर विचार करने के लिए बनी पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद की अध्यक्षता वाली उच्चस्तरीय समिति ने राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मू को अपनी रिपोर्ट सौंप दी है। समिति की सिफारिशों को मानकर केंद्र सरकार ने इस दिशा में पहला आधिकारिक कदम बढ़ा दिया है। यानी केंद्रीय कैबिनेट ने पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद की अध्यक्षता वाली उच्चस्तरीय समिति की सिफारिशों पर अनुमोदन की मोहर लगा दी है। रामनाथ कोविंद की अध्यक्षता वाली समिति का कहना है कि सभी पक्षों, जानकारों और शोधकर्ताओं से बातचीत के बाद ये रिपोर्ट तैयार की गई है। रिपोर्ट में आने वाले वक्त में लोकसभा और विधानसभा चुनावों के साथ स्थानीय निकायों व पंचायत चुनाव करवाने के मुद्दे से जुड़ी सिफारिशें भी शामिल की गई हैं। 191 दिनों में तैयार इस 18,626 पन्नों की रिपोर्ट में कहा गया है कि 47 राजनीतिक दलों ने अपने विचार समिति के साथ साझा किए थे जिनमें से 32 राजनीतिक दल वन नेशन वन इलेक्शन के समर्थन में थे। रिपोर्ट में कहा गया है, केवल 15 राजनीतिक दलों को छोड़कर शेष 32 दलों ने न केवल एक चुनाव प्रणाली का समर्थन किया बल्कि सीमित संसाधनों की बचत, सामाजिक तालमेल बनाए रखने और आर्थिक विकास को गति देने के लिए ये विकल्प अपनाने की जोरदार वकालत की। रिपोर्ट में कहा गया है कि वन नेशन वन इलेक्शन का विरोध करने वालों की दलील है कि इसे अपनाना संविधान की मूल संरचना का उल्लंघन होगा। ये अलोकतांत्रिक, संघीय ढांचे के विपरीत, क्षेत्रीय दलों को अलग-थलग करने वाला और राष्ट्रीय दलों का वर्चस्व को बढ़ाने वाला होगा। विरोध करने वालों का तर्क है कि ये व्यवस्था राष्ट्रपति शासन की ओर ले जाएगी। पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद की अध्यक्षता वाली इस समिति में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह, कांग्रेस के पूर्व नेता गुलाम नबी आजाद, 15वें वित्त आयोग के पूर्व अध्यक्ष एनके सिंह, लोकसभा के पूर्व महासचिव डॉ. सुभाष कश्यप, वरिष्ठ अधिवक्ता हरीश साल्वे और चीफ विजिलेंस कमिश्नर संजय कोठारी शामिल थे। इसके अलावा विशेष आमंत्रित सदस्य के तौर पर कानून राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) अर्जुन राम मेघवाल और डॉ. नितेन चंद्रा समिति में शामिल थे। वन नेशन वन इलेक्शन को लेकर समिति ने सिफारिश की है कि आजादी के बाद पहले दो दशकों तक लोकसभा व विधानसभा के चुनाव एक साथ होते रहे हैं। पहले दशक में सिर्फ दो चुनाव होते थे, अब हर साल कई चुनाव होने लगे है। इसलिए सरकार को एक साथ चुनाव के चक्र को बहाल करने के लिए कानूनी रूप से तंत्र बनाना चाहिए। समिति की सिफारिश है कि चुनाव दो चरणों में कराए जाएं। पहले चरण में लोकसभा और विधानसभाओं के चुनाव कराए जाएं। दूसरे चरण में स्थानीय निकायों व पंचायतों के चुनाव हों। इन्हें पहले चरण के चुनावों के साथ इस तरह कोऑर्डिनेट किया जाए कि लोकसभा और विधानसभा चुनाव के सौ दिनों के भीतर स्थानीय निकायों व पंचायत चुनावों को पूरा किया जाए सके। इसके लिए निर्वाचन आयोग की सलाह से एक मतदाता सूची और एक मतदाता फोटो पहचान पत्र की व्यवस्था की जाए। इसके लिए संविधान में जरूरी संशोधन किए जाएं।

समिति की सिफारिश में कहा गया है कि त्रिशंकु सदन या अविश्वास प्रस्ताव की स्थिति में नए सदन के गठन के लिए फिर से चुनाव कराए जा सकते हैं। इस स्थिति में नए लोकसभा या विधानसभा का कार्यकाल, पहले की लोकसभा या विधानसभा की बाकी बची अवधि के लिए ही होगा। इसके बाद सदन को भंग माना जाएगा। इन चुनावों को मध्यावधि चुनाव कहा जाएगा, पांच साल का कार्यकाल पूरा होने के बाद जो चुनाव होंगे वो आम चुनाव की श्रेणी में आएंगे। यानी इसके बाद लोकसभा और सभी राज्यों की विधानसभाओं के चुनाव एक साथ चुनाव कराए जा सकेंगे। लोकसभा और विधानसभा चुनावों के लिए जरूरी लॉजिस्टिक्स, जैसे ईवीएम मशीनों और वीवीपीएटी खरीद, मतदान कर्मियों और सुरक्षा बलों की तैनाती और अन्य व्यवस्था करने के लिए निर्वाचन आयोग पहले से योजना और अनुमान तैयार करेगा। जबकि स्थानीय निकायों व पंचायतों के चुनावों के लिए ये काम राज्य निर्वाचन आयोग करेगा। कोविंद समिति की सिफारिश पर कैबिनेट की मोहर लगने के बाद केंद्र की मोदी सरकार शीतकालीन सत्र के दौरान वन नेशन, वन इलेक्शन से जुड़ा प्रस्ताव संसद में पेश करने की सोच रही है। लेकिन इसके लिए आवश्यक संख्याबल उसके पास नहीं है। इसका मतलब है, उसे विपक्षी खेमे के सहयोग की जरूरत पड़ेगी। इस लोकसभा चुनाव के बाद से सत्ता पक्ष और विपक्ष के बीच जिस तरह का रिश्ता रहा है, उसे देखते हुए तो यह उम्मीद व्यावहारिक नहीं लगती कि विपक्ष इस मामले में किसी तरह का सहयोग करेगा। क्योंकि उच्चस्तरीय समिति ने 62 राजनीतिक दलों से संपर्क किया है। इनमें से 47 ने जवाब दिया, 32 दल पक्ष में थे और 15 ने विरोध किया। पूरे देश में एक साथ चुनाव कराने के पीछे सबसे बड़ा तर्क है कि इससे खर्च में कटौती होगी। यह तर्क भी जोरदार है कि अभी लगभग हर वर्ष देश के किसी न किसी हिस्से में चुनावी माहौल रहता है, जिससे विकास कार्य प्रभावित होते हैं। यह बात भी सही है कि एक साथ चुनाव उन छोटे दलों के लिए सुविधाजनक होंगे, जिनके पास बार-बार प्रचार में उतरने लायक पैसे नहीं होते। बार-बार चुनावों के खर्च से बचने का तर्क अपनी जगह ठीक है, लेकिन यही तर्क इस प्रस्ताव के खिलाफ भी काम करता है। सवाल यह है कि पूरे देश में एक साथ इलेक्शन कराने के लिए जितने बड़े पैमाने पर संसाधन चाहिए, क्या उसे जुटाया जा सकेगा? हालिया लोकसभा चुनाव सात चरणों में हुए थे। राज्यों के विधानसभा चुनाव भी अलग-अलग चरणों में कराने पड़ रहे हैं। हालांकि आजादी के बाद देश में पहले चार चुनाव एक साथ हुए थे। उसके बाद काफी समय तक यह स्थिति बनी रही। लेकिन तब परिस्थितियां दूसरी थीं। केंद्र और राज्यों में एक ही पार्टी की सरकार होती थी। क्षेत्रीय दलों के ताकतवर होने से राजनीतिक सिस्टम में विविधता आई है। देश के हर राज्य की अपनी जरूरतें हैं और अपने मुद्दे। हर चुनाव इन खास मुद्दों के इर्द-गिर्द लड़ा जाता है। किसी भी बदलाव में देश की इस अनेकता का ध्यान रखा जाना चाहिए, क्योंकि यही तो लोकतंत्र की ताकत है।

सुर्खियां

कंचन को बेस्ट डायरेक्टर अवार्ड

सांस्कृतिक नगरी अल्मोड़ा के रानीधारा निवासी युवा फिल्म लेखक व निर्देशक कंचन पंत को स्पेन के प्रतिष्ठित इमेजिन इंडिया फिल्म फेस्टिवल में बेस्ट डायरेक्टर का अवार्ड मिला है। कंचन पंत को यह अवार्ड उनकी फिल्म 'डियर लतिका' के लिए दिया गया है। 1 से 16 सितंबर तक स्पेन के मड्रिड शहर में आयोजित फिल्म फेस्टिवल में भारत, ऑस्ट्रेलिया, फ्रांस, चीन, फिलीपींस, ब्रिटेन और जर्मनी सहित दुनिया के कई देशों की सैकड़ों फिल्मों की स्क्रीनिंग हुई, जिसमें से कंचन पंत को सर्वश्रेष्ठ निर्देशक चुना गया। 'डियर लतिका' को ऑस्ट्रेलियन फिल्म 'लिंबो' के साथ सर्वश्रेष्ठ फिल्म का खिताब भी मिला। इसके अलावा फिल्म को सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री की श्रेणी में नामांकित किया गया था। फिल्म में मनीष डिमरी और पल्वी जसवाल ने मुख्य भूमिकाएं निभाई है, जबकि रजत सुखीजा, नरेंद्र सिंह बिष्ट, मदन मेहरा और गोपा नयाल ने अहम किरदार निभाए है। 'डियर लतिका' उत्तराखंड के परिवेश में बनी फिल्म है, जिसका फिल्मांकन अल्मोड़ा और नैनीताल के क्षेत्रों में किया गया है। कंचन पंत की यह पहली फीचर फिल्म है, जो बेहद कम बजट में बनाई गई है। इस फिल्म ने पहले ही एनएफडीसी फिल्म बाजार, मामी मुंबई फिल्म फेस्टिवल, न्यूयॉर्क इंडियन फिल्म फेस्टिवल और त्रिसूर इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल में दर्शकों और समीक्षकों का दिल जीत लिया है। 'लिपस्टिक अंडर माई बुर्का', 'चिल्लर पार्टी' जैसी फिल्मों और 'बालिका वधू', 'ना आना इस देश मेरी लाडो' जैसे टीवी सीरियल्स की मशहूर अभिनेत्री सोनल झा ने भी इस फिल्म में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। कंचन पंत इससे पहले रेडियो के बेहद लोकप्रिय स्टोरीटेलिंग शो 'यादों का इडियट बॉक्स' के लिए लिखी 250 से ज्यादा कहानियों से अपनी पहचान बना चुकी हैं। उनकी लिखी एक शॉर्ट फिल्म 'शिकायत' डिजनी हॉटस्टार पर उपलब्ध है।फिल्म की निर्देशक कंचन पंत का कहना है कि 'डियर लतिका' को मिला सम्मान इस बात का प्रमाण है कि सिर्फ कॉन्टेंट के दम पर अच्छी फिल्में बनाई जा सकती हैं। कंचन चाहती हैं कि वो फॉर्मूला और स्टार ड्रिवन फिल्मों से परे ऐसी फिल्में बनाएं, जो सीधे लोगों के दिलों तक पहुंचें। उनका कहना है कि वो शीघ्र ही उत्तराखंड के परिवेश पर एक नई फिल्म का निर्माण करने जा रही जिसकी पटकथा को अंतिम स्वरूप दिया जा रहा हैं। फिल्म निर्देशक कंचन पंत के पति सरभ पंत बहुराष्ट्रीय बैंकिग सेक्टर में उच्चपद पर आसीन होने के बाद भी अल्मोड़ा के रानीधारा में रिवर्स पलायन को रोकने के लिए सेब की खेती, पशुपालन, मत्स्य पालन एंव कुकुट उद्योग को बढ़ावा देकर स्थानीय युवाओं को स्वरोजगार से जोड़ने की मुहिम चला रहे हैं। जिसमें उन्हें स्थानीय लोगों का भरपूर सहयोग मिल रहा हैं।

केदारघाटी में प्रवेश प्रतिबंध

केदारघाटी के ग्रामीण इलाकों में बाहरी व्यक्तियों के प्रवेश को लेकर लगाए गए साइन बोर्ड में ग्रामीणों ने बाहरी व्यक्तियों को चेतावनी दी है कि अगर वे गांव में प्रवेश करेंगे तो उनके खिलाफ 5000 रुपये का अर्थदंड लगाने के साथ कानूनी कार्रवाई की जाएगी। चेतावनी भरे साइन बोर्ड लगने के बाद पुलिस भी हरकत में आ गई और बाहरी व्यक्तियों के प्रवेश पर प्रतिबंध संबंधी साइन बोर्ड हटा दिए। पहाड़ों में आपराधिक घटनाएं लगातार बढ़ रही हैं। कई घटनाओं में बाहरी लोगों का हाथ होना पाया गया। श्रीनगर और नंदानगर की घटनाओं को लेकर हिंदू संगठन से लेकर सामाजिक कार्यकर्ताओं में आक्रोश था। लिहाजा केदारघाटी के सामाजिक कार्यकर्ता अशोक सेमवाल ने स्थानीय लोगों के साथ मिलकर एक मुहिम छेड़ी। जिसके तहत बाहरी लोगों के प्रवेश को लेकर पाबंदी लगाने के लिए साइन बोर्ड लगाए गए। ताकि अराजक तत्व पहाड़ के ग्रामीण इलाकों का माहौल खराब न करें। इससे पहले रोहिंग्या और मुस्लिमों के प्रवेश पर प्रतिबंध से जुड़े चेतावनी साइन बोर्ड लगाए गए थे। हालांकि बाद में बाहरी लोगों के प्रवेश पर पाबंदी के साइन बोर्ड लगाए गए। इस मामले में रुद्रप्रयाग के पुलिस अधीक्षक अक्षय प्रह्लाद कोंडे का कहना है कि ग्रामीण क्षेत्रों में बाहरी लोगों के प्रवेश पर पाबंदी को लेकर साइन बोर्ड लगाकर सामाजिक सौहार्द को खराब करने का प्रयास किया जा रहा था। जिन जगहों पर ये साइन बोर्ड लगाए गए थे उन्हें हटवा दिया है। इसके अलावा ग्राम प्रधानों को सख्त चेतावनी दी गई है कि वे इस तरह के साइन बोर्ड न लगाएं। ग्राम प्रधान के अलावा किसी अन्य व्यक्ति को भी इस तरह के बोर्ड लगाने का अधिकार नहीं है। अगर ऐसा किया गया तो उसके खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी। हम स्थानीय लोगों की भावनाओं और कानून को ध्यान में रखकर कार्रवाई करेंगे।

भीख मंगवाने वाली बीवी

धार्मिक स्थलों के बाहर या पर्यटन स्थलों पर आपने भिखारियों को जरूर देखा होगा। चौराहों, रेड लाइट, बस स्टैंड, रेलवे और मेट्रो स्टेशनों पर भी भिखारियों की दयनीय स्थिति को देखकर आपका भी दिल पसीज जाता होगा। ऐसे में आपका हाथ भी सहसा जेब में चला जाता होगा और आप भी कुछ न कुछ रुपये उन्हें पकड़ा ही देते होंगे। लेकिन कुछ लोग भिखारियों का गैंग चलाते हैं, यह जानकारी भी आपको होगी ही। गरीब, अनाथ और असहाय लोगों को जबरन इस धंधे में धकेला जाता है। यही नहीं उन्हें प्रताड़ित भी किया जाता है। ऐसा ही एक अनोखा मामला कानपुर में सामने आया है, लेकिन यह अपनी तरह का अनूठा मामला है। दरअसल मूल रूप से बाराबंकी का रहने वाला दिव्यांग मुनव्वर हुसैन कानपुर में रहता है। वह अपनी फरियाद लेकर कानपुर के पुलिस कमिश्नर के दरबार में पहुंचा और पत्नी से तलाक दिलाने की गुहार लगाई है। इस शख्स ने पुलिस कमिश्न को बताया कि उसकी बीवी उससे भीख मंगवाती है। भीख न मांगने पर उसके साथ मारपीट करती है। उसने बताया कि पिछले पांच महीने में वह भीख मांगकर पांच लाख रुपये अपनी बीवी को दे चुका है। फिर भी मेरी पत्नी का जुल्म खत्म नहीं हो रहा। वो मुझे रोज पीटती है, भीख मांगने के लिए भेजती है। मेरा तलाक करवा दीजिए। मैं ऐसे घुट-घुट कर नहीं रह सकता। यह मामला अनोखा इसलिए है क्योंकि यहां भीख माफिया नहीं बल्कि एक बीवी अपने पति को भीख मांगने के लिए विवश करती है। मीडिया रिपोर्ट के अनुसार कानपुर में जो व्यक्ति पुलिस कमिश्नर के पास फरियाद लेकर पहुंचा उसके दोनों पैर और एक हाथ नहीं है। मुनव्वर का कहना है कि उसकी बीवी के दबंगों से संबंध हैं। वे घर पर जमघट लगाए रहते हैं। मैं भीख मांगकर घर जाता हूं, तो मारपीट कर पैसे छीन लेते हैं। इनमें एक हिस्ट्रीशीटर का बेटा भी है। दिव्यांग युवक की बातें सुनकर पुलिस वाले भी हैरान रह गए। उन्होंने मुनव्वर को भरोसा दिलाया कि उसे न्याय जरूर मिलेगा। बाराबंकी का रहने वाला दिव्यांग मुनव्वर हुसैन पिछले कई वर्षों से कानपुर शहर के सीसामऊ, परेड और नवीन मार्केट जैसे इलाकों में भीख मांगता है। अगर दिव्यांग मुनव्वर का दावा सही है कि वो पांच महीने में भीख मांगकर पांच लाख रुपये अपनी बीवी को दे चुका है, तो यह चौकाने वाली बात है। क्योंकि एक भिखारी की एक महीने की कमाई एक लाख रुपये हर किसी को हैरान तो करेगी ही। क्योंकि 50-60 हजार रुपये महीना कमाने वाले के ठाठ-बाट अलग होते हैं, लेकिन एक लाख रुपये महीना कमाने वाला भिखारी देखने में दरिद्र ही लगेगा।

निशाने पर सनातन

कहीं से प्रसाद में मिलावट की खबर आती है तो सनातनी हिंदुओं की आस्था को ठेस पहुंचती है, कहीं हिंदू धर्मस्थलों में मुसलमानों की घुसपैठ होती है तो हिंदू टारगेट होते हैं। रोहिंग्या मुसलमान भगवा धारण कर धार्मिक आयोजनों तथा मेलों में घुसपैठ कर भीख मांगकर अथवा ठगी करके सनातन को बदनाम करते हैं, देवभूमि में भगवा पहनकर रोहिंग्या मांसाहार कर सनातन की ही बदनामी कर रहे हैं। आखिर मुसलमानों और रोहिंग्यों का इरादा क्या है? क्या ये सब सनातन को बदनाम करने का कट्टरपंथियों का कोई षडयंत्र है? ये सवाल इसलिए क्योंकि अल्मोड़ा जिले के पेटशाल गांव स्थित शिव मंदिर में वकील नाम का मुस्लिम युवक साधू वेष धारण कई महीनों से धूनी रमाए हुए था। ग्राम प्रधान कैलाश प्रसाद का कहना है कि ग्रामीण उसके यहां धूनी लगाने के बाद से ही उसकी गतिविधियों पर नजर रखे हुए थे। सितंबर में ग्रामीणों ने वीडियो बनाने के साथ भगवाधारी मुस्लिम युवक से पूछताछ की। उससे धार्मिक श्लोक सुनाने का कहा तो वो सकपका गया। उसका नाम-पता पूछा तो वो आनाकानी करने लगा। इससे उस पर संदेह और गहरा गया। लिहाजा ग्रामीण ने खुद ही उसकी छानबीन शुरू कर दी। ग्रामीणों ने उसके सामान की तलाशी ली तो उसका जो आधार कार्ड मिला उसे देख सब चौंक गए। क्योंकि आधार कार्ड में उसकी असली पहचान वकील अंसारी के रूप में दर्ज थी। वह मूल रूप से उत्तर प्रदेश के आगरा का रहने वाला है। मुस्लिम युवक के शिव मंदिर में धूनी लगाकर रहने से ग्रामीण भड़क गए और तुरंत उसे मंदिर से खदेड़ दिया। भगवाधारी वकील अंसारी के गांव से चले जाने के बाद तमाम सवालों के जवाब मिलने मुश्किल हो गए हैं, क्योंकि अहम सवाल ये हैं कि मुस्लिम युवक ने मंदिर में अपना ठिकाना क्यों बनाया था? वह किस षडयंत्र के तहत हिंदुओं के धार्मिक स्थल में धुनी रमाकर रह रहा था? क्या साधू वेष धारण कर वो किसी जिहाद के लिए गांव में आया था? क्या वो किसी आतंकी संगठन से जुड़ा था? उसका भगवा धारण करने के पीछे मकसद क्या था? सवाल उत्तराखंड पुलिस से भी होना चाहिए कि वो देवभूमि में भगवा धारण कर घूमने वाले रोहिंग्यों का सत्यापन क्यों नहीं कर रही? पुलिस के सत्यापन में कितने रोहिंग्या पकड़ में आए ये पुलिस ने कभी सार्वजनिक नहीं किया? क्या पुलिस की इस कमजोरी से मुस्लिम हिंदुओं के धार्मिक स्थलों में घुसपैठ कर रहे हैं? क्या सत्यापन के नाम पर सिर्फ खानापूरी हो रही है? क्योंकि रिक्शा चलाने वाले घुसपैठिये से ज्यादा खतरनाक भगवा धारण करने वाले मुस्लिम घुसपैठिये हैं? इसलिए उत्तराखंड के लोगों की मांग है कि बाहरी राज्यों से आए लोगों के सत्यापन में तेजी लाई जाए। उत्तराखंड में असली साधु संतों से ज्यादा रोहिंग्या भगवाधारी घूम रहे हैं। इन्हें सत्यापन के दौरान गिरफ्तार कर उत्तराखंड से बाहर निकाला जाना चाहिए। कुछ घुसपैठिये पहले फेरी लगाते हुए गांवों में पहुंचते हैं फिर जंगल में मजार बनाकर उसके खादिम बन जाते हैं और लव जिहाद, लैंड जिहाद पर उतर आते हैं। इस तरह के बाहरी तत्वों के खिलाफ पुलिस को सख्त ऐक्शन लेना चाहिए ताकि देवभूमि की संस्कृति बची रह सके।

संघर्ष की आग में झुलसता भारत?

इजराइल, ईरान, लेबनान संघर्ष के सीमित रहने की संभावना कम है, इसका असर पूरे मिडिल ईस्ट में देखने को मिलेगा और भारत भी इस संघर्ष की आग में झुलस सकता है, भारत में महंगाई से लेकर शेयर मार्केट तक पर इसका असर देखने को मिलने लगा है।

केके चौहान

भारत से चार हजार किलोमीटर दूर इजराइल और ईरान के बीच संघर्ष दिन पर दिन भीषण हो रहा है। इस युद्ध की आग क्या भारत को भी झुलसाएगी? क्योंकि संघर्ष लम्बा चलता है तो भारत को महंगाई काबू में रखना मुश्किल हो जाएगा। क्योंकि अभी तक धमकी देने वाले ईरान ने इजराइल पर मिसाइलों से हमला करके इसका पारा एक लेवल और बढ़ा दिया है। ऐसे में अब ये आग सिर्फ इजराइल, ईरान और लेबनान तक सीमित रहने की संभावना कम हो गई है, बल्कि इसका असर पहले पूरे मिडिल ईस्ट में देखने को मिलेगा, लिहाजा भारत भी इस संघर्ष की आग में झुलस सकता है। यानी भारत में महंगाई से लेकर शेयर मार्केट तक पर इसका असर देखने को मिलने लगा है। क्योंकि भारत अपनी जरूरत का 80 प्रतिशत से ज्यादा पेट्रोलियम आयात करता है। भारत में पेट्रोल और डीजल का महंगाई से सीधा कनेक्शन है। क्योंकि देश में माल की ढुलाई मालवाहक वाहनों पर ज्यादा निर्भर हैं। ऐसे में अगर इजराइल-ईरान संघर्ष से पेट्रोलियम के दाम बढ़ते हैं, तो भारत में सब्जियों से लेकर दूध और अन्य सभी जरूरी चीजों के दाम बढ़ना निश्चित है। ईरान के इजराइल पर हमले का प्रभाव कच्चे तेल की कीमतों पर देखने को मिलने लगा है। कच्चे तेल की कीमत में चार फीसदी का उछाल देखा गया है। ब्रेंट फ्यूचर का भाव 3.5 प्रतिशत बढ़कर 74.2 डॉलर प्रति बैरल पहुंच गया है। जबकि अमेरिका वेस्ट टेक्सास इंटरमीडिएट क्रूड ऑयल 2.54 डॉलर यानी 3.7 फीसदी की बढ़त के साथ 70.7 डॉलर प्रति बैरल तक पहुंच गया है। इजराइल-ईरान संघर्ष के नए घटनाक्रम के बाद अब ये भी देखना होगा कि भारतीय रिजर्व बैंक की मौद्रिक नीति समिति की जो अगली बैठक होगी, उसमें क्या रेपो रेट में कटौती का फैसला लिया जाएगा। आरबीआई के सामने इस वक्त एक-दो नहीं बल्कि कई चुनौतियां हैं। सबसे पहले अमेरिका के फेडरल रिजर्व का पिछले महीने ब्याज दरों को घटाना, दूसरा चीन का अपनी इकोनॉमी को 142 अरब डॉलर का बेलआउट पैकेज देना। अब इजराइल-ईरान संघर्ष से कच्चे तेल की कीमतें बढ़ने से महंगाई में इजाफा होने का डर है। ऐसे में बड़ी मुश्किल से हाथ में आई महंगाई को फिर से नियंत्रण से बाहर जाने से रोकने के लिए आरबीआई को कड़ा और बड़ा फैसला करना पड़ सकता है। लेकिन समस्या यहीं खत्म नहीं होगी क्योंकि फेस्टिव सीजन में देश के अंदर डिमांड साइड को बढ़ाने के लिए भी आरबीआई को संतुलन बनाना होगा। अभी देश में डिमांड की हालत ये है कि कार डीलरों के पास 70,000 करोड़ रुपये से अधिक की कार इंवेंटरी में पड़ी हैं। इसलिए कार कंपनियों ने कारों पर भारी डिस्काउंट ऑफर्स दे रखा है, फिर भी अनिश्चितता दिखाई दे रही है।

शेयर बाजार पर कैसे होगा असर?

भारत का शेयर बाजार दुनिया के बाकी बाजार की तरह इंटरनेशनल इवेंटस से प्रभावित होता है। हाल में अंतरराष्ट्रीय बाजार में गिरावट दर्ज की गई है। हाल के दिनों में एसएंडपी 1.4 प्रतिशत तक गिरा है। आईटी सेक्टर में नरमी बनी हुई है। एपल, एनवीडिया और माइक्रोसॉफ्ट के शेयरों में बड़ी गिरावट दर्ज की गई है। रिहोल्ट्ज वेल्थ मैनेजमेंट की रिपोर्ट के हवाले से टीओआई ने कहा है कि इजराइल-ईरान युद्ध की वजह से कच्चे तेल और सोने का भाव बढ़ा हुआ है, जबकि शेयर बाजार में नरमी है। इजराइल-ईरान संघर्ष का असर भारतीय बाजार पर भी होगा, क्योंकि ये मार्केट में एफआईआई के मनी फ्लो को परेशान करेगा। इसके अलावा क्रूड ऑयल प्राइस इंडेक्स, डॉलर इंडेक्स और गोल्ड की ऊंची कीमतें बाजार के मूवमेंट पर असर डालेंगी। इतना ही नहीं, इस दौरान चीन ने इकोनॉमी के लिए जो बेलआउट पैकेज दिया है, उससे वहां के शेयर बाजार में बूम है, जो एफआईआई के पैसे के मूवमेंट को इंडियन बाजार की बजाय चीन शिफ्ट कर सकता है। इससे भारतीय शेयर बाजार में संशोधन की संभावना शुरू हो गई है।

पहली बार पेजर बम का नाम सामने आया तो दुनिया सहम गई, सवाल उठा कि इजराइल ने कैसे पेजर का इस्तेमाल बम के रूप में किया ये हर किसी की समझ से परे हैं, लेकिन इजराइल की यह एक लंबी रणनीति थी जिसे आप 'मोइंग द ग्रास स्ट्रैटेजी' नाम दे सकते हैं।

निर्यातकों की चिंता बढ़ी

इजराइल-ईरान के बीच तनाव से ग्लोबल ट्रेड के मोर्चे पर भारत को नुकसान हो रहा है। निर्यातकों का कहना है कि पश्चिम एशियाई क्षेत्र में संघर्ष बढ़ने से पहले से ही लॉजिस्टिक्स कॉस्ट काफी बढ़ चुकी है। अब इसके और बढ़ने से कच्चे तेल, इलेक्ट्रॉनिक्स और एग्रीकल्चर सेक्टर्स में बिजनेस को नुकसान पहुंच सकता है। युद्ध में सीधे तौर पर शामिल देशों को निर्यात करने पर इंश्योरेंस कॉस्ट बढ़ सकती है, जिसका भारतीय निर्यातकों की कार्यशील पूंजी पर असर पड़ेगा। शोध संस्थान ग्लोबल ट्रेड रिसर्च इनिशिएटिव (जीटीआरआई) का कहना है कि संघर्ष पहले से ही इजरायल, जॉर्डन और लेबनान जैसे देशों के साथ भारत के व्यापार को नुकसान पहुंचा रहा है। निर्यातकों के प्रमुख संगठन फेडरेशन ऑफ इंडियन एक्सपोर्ट ऑर्गेनाइजेशन (फियो) का कहना है कि इजराइल-ईरान संघर्ष में कई तरीकों से वर्ल्ड ट्रेड और ग्लोबल इकोनॉमी को प्रभावित करने की क्षमता है। फियो के महानिदेशक अजय सहाय का कहना है कि ईरान तेल बाजार में एक प्रमुख कारोबारी है। संघर्ष के दौरान कच्चे तेल की सप्लाई को बाधित कर सकती है, जिससे कीमतें बढ़ सकती हैं, जिसका असर ग्लोबल इकोनॉमी पर पड़ेगा, खासकर उन पर जो तेल आयात पर निर्भर हैं। तेल की कीमतें पहले ही चार डॉलर प्रति बैरल बढ़ चुकी हैं। इजराइल-ईरान के बीच तनाव बढ़ने से पश्चिम एशिया में अस्थिरता आ सकती है, जिससे होर्मुज जलडमरू मध्य जैसे व्यापार मार्ग प्रभावित हो सकते हैं, जिसके माध्यम से दुनिया के कच्चे तेल का एक बड़ा हिस्सा गुजरता है। क्योंकि व्यवधानों की वजह से शिपिंग कॉस्ट बढ़ सकती है। कई ग्लोबल सप्लाई चेन पश्चिम एशिया की स्थिरता पर निर्भर करती हैं। अक्टूबर, 2023 में शुरू हुआ इजराइल-हमास संघर्ष अब लेबनान, सीरिया तक फैल गया है और अप्रत्यक्ष रूप से जॉर्डन और ईरान भी इसमें शामिल हो रहे हैं। चालू वित्त वर्ष में अप्रैल से जुलाई के बीच भारत का इजराइल को निर्यात 63.9 करोड़ डॉलर का रहा। जबकि वर्ष 2023-24 में यह 4.52 अरब डॉलर का था। वित्त वर्ष के पहले चार महीनों के दौरान इजराइल से आयात 46 करोड़ 94.4 लाख डॉलर का था। जबकि वर्ष 2023-24 में यह दो अरब डॉलर का हुआ था। इस वित्त वर्ष में अप्रैल-जुलाई के दौरान ईरान को भारत का निर्यात 53 करोड़ 85.7 लाख डॉलर का था। जबकि वर्ष 2023-24 में यह 1.22 अरब डॉलर का था। इस वित्त वर्ष के पहले चार महीनों के दौरान ईरान से आयात 14 करोड़ 6.9 लाख डॉलर का था और वर्ष 2023-24 में यह 62 करोड़ 51.4 लाख डॉलर का हुआ था। इस वित्त वर्ष में अप्रैल से जुलाई के दौरान जॉर्डन को भारत ने 22 करोड़ 85.6 लाख डॉलर का निर्यात किया, जबकि वर्ष 2023-24 में यह 1.46 अरब डॉलर था। इस वित्त वर्ष के पहले चार महीनों के दौरान जॉर्डन से आयात 69 करोड़ 92.8 लाख डॉलर का हुआ जो वर्ष 2023-24 में 1.4 अरब डॉलर था। इस वित्त वर्ष में अप्रैल से जुलाई के दौरान लेबनान को भारत ने 11 करोड़ 68.6 लाख डॉलर का निर्यात किया जो वर्ष 2023-24 में 34 करोड़ 49.1 लाख डॉलर था। इस वित्त वर्ष के पहले चार महीनों के दौरान लेबनान से आयात 3.9 करोड़ डॉलर का हुआ जो वर्ष 2023-24 में 11.3 करोड़ डॉलर था। पश्चिमी एशियाई देशों को भारत बासमती चावल, मानव निर्मित धागा, कपड़े, रत्न, आभूषण, सूती धागे और कपड़े निर्यात करता है। भारत एशिया में इजरायल का दूसरा सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार है।

युद्ध फैलने का डर

27 सितंबर को इजराइल ने लेबनान की राजधानी बेरूत के दक्षिण हिस्से में हिजबुल्लाह के मुख्यालय को ध्वस्त कर सोशल मीडिया पर लिखा-'हसन नसरल्लाह अब दुनिया को आतंकित नहीं कर पाएगा।' लेकिन मामला यहां रुकना नहीं था और रुका भी नहीं। ईरान ने जहां इजराइल पर सीधा मिसाइल से हमला किया वहीं डेनमार्क में इजराइली दूतावास के पास बम विस्फोट कर दिया। इसके साफ संकेत ये हैं कि ईरान सीधे हमले के साथ प्रॉक्सी वॉर भी तेज कर सकता है। जाहिर है, अब सबसे बड़ा डर यह पैदा हो गया है कि क्या यह युद्ध फैल जाएगा? अगर इसका दायरा बढ़ा तो युद्ध कितना लंबा चलेगा? इसका फिलहाल किसी के पास जवाब नहीं है, लेकिन जहां तक इजराइल की बात है तो जिस तरह से वह हमास के बाद हिजबुल्लाह के पीछे पड़ा है, उससे सवाल पैदा हो रहा है कि आखिर उसका असली दुश्मन कौन है? इजराइल के पूर्व प्रधानमंत्री बेनेट कह चुके हैं कि तेहरान ऑक्टोपस का सिर है, तो लेबनान में हिजबुल्लाह, गाजा में हमास और यमन में हूती उसके हाथ हैं। ऐसे में क्या हकीकत में इजराइल ऑक्टोपस के हाथों को काटने के लिए युद्धों के जरिए खुद को थकाने का रिस्क ले रहा है? हिजबुल्लाह एक आतंकी संगठन है, इसलिए उसका खात्मा जरूरी है, लेकिन यह बात विशेषज्ञ पहले से कह रहे हैं कि इजराइल को अपनी ताकत का उपयोग तेहरान के बजाय बेरूत के खिलाफ करना चाहिए, क्योंकि लेबनान एक मिश्रित आबादी वाला देश है, जिसमें ईसाई और सुन्नी हिजबुल्लाह के साथ कभी नहीं हो सकते।

- **इजराइल-ईरान संघर्ष से कच्चे तेल की कीमतें बढ़ने से महंगाई में इजाफा होने का डर है, ऐसे में बड़ी मुश्किल से हाथ में आई महंगाई को फिर से नियंत्रण से बाहर जाने से रोकने के लिए आरबीआई को कड़ा और बड़ा फैसला करना पड़ सकता है।**
- **शोध संस्थान ग्लोबल ट्रेड रिसर्च इनिशिएटिव (जीटीआरआई) का कहना है कि इजराइल-ईरान संघर्ष पहले से ही इजरायल, जॉर्डन और लेबनान जैसे देशों के साथ भारत के व्यापार को नुकसान पहुंचा रहा है।**

पेजर बम क्यों?

ईरान, इजराइली की कार्रवाई को 'मास मर्डर' कहता है। हानिया की मौत के बाद उसने कहा था कि इजराइल ने लक्ष्मण रेखा पार कर दी है। वो इसका बदला अवश्य लेगा। हिजबुल्लाह प्रमुख नसरल्लाह के मारे जाने के बाद तो यह अवश्यंभावी हो गया था। अगर यह मान लिया जाए कि ईरान मिसाइल हमले के बाद अपना बदला पूरा हुआ मान लेता है तब भी यह सवाल बाकी रहता है कि इजराइल इसका कब और कैसा जवाब देने वाला है? फिर ईरान से उस पर कैसी प्रतिक्रिया आती है? ये सवाल भी है कि इन सबमें अमेरिका का रुख कैसा होगा? फिलहाल ये सवाल बहुतों की समझ में नहीं आ रहा कि आखिर इजराइल, हिजबुल्लाह चीफ को मौत के घाट उतारने में कैसे सफल हो गया? दरअसल 2006 आते-आते इजराइल समझ चुका था कि हिजबुल्लाह को समाप्त करना आसान नहीं है। इसलिए उसने हिजबुल्लाह कमांडरों को निशाना बनाने का फैसला किया। इसके लिए इजराइल डिफेंस स्ट्रैटेजी बना चुका था। पहली बार पेजर बम का नाम सामने आया तो दुनिया सहम गई। सवाल उठा कि इजराइल ने कैसे पेजर का इस्तेमाल बम के रूप में किया ये भी हर किसी की समझ से परे हैं, लेकिन इजराइल की यह एक लंबी रणनीति थी जिसे आप 'मोइंग द ग्रास स्ट्रैटेजी' नाम दे सकते हैं। इजराइल लगातार इस पर कार्य करता रहा जिसमें रियल टाइम इंटेलिजेंस ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसका सबसे महत्वपूर्ण उदाहरण पेजर बम है, जिसमें लगभग 3000 के आसपास हिजबुल्लाह लड़ाके घायल हुए। इसी रणनीति की बदौलत इजराइल 27 सितंबर को हसन नसरल्लाह का खात्मा करने में कामयाब रहा। इजराइल, हिजबुल्लाह के कमांडरों को खत्म करने के लिए 2006 से काम कर रहा था। जिसमें प्रमुख भूमिका सिग्नल इंटेलिजेंस यूनिट 8200 की रही। उसने हिजबुल्लाह के मोबाइल फोन और अन्य संचार साधनों को पकड़ने के लिए साइबर टूल्स बनाए, सेना और एयरफोर्स को अहम जानकारियां दीं। इसमें अमेरिकी नेशनल सिक्यॉरिटी एजेंसी ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जिसने यूनिट 8200 के साथ ईरान और हिजबुल्लाह की गतिविधियों से जुड़ी अहम सूचनाएं साझा कीं। तभी इजराइल, हिजबुल्लाह के अन्य कमांडरों और नसरल्लाह तक पहुंच सका। ऐसे में क्या सच में मान लेना चाहिए कि दुनिया तीसरे विश्वयुद्ध की तरफ कदम बढ़ा रही है? यदि तीसरा विश्वयुद्ध हुआ अथवा युद्ध का दायरा बढ़ा तो निश्चित ही दुनियाभर में कोहराम मचेगा, महंगाई चरम पर होगी और पर्यावरण खतरे में होगा।

अपराधियों पर योगी की साढ़ेसाती

यादव, मुसलमान या सपा समर्थक जाति के अपराधियों को डकैती डालने की छूट होनी चाहिए? क्या सपा समर्थकों को बलात्कार तथा नकली करेंसी का कारोबार करने छूट होनी चाहिए, समाजवादी लोहिया वाहिनी के राष्ट्रीय सचिव तो नकली करेंसी का धंधा कर करते हुए पकड़े गए हैं।

डा.वीरेंद्र पुष्पक
वरिष्ठ पत्रकार

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के साढ़े सात वर्ष के कार्यकाल में जिस तरह माफिया, गैंगस्टर, बलात्कारियों, हिस्ट्रीशीटरों, डकैतों और कुख्यात, खूंखार व पेशेवर अपराधियों के एनकाउंटर हुए उससे कहा जा रहा है कि यूपी में इस समय अपराधियों पर शनि की साढ़ेसाती नहीं बल्कि योगी की साढ़ेसाती सवार है। लेकिन समाजवादी पार्टी अपराधियों के एनकाउंटर में भी जाति खोज रही है। ऐसे में सवाल यही है कि क्या यादव, मुसलमान या सपा को समर्थन करने वाली बिरादरी के अपराधियों को डकैती डालने की छूट होनी चाहिए? क्या सपा समर्थकों को गरीबों की जमीन कब्जाने, बलात्कार तथा नकली करेंसी का कारोबार करने छूट होनी चाहिए। अब तो सपा नेता नकली करेंसी का धंधा कर देशद्रोह का काम करते हुए भी पकड़े जा रहे हैं। उत्तर प्रदेश के कुशीनगर में पुलिस ने नकली करेंसी का कारोबार करने वाले अंतरराष्ट्रीय गैंग का पर्दाफाश किया तो पता चला कि नकली नोटों के कारोबार का मास्टर माइंड समाजवादी लोहिया वाहिनी का राष्ट्रीय सचिव मोहम्मद रफीक अहमद है, यानी सपा का राष्ट्रीय नेता है। पुलिस ने इसे गिरफ्तार कर लिया है। रफीक अहमद पर जिले के कई थानों पर 11 गंभीर आपराधिक मामले दर्ज हैं। गिरोह के अन्य सदस्य औरंगजेब पर 8 मुकदमे हैं, नौशाद पर 4, परवेज इलाही पर 8, शेख जमालुद्दीन पर 4 मुकदमे हैं और नियाजुद्दीन उर्फ मुन्ना पर कई मुकदमे दर्ज बताए गए हैं। सपा नेता का यह गैंग यूपी-बिहार के सीमावर्ती इलाकों में जाली करेंसी का कारोबार कर रहा था। समाजवादी लोहिया वाहिनी के इस गैंग के तार नेपाल से भी जुड़े हुए हैं। नकली करेंसी का कारोबार करने वाले गैंग के पास से 5.62 लाख की जाली करेंसी, जाली करेंसी से बदले मिली एक लाख 10 हजार रुपये की असली भारतीय मुद्रा, नेपाली करेंसी के 3 हजार रुपये, 10 तमंचे 315 बोर, 30 जिंदा कारतूस, 12 खोखे कारतूस, 4 सुतली देसी बम, 13 मोबाइल फोन आदि बरामद हुआ है। समाजवादी पार्टी के मुखिया अखिलेश यादव और उनकी पत्नी डिंपल यादव का करीबी कन्नौज का सपा नेता और पूर्व ब्लॉक प्रमुख नवाब सिंह यादव नाबालिग से रेप का आरोपी है। अयोध्या में सपा नेता मोईद खान दलित बेटी से महीनों तक गैंग रेप करने का आरोपी है। उत्तर प्रदेश में ही मऊ की रहने वाली महिला का का आरोप है कि समाजवादी पार्टी का पूर्व प्रदेश सचिव वीरेंद्र पाल उसका यौन उत्पीड़न करता रहा है। समाजवादी पार्टी के नेताओं का यह चरित्र बताता है कि विपक्ष में रहते सपा नेता महिलाओं का चीरहरण कर रहे हैं, नकली करेंसी का कारोबार कर रहे हैं वो सत्ता में आए तो प्रदेश और देश को कैसे नरक बना देंगे? अभी तो लोकसभा में 37 सीटें ही मिली हैं, जरा सोचिए।

अखिलेश के कलेजे को ठंड पहुंची होगी

उत्तर प्रदेश के सुल्तानपुर में सर्राफ के यहां डकैती डालने वाले गैंग का सदस्य मंगेश यादव पुलिस मुठभेड़ में मारा जाता है तो अखिलेश यादव एंड कंपनी मातम मनाने लगती है। योगी आदित्यनाथ की पुलिस पर बिना सबूत के फर्जी मुठभेड़ का आरोप लग देती है, लेकिन फर्जी एनकाउंटर के सबूतों के साथ हाईकार्ट या सुप्रीम कोर्ट नहीं जाती। इससे स्पष्ट होता है कि जैसे सपा नेता जाली करेंसी का कारोबार करते हैं वैसे ही पुलिस मुठभेड़ को फर्जी बताने का झूठ जनता के सामने परोसते हैं। सुल्तानपुर में डाका डालने वाले गैंग का सदस्य राजपूत बिरादरी का अनुज प्रताप सिंह पुलिस मुठभेड़ में मारा जाता है तो सपा नेता नया नेरेटिव सैट करते हैं कि मंगेश यादव को एनकाउंटर में मारा था इसलिए राजपूत का एनकाउंटर कर योगी की पुलिस ने जातीय संतुलन बैठाने का काम किया है, क्या ये हास्यस्पद नहीं लगता। पुलिस मुठभेड़ में मारा गया अनुज प्रताप सिंह एक लाख रुपये का इनामी बदमाश था। खैर राजनेताओं का काम राजनीति करना है, लिहाजा वो तो अपराध और अपराधियों के साथ खड़े होने से भी कोई गुरैज नहीं करेंगे? शायद इसलिए सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने एक नया नेरेटिव सैट किया है। अब वो सवाल कर रहे हैं कि अपराधी अगर यादव है या मुसलमान है तो ही उसका एनकाउंटर होता है? दूसरी जाति के अपराधी को पुलिस की गोली क्यों नहीं लगती है? अखिलेश के सवाल कितने जायज और कितने नाजायज है इसका फैसला जनता कर रही है। क्योंकि जब अनुज प्रताप सिंह पुलिस एनकाउंटर मारा गया तब अनुज के पिता के मुंह से एक ही बात निकली वो ये कि 'अब तो अखिलेश यादव के कलेजे को ठंडक पहुंच गई होगी?' अनुज के पिता के ये शब्द बहुत कुछ कहते हैं। अनुज प्रताप सिंह की बहन ने अपने भाई के एनकाउंटर पर सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव को टारगेट करते हुए कहा कि 'उसका भाई राजनीति का शिकार हुआ है। ठाकुरों को मरवाकर अखिलेश यादव के कलेजे को ठंडक मिली होगी।' अनुज प्रताप सिंह अमेठी जिले के मोहनगंज थाना क्षेत्र के जनापुर गांव का रहने वाला था। उन्नाव पुलिस और यूपी एसटीएफ के साथ मुठभेड़ में मारा गया था।

सपा को मातम मनाना है मनाए

योगी आदित्यनाथ को उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री के रूप में काम करते हुए सितंबर में साढ़े सात साल पूरे हुए तो कानून व्यवस्था के सवाल पर उत्तर प्रदेश में कहा जाने लगा कि यूपी के अपराधियों पर योगी की साढ़ेसाती का प्रकोप चल रहा है। क्योंकि एनकाउंटर पर जाति खोजने वाले अखिलेश यादव और उनके स्वर्गीय पिता मुलायम सिंह यादव के शासन में पुलिस को साफ साफ आदेश थे कि यादव और मुस्लिम अपराधियों के खिलाफ पहले तो एइआईआर नहीं होनी चाहिए यदि एफआईआर करना आवश्यक है तो फिर कार्रवाई नहीं होनी चाहिए। इस बात का खुलासा यूपी के पूर्व डीजीपी रहे बृजलाल कर चुके हैं। सपा शासन में कानून व्यवस्था के मुद्दे पर इंडिया टीवी के एक शो में वरिष्ठ पत्रकार प्रदीप सिंह ने भी यही कहा था कि मुलायम सिंह यादव और अखिलेश यादव के शासनकाल में जाति देखकर पुलिस कार्रवाई करती थी। यानी अपराधी मुस्लिम अथवा यादव है तो उनके खिलाफ कोई एक्शन नहीं होता था। अखिलेश यादव शायद इसी मानसिकता से बाहर नहीं निकल पा रहे हैं। इसलिए वो एनकाउंटर में मारे गए बदमाशों की जाति खोज लेते हैं। जबकि सच ये है कि मार्च 2017 में मुख्यमंत्री की शपथ लेने के बाद योगी आदित्यनाथ की प्राथमिकता यूपी की कानून व्यवस्था को सुधारने की थी। इसलिए सपा के शासन में बंधे पुलिस के हाथ खोल दिए गए और नतीजे सामने आने लगे। सिर्फ एनकाउंटर की बात करें तो साढ़े सात साल में यानी 20 मार्च, 2017 से लेकर 5 सितंबर, 2024 के बीच यूपी में 12,964 एनकाउंटर हुए हैं। जिसमें 207 अपराधी एनकाउंटर में मारे गए। इनमें 50 अपराधी 10 हजार से 5 लाख रुपये के इनामी थे। मुठभेड़ में मारे गए अपराधियों में 67 मुस्लिम, 20 ब्राह्मण, 18 ठाकुर, 17 जाट और गुर्जर, 16 यादव, 14 दलित, तीन ट्राइबल, दो सिख, 8 ओबीसी और 42 अन्य जातियों के थे। योगी आदित्यनाथ के साढ़े सात वर्ष के कार्यकाल में यूपी की स्पेशल टास्क फोर्स (एसटीएफ) ने 50 खूंखार अपराधियों को मुठभेड़ में मार गिराया। मुठभेड़ में मारा गया 50वां इनामी खूंखार अपराधी सुल्तानपुर डकैती कांड में शामिल अनुज प्रताप सिंह था। किसी भी मुठभेड़ में यदि कोई अपराधी मारा जाता है तब उसका पोस्टमार्टम

- **सिर्फ एनकाउंटर की बात करें तो साढ़े सात साल में यानी 20 मार्च, 2017 से लेकर 5 सितंबर, 2024 के बीच उत्तर प्रदेश में 12,964 एनकाउंटर हुए हैं, जिसमें 207 अपराधी एनकाउंटर में मारे गए, इनमें 50 अपराधी 10 हजार से 5 लाख रुपये के इनामी थे।**
- **अपराध करने वाले मुस्लिम ज्यादा है तो एक्शन पर उन पर ही होगी, यादव अपराध करेगा तो सजा तो मिलेगी, अखिलेश यादव को जाति खोजनी है तो खोजते रहे, मातम मनाना हे तो मनाते रहे, लेकिन योगी की पुलिस और एसटीएफ अपना काम करती रहेगी।**

चिकित्सकों का पैनल करता है। मैजिस्ट्रेट जांच से लेकर सीबीसीआईडी तक जांच करती है। अगर मुठभेड़ में मारे गए अपराधी के किसी परिजन को संदेह होता है तो उसकी तहरीर पर पुलिस को हत्या का केस दर्ज करना पड़ता है। जिसकी विवेचना सिविल पुलिस नहीं बल्कि सीबीसीआईडी करती है। लिहाजा समाजवादी पार्टी को ज्यादा उछल कूद करने से बचना चाहिए। क्योंकि अपराध करने वाले मुस्लिम ज्यादा है तो एक्शन पर उन पर ही होगी, यादव अपराध करेगा तो सजा तो मिलेगी ही, लेकिन अखिलेश यादव को जाति खोजनी है तो खोजते रहे, मातम मनाना हे तो मनाते रहे, लेकिन योगी आदित्यनाथ की पुलिस और एसटीएफ अपना काम करती रहेगी ऐसी उम्मीद जनता को करनी चाहिए।

यूपी में अपराधों का लेखाजोखा

यूपी के एडीजी एसटीएफ अमिताभ यश का कहना है कि उत्तर प्रदेश की कानून व्यवस्था को और बेहतर बनाने के लिए एसटीएफ ने विभिन्न आपराधिक मामलों में लिप्त 872 बदमाशों को सलाखों के पीछे भेजा है। अवैध नशा तथा हथियार तस्करों सहित 379 साइबर अपराधियों को गिरफ्तार किया। पुलिस और एसटीएफ ने 7,015 कुख्यात और इनामी बदमाशों को गिरफ्तार किया। एडीजी एसटीएफ का कहना है कि प्रदेश में अपराध और अपराधियों पर नकेल कसने के लिए एसटीएफ लगातार अभियान चला रही है। एसटीएफ के एक्टिव रहने से पिछले साढ़े सात वर्षों में 559 से अधिक जनप्रतिनिधि, प्रतिष्ठित व्यक्तियों व आम नागरिकों के अपहरण, लूट, हत्या जैसे अपराधों को रोका गया। 3,970 संगठित अपराधियों को गिरफ्तार किया गया। एसटीएफ ने परीक्षाओं में नकल और पेपर लीक जैसी धांधली को रोकने और जड़ से खत्म करने के लिए 193 गिरोहों के 926 सरगना और साल्वरों के खिलाफ कार्रवाई की। एसटीएफ ने अभियान चलाकर अवैध हथियारों के 189 तस्करों की गिरफ्तारी कर उनके कब्जे से 2,080 अवैध शस्त्र और 8,229 अवैध कारतूस बरामद किए। अवैध नशे के कारोबार में लिप्त 1,082 अभियुक्तों को गिरफ्तार कर उनके पास से 91147.48 किलो गांजा, 2054.651 किलो चरस, 19727.1 किलो डोडा, 7.06 किलो मारफीन, 723.758 किलो स्मैक, 21.521 किलो हेरोइन, 181.012 किलो अफीम व 6.1 किलो ब्राउन शुगर बरामद की। प्रतिबंधित वन्यजीवों का शिकार कर उनकी तस्करी करने वाले गिरोह के 170 सदस्यों को गिरफ्तार कर उनके कब्जे से 341 किलो कछुआ कैलीपी, 2 पैंगोलिन, एक बाघ की खाल, 18 किलो बाघ की हड्डी, दो हाथी दांत, 8011 कछुए, 563.1 किलो लाल चंदन की लकड़ी, 44 हाथी दांत से बनी वस्तुएं, तेंदुए के 25 दांत व 24 नाखून तथा 110 सियार के सींग तथा अन्य वस्तुएं बरामद की हैं। दिल्ली से सटे गौतमबुद्ध नगर साइबर अपराधियों का सबसे बड़ा गढ़ बन गया है। सात वर्षों में यहां से 225 साइबर अपराधियों को दबोचा जा चुका है। लखनऊ से 116 व गाजियाबाद से नौ साइबर अपराधियों को गिरफ्तार किया गया है। इनमें एसजीपीजीआई की एसोसिएट प्रोफेसर को डिजिटल अरेस्ट करके करीब दो करोड़ की ठगी करने वाले गैंग के 16 साइबर अपराधी भी शामिल हैं। उत्तर प्रदेश में सबसे बड़े आनलाइन ठगी करने वाले गिरोह के 105 साइबर अपराधियों को गिरफ्तार किया गया। इसलिए यूपी में कानून व्यवस्था दुरुस्त है।

साजिश

टारगेट पर भारतीय रेल

सरकार और रेलवे को पटरियों के आसपास बनी मजारों की जांच करानी चाहिए यदि ये अवैध और जमीन कब्जाने की नीयत से बनाई गई हैं तो इन्हें ध्वस्त किया जाना चाहिए, इससे रेल पटरी पर मंडराने वाला खतरा कम होगा।

शालिनी चौहान
नई दिल्ली

भारत में लोकसभा चुनाव के बाद अचानक ट्रेन हादसों में तेजी आने लगी। लिहाजा हर किसी के जहन में एक सवाल तो आएगा ही कि क्या ये सच में हादसे हैं अथवा कोई खतरनाक षडयंत्र है। क्योंकि अगस्त और सितंबर में उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल, असम, राजस्थान, पंजाब, मध्य प्रदेश और झारखंड में पेसेंजर और गुड्स ट्रेनों को डिरेल करने की कोशिश हुई। ये घटनाएं महज संयोग नहीं, बल्कि किसी बड़ी साजिश का प्रयोग हैं। आखिर इनके पीछे कौन है? क्या पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी आईएसआई के आतंकी अथवा कट्टरपंथी इन घटनाओं के पीछे है? क्योंकि 18 सितंबर को मध्य प्रदेश के बुरहानपुर में सेना के जवानों को ले जा रही ट्रेन में विस्फोट की कोशिश की गई थी। बुरहानपुर के नेपानगर में रेलवे ट्रैक पर डेटोनेटर बिछाए गए। हालांकि ट्रेन के पहुंचने से पहले ही कुछ डेटोनेटर फूट गए। इससे रेलवे अधिकारी अलर्ट हो गए और स्टेशन पर ट्रेन रुकवा दी। पंजाब के बठिंडा में रेलवे ट्रैक पर सरियों का बंडल रख दिया गया। इसे देखकर मालगाड़ी के लोको पायलट ने इमरजेंसी ब्रेक लगा दिया, जिससे हादसा टल गया। यूपी के कानपुर में प्रेमपुर स्टेशन के पास ट्रैक पर एक छोटा गैस सिलेंडर रखा मिला। गुड्स ट्रेन के लोको पायलट ने सिलेंडर देखते ही इमरजेंसी ब्रेक लगाकर ट्रेन को 10 फीट पहले ही रोक लिया। इससे पहले सात सितंबर को कानपुर में एक बड़ा रेल हादसा होने से बच गया था। यहां बिल्हौर रेलवे स्टेशन के नजदीक रेल लाइन पर रखे गैस से भरे रसोई गैस सिलेंडर से कालिंदी एक्सप्रेस ट्रेन टकराई। हालांकि ट्रेन के लोको पायलट की सूझबूझ से बड़ा हादसा होने से टल गया है। यह कालिंदी एक्सप्रेस सात सितंबर को प्रयागराज से कानपुर होते हुए भिवानी जा रही थी। ट्रेन के लोको पायलट की सूचना पर जीआरपी और आरपीएफ के अधिकारी मौके पर पहुंचे तो जांच के दौरान रेल लाइन के पास ही एक झोले में माचिस, बारूद और कांच की बोतल में पेट्रोल मिला। इससे साफ हो जाता है कि अराजक तत्व कालिंदी एक्सप्रेस को आग के हवाले करना चाहते थे। ताकि जन-धन को जबरदस्त हानि पहुंचाई जा सके। जिसने भी इस घटना की साजिश रची उसे पता था कि जैसे ही ट्रेन का इंजन गैस से भरे सिलेंडर से टकराएगा चिंगारी निकलेगी और गैस की आग दूर तक फैल जाएगी। इस तरहपूरी ट्रेन आग को आग के हवाले करने की साजिश रची गई थी।

यह कोई पहला मौका नहीं था जब कानपुर में बड़ा रेल हादसा होने से टल गया हो। इससे पहले 17 अगस्त को कानपुर में ही गोविंदपुरी रेलवे स्टेशन के पास वाराणसी से अहमदाबाद जा रही साबरमती एक्सप्रेस ट्रेन डिरेल हो गई थी। इस ट्रेन के 22 डिब्बे पटरी से उतर गए थे। रेलवे अधिकारियों ने तब कहा था कि बोल्डर टकराने के कारण ये ट्रेन डिरेल हुई। इस हादसे में भी साजिश की आशंका जताई गई थी। 20 अगस्त को अलीगढ़ में रेलवे ट्रैक पर अलॉय व्हील्स रखे गए थे। 27 अगस्त को फर्रूखाबाद में रेल पटरी पर लकड़ी के बड़े-बड़े बोल्डर रखे गए। 23 अगस्त को राजस्थान के पाली में रेलवे ट्रैक पर सीमेंट के 70-70 किलो वजन के पत्थर रखकर वंदे भारत एक्सप्रेस को डिरेल करने की कोशिश हुई। पश्चिम बंगाल, असम और झारखंड में छह से ज्यादा ट्रेनों के पटरी से उतरने की घटनाएं हुई। ये सब घटनाएं न तो शरारत है, न संयोग है, ये खतरनाक साजिश के तहत किए जा रहे प्रयोग हैं। हर जगह रेल लाइन पर एक जैसे अवरोध पैदा किए गए। इससे साफ पता चलता है कि ये बड़े रेल हादसे कराने की कोशिश है। क्योंकि नरेंद्र मोदी सरकार आने के बाद रेलवे में अच्छा काम हुआ है, जिससे सरकार की छवि बेहतर हुई है। रेलवे में हुआ बदलाव लोगों को नजर भी आता है, इसलिए बहुत सोच-समझकर रेलवे के खिलाफ खतरनाक षडयंत्र रचे जा रहे हैं। इसके पीछे कौन हैं, ये पता लगाना सुरक्षा एजेंसियों के लिए बड़ी चुनौती है।

संभव है रेल लाइन के किनारे झुग्गी झोपड़ियों में आतंकी स्लीपिंग मॉड्यूल रह रहे हों, सोशल मीडिया पर बहुत सी वीडियो वायरल होती रहती है जिसमें किशोर रेल लाइनों के साथ छेड़छाड़ करते देखे जा सकते हैं, एक वीडियो में तो किशोर रेल लाइन के नट-बोल्ट खोलते दिखाई दे रहे हैं।

रेल लाइन किनारे झग्गी बस्ती?

रेल लाइनों के किनारे बहुत सारी मजारे बनी हैं। सवाल ये है कि क्या बड़ी संख्या में पीर और फकीर रेल लाइन के किनारे ही दफन किए गए थे? फिर सवाल ये भी कि देवबंदी विचारधारा वाले मौलाना मुस्लिम समाज को दरगाहों और मजारों पर सजदा करने से मना करते हैं। जबकि बरेलवी विचारधारा वाले मुस्लिम मजारों और दरगाह पर सजदा करते हैं। यानी मुस्लिम समाज के दो फिरको, देवबंदी और बरेलवी ही मजरों को लेकर एक नहीं है, लिहाजा सरकार और रेलवे को पटरियों के आसपास बनी मजारों की जांच करानी चाहिए यदि ये अवैध और जमीन कब्जाने की नीयत से बनाई गई हैं तो इन्हें ध्वस्त किया जाना चाहिए, इससे रेल पटरी पर मंडराने वाला खतरा कम होगा। कानपुर में बिल्हौर रेलवे स्टेशन के नजदीक जहां रेल लाइन पर रखे रसोई गैस सिलेंडर से कालिंदी एक्सप्रेस ट्रेन टकराई उसके पास में भी मजार है। रोहिंग्या हों या घुसपैठिये जिन्हें कहीं जगह न मिलती हो वो रेल लाइन के किनारे झुग्गी झोपड़ी बनाकर आजादी के साथ रहने लगते हैं। संभव है कि इन्हीं झुग्गी झोपड़ियों में आतंकी स्लीपिंग मॉड्यूल रह रहे हों। सोशल मीडिया पर बहुत सी वीडियो वायरल होती रहती है जिसमें किशोर रेल लाइनों के साथ छेड़छाड़ करते देखे जा सकते हैं। एक वीडियो में तो किशोर रेल लाइन के नट-बोल्ट खोलते दिखाई दे रहे थे। चूंकि इस काम में नाबालिगों का उपयोग किया जा रहा है इसलिए कोई ध्यान भी नहीं देता, लेकिन साजिश बहुत खतरनाक होती है। रेल लाइन के किनारे झुग्गी में रहने वाले किशोर थोड़े से पैसों के लालच में कुछ भी कर सकते हैं। क्योंकि भारतीय रेल नेटवर्क दुनिया का सबसे बड़ा नेटवर्क है। उतना ही सच ये भी है कि भारत की सबसे ज्यादा अवैध बस्तियां रेलवे की जमीन पर ही बसीं हुई हैं, इन बस्तियों में अधिकांश रोहिंग्या और संदिग्ध आचरण वाले लोग रहते हैं। लिहाजा रेलवे को अभियान चलाकर अवैध बस्तियों को हटाना चाहिए वरना भारतीय रेल को बहुत बड़ा नुकसान हो सकता है। भारत में भले ही रेल हादसे कराकर जन-धन की हानि पहुंचाने की कोशिश हो रही हैं, लेकिन विपक्ष इसमें भी राजनीति कर रहा है। विपक्षी दल इसे मोदी सरकार और रेल मंत्री की नाकामी बता रहा है। लेकिन साजिश रचने वालों के खिलाफ एक भी शब्द विपक्ष के मुंह से क्यों नहीं निकल रहा है? इससे क्या ये समझा जाए कि षडयंत्रकारियों को विपक्ष का मौन समर्थन है? वैसे भी विपक्ष खासकर कांग्रेस लोकसभा में 99 सीटें पाकर अपनी बड़ी जीत और 240 सीटें हासिल करने वाली भाजपा की बड़ी हार मान रही है, इसलिए विपक्षी खेमा सरकार को नाकाम साबित करने की मुहिम चला रहा है, भले ही इससे देश को या देश की रेल जैसी संस्था को बड़ा नुकसान ही क्यों न हो पहुंचे।

पाकिस्तान की साजिश

पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी आईएसआई के इशारे पर आतंकियों के स्लीपिंग मॉड्यूल भारत में बड़ी रेल दुर्घटना की साजिश रच रहे हैं। इस बात की पुष्टि पाकिस्तान के आतंकवादी फरहतुल्लाह गोरी के वीडियो मैसेज से होती है। वीडियो के जरिए आतंकवादी फरहतुल्लाह गोरी ने संदेश दिया है कि भारत के बड़े नेताओं को निशाना बनाया जाए। 12 मिनट के वीडियो में अपराधियों पर चलने वाले बुलडोजर की भी गूंज दिखाई दे रही है। इस वीडियो के बाद राजस्थान में वंदे भारत ट्रेन को पटरी से उतारने की कोशिश की गई। इससे पहले उत्तर प्रदेश में दो रेल गाड़ियों को पटरी से उतारने का प्रयास किया गया। महज 15 दिन के भीतर तीन रेल गाड़ियों को डिरेल करने की कोशिश हुई। जांच एजेंसियों ने जांच शुरू की तो पता चला कि पाकिस्तान का कुख्यात आतंकवादी फरहतुल्लाह गोरी अपने वीडियो संदेश के जरिए आतंकवादी स्लीपिंग मॉड्यूल को भारत की अर्थ व्यवस्था और सप्लाई चैन को निशाना बनाने की बात कहते हुए रेलवे लाइन को नुकसान पहुंचाने के लिए उकसा रहा है। सुरक्षा एजेंसियों का मानना है कि फरहतुल्लाह गोरी का यह वीडियो संदेश पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी आईएसआई के इशारे पर तैयार कराया गया और उसे बाकायदा सोशल मीडिया पर सर्कुलेट कराया गया। इस वीडियो में फरहतुल्लाह गोरी भारत के खिलाफ जहर उगल रहा है और भारत के एक वर्ग विशेष के युवाओं को बरगलाने की पूरी कोशिश कर रहा है। गोरी अपने वीडियो में कहता है कि केवल हथियार उठाना ही जरूरी नहीं है बल्कि अन्य तरीकों से भी भारत को नुकसान पहुंचाया जा सकता है। इस वीडियो में स्पष्ट रूप से रेल की पटरियां और पटरी पर चाकू लेकर चलते एक युवक को दिखाया गया है। इसके अलावा इस वीडियो में अनेक जगहों पर पुल और रेल पटरी के अलावा अनेक

- **कुख्यात आतंकवादी फरहतुल्लाह गोरी के वीडियो में एक आदमी पिस्टल में गोलियां भरते हुए भी दिखता है। गोरी कहता है कि जरूर नहीं कि आप हथियार उठाओ बल्कि आप अपने विशेष दस्ते बनाओ, फिर दस्ते में नए जुड़ने वालों का ब्रेनवाश करके उन्हें अपने काम में लो।**
- **18 सितंबर को एमपी के बुरहानपुर में सेना के जवानों को ले जा रही ट्रेन में विस्फोट की कोशिश हुई, बुरहानपुर के नेपानगर में रेलवे ट्रैक पर डेटोनेटर बिछाए गए, जो ट्रेन पहुंचने से पहले ही फूटने लगे लिहाजा रेलवे अधिकारी अलर्ट हो गए और स्टेशन पर ट्रेन रुकवा दी।**

सप्लाई चैन भी दिखाई गई है जहां से ईंधन वगैरह आता-जाता है।

आतंकी का वीडियो संदेश

कुख्यात आतंकवादी फरहतुल्लाह गोरी के वीडियो में एक आदमी पिस्टल में गोलियां भरते हुए भी दिखता है। गोरी कहता है कि जरूर नहीं कि आप हथियार उठाओ बल्कि आप अपने विशेष दस्ते बनाओ, फिर दस्ते में नए जुड़ने वालों का ब्रेनवाश करके उन्हें अपने काम में लो। हर दस्ते अपने तरीके से काम करें जिससे जांच एजेंसियां उन तक ना पहुंच पाए। फरहतुल्लाह गोरी कहता है कि भारत सरकार ने अपनी जांच एजेंसी नेशनल इंवेस्टीगेशन एजेंसी (एनआईए) और ईडी के जरिए हमारे लोगों की जायदाद प्रॉपर्टी जब्त की हैं। बैंक खाते सीज किए हैं और हमारी प्रॉपर्टी पर बाकायदा बुलडोजर चलाया जा रहा है। ऐसे में जरूरी है कि भारत सरकार को मुंहतोड़ जवाब दिया जाए। इस मुंहतोड़ जवाब के जरिए उनके लीडरों को निशाना बनाया जाए अर्थव्यवस्था और सप्लाई चैन को निशाना बनाया जाए रेलवे लाइन को टारगेट किया जाए। युवाओं को भड़काते हुए फरहतुल्लाह गोरी कहता है कि पहले आपको खुद खड़ा होना पड़ेगा उसके बाद अरब और अज्म के दस्ते आपका साथ देने के लिए तैयार है, लेकिन पहले तैयारी आपको खुद करनी है। खुफिया एजेंसी का मानना है कि इसके पहले भी पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी ने अपने ओवर ग्राउंड वर्कर को कई बार पंजाब, उत्तर प्रदेश और जम्मू में रेल पटरियों को निशाना बनाने के निर्देश दिए थे, लेकिन फरहतुल्लाह गोरी का वीडियो आने के बाद अब इस मामले में साफ हो गया है कि इस पूरी साजिश के पीछे पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी है। इसलिए आने वाले दिनों में इस तरह की कुछ और वारदात भी हो सकती हैं। फरहतुल्लाह गोरी को 2002 में गुजरात में हुए अक्षरधाम मंदिर हमले का मास्टरमाइंड भी माना जाता है। वह भारत में कई बड़ी वारदातों में शामिल रहा है। भारत में उसके स्लीपिंग मॉड्यूल पकड़े भी गए हैं। फिलहाल सुरक्षा और खुफिया एजेंसी पता लगाने में जुटी है कि फरहतुल्लाह गोरी के संपर्क में कौन-कौन लोग हैं। ●

चिंता

महाप्रसाद में महापाप

जांच रिपोर्ट में प्रसादम लड्डू में सोयाबीन, सूरजमुखी, जैतून, रेपसीड, अलसी, गेहूं के बीज, मक्का के बीज, कपास के बीज, मछली का तेल, नारियल और पाम कर्नेल वसा, पाम तेल और बीफ टेलो (गौमांस की चर्बी), लार्ड (सुअर के अंश) शामिल हैं।

बाबू सिंह
वरिष्ठ पत्रकार

आंध्र प्रदेश के तिरुपति बालाजी मंदिर के प्रसाद (लड्डुओं) में मछली का तेल और जानवरों की चर्बी की मिलावट की खबर आते ही हिंदुओं की आस्था, विश्वास और श्रद्धा को गहरा आघात पहुंचा है। यह घृणित कृत्य देश के 100 करोड़ से ज्यादा हिंदुओं का धर्म भ्रष्ट करने का है। लेकिन धर्म से जुड़े इस मामले पर भी सियासत हो रही है। क्योंकि तमिलनाडु के डिंडीगुल स्थित एआर डेयरी फूड्स के जिस 320 रुपये प्रति किलों के सस्ते और घटिया देसी घी से तिरुपति बालाजी मंदिर की रसोई में लड्डू बनते थे उसमें मछली का तेल और जानवरों की चर्बी होने की पुष्टि लैब की जांच रिपोर्ट में हो चुकि है। हैरान करने वाली बात ये है कि यही प्रसाद तिरुपति वेंकटेश्वर मंदिर में भगवान विष्णु के स्वरूप श्री वेंकटेश्वर स्वामी को चढ़ाया जा रहा था। इस सनसनीखेज खुलासे के बाद से पूरे देश के संतों और सनातनियों में गुस्सा और नाराजगी है। संत समाज ने तत्काल प्रभाव से तिरुमाला तिरुपति देवस्थानम (टीटीडी) को भंग करने और दोषियों को छह माह के भीतर फांसी देने की मांग कर दी है। क्योंकि यह घृणित और राक्षसी कार्य सीधे करोड़ों श्रद्धालुओं की आस्था और विश्वास से जुड़ा है। आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू ने इसी साल हुए विधानसभा चुनाव से पहले दावा किया था कि तिरुपति बालाजी मंदिर में श्रद्धालुओं को मिलने वाले प्रसाद में घी की जगह जानवरों की चर्बी और मछली के तेल का इस्तेमाल किया जा रहा था। इतेफाक से इस चुनाव में जगन मोहन रेड्डी की पार्टी वाईएसआरसीपी चुनाव हार गई और भाजपा गठबंधन एनडीए में शामिल चंद्र बाबू नायडू ने जीत हासिल कर सत्ता संभाली थी। चंद्रबाबू नायडू के मुख्यमंत्री बनने के बाद जून 2024 में सीनियर आईएएस अधिकारी जे श्यामला राव को तिरुमाला तिरुपति देवस्थानम का नया एक्जीक्यूटिव ऑफिसर अपॉइंट किया था। उन्होंने प्रसादम (लड्डू) की क्वॉलिटी की जांच का आदेश दिया। इसके लिए एक कमेटी बनाई। प्रसाद के टेस्ट और क्वॉलिटी को बेहतर बनाने के लिए कमेटी ने कई सुझाव दिए। साथ ही घी की जांच के लिए नेशनल डेयरी डेवलपमेंट बोर्ड, गुजरात में सैंपल भेजे गए। 9 जुलाई को घी के सैंपल भेजे और 16 जुलाई को रिपोर्ट आई। रिपोर्ट में खुलासा हुआ कि जिस देसी घी से प्रसाद के लड्डू बनाए जा रहे हैं उसमें जानवरों की चर्बी और मछली के तेल की मिलावट है। जांच में पाया गया कि लड्डुओं में जो घी का इस्तेमाल हो रहा है उसमें मछली के तेल, एनिमल टैलो और लार्ड की मात्रा पाई गई है। एनिमल टैलो का मतलब पशु में मौजूद फैट से होता है। इसमें लार्ड भी मिला हुआ है। लार्ड का मतलब जानवरों की चर्बी से होता है। इसी घी में फिश ऑयल की मात्रा भी पाई गई। रिपोर्ट में स्पष्ट कहा गया है कि प्रसादम लड्डू में सोयाबीन, सूरजमुखी, जैतून, रेपसीड, अलसी, गेहूं के बीज, मक्का के बीज, कपास के बीज, मछली का तेल, नारियल और पाम कर्नेल वसा, पाम तेल और बीफ टेलो (गौमांस की चर्बी), लार्ड (सुअर के अंश) शामिल हैं।

श्रद्धालुओं की आस्था पर सियासत

आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री टीडीपी प्रमुख चंद्रबाबू नायडू ने पिछली वाईएसआरसीपी के जगन मोहन रेड्डी की सरकार पर आरोप लगाते हुए कहा कि प्रसाद में घी की जगह जानवरों की चर्बी और घटिया क्वालिटी का सामान इस्तेमाल किया जाता रहा है। हमने ये सुनिश्चित किया कि प्रसाद में असली घी, साफ-सफाई और अच्छी क्वॉलिटी का ध्यान रखा जाए। आंध्र प्रदेश में सत्तारूढ़ तेलुगु देशम पार्टी (टीडीपी) के प्रवक्ता अनम वेंकट रमण रेड्डी ने मीडिया को लैब की रिपोर्ट दिखाई, जिसमें दिए गए घी के नमूने में गाय की चर्बी की मौजूदगी की पुष्टि की गई थी। लैब रिपोर्ट में नमूनों में लार्ड (सूअर की चर्बी से संबंधित) और मछली के तेल की मौजूदगी का भी दावा किया गया है। गुजरात के राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड के पशुधन और खाद्य विश्लेषण और अध्ययन केंद्र की प्रयोगशाला की रिपोर्ट से पता चला कि वाईएसआरसीपी के सत्ता में रहने के दौरान प्रसिद्ध तिरुपति बालाजी में लड्डू बनाने के लिए इस्तेमाल किए गए घी में पशु वसा की मौजूदगी थी। सरकार द्वारा घेरे जाने पर पूर्व सीएम जगन मोहन रेड्डी ने इस आरोप को खारिज करते हुए कहा कि मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू का बयान दुर्भावनापूर्ण है। भक्तों की आस्था को मजबूत करने के लिए मैं और मेरा परिवार तिरुमाला प्रसाद के मामले में शपथ तक लेने के लिए तैयार हैं। क्या चंद्रबाबू भी अपने परिवार के साथ शपथ लेने के लिए तैयार हैं? कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और राज्यसभा सांसद वाईवी सुब्बा रेड्डी ने सीएम चंद्रबाबू नायडू पर तिरुमाला मंदिर की पवित्रता को नुकसान पहुंचाने का आरोप लगया है। उन्होंने सोशल मीडिया पर लिखा कि चंद्रबाबू नायडू ने तिरुमाला की पवित्रता और करोड़ों हिंदुओं की आस्था को नुकसान पहुंचाया है। तिरुमाला प्रसाद के बारे में उनकी टिप्पणियां बेहद दुर्भावनापूर्ण हैं। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री जेपी नड्डा ने पूरे मामले की फूड सेफ्टी एंड स्टैंडर्ड अथॉरिटी ऑफ इंडिया (एफएसएसएआई) से जांच कराकर उचित कार्रवाई का भरोसा दिया है। जबकि उपभोक्ता मामले, खाद्य व सार्वजनिक वितरण मंत्री प्रह्लाद जोशी ने पूरी गहराई से जांच और दोषियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जरूरत बताई है। तिरुमाला तिरुपति देवस्थानम का दावा है कि लैब की रिपोर्ट में मिलावट की कोई आधिकारिक पुष्टि नहीं की गई। इस मामले में तिरुमाला तिरुपति मंदिर के पूर्व मुख्य पुजारी रमण दीक्षाथलु ने कहा, मैंने कई साल पहले तिरुपति बालाजी में प्रसाद के लिए बनाए जाने वाले लड्डूओं के घी में मिलावट के बारे में देखा और संबंधित अधिकारियों तथा देवस्थानम के प्रमुख से शिकायत की लेकिन इस पर ध्यान नहीं दिया। पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने वाराणसी में कहा- कि मेरे कुछ सहयोगी बाबा विश्वनाथ धाम गए थे। उन्होंने मुझे बाबा का प्रसादम दिया, तो मेरे मन में तिरुमाला की घटना याद आई। मेरा मन थोड़ा खटका। हर तीर्थ स्थल में ऐसी घटिया मिलावट हो सकती है। हिंदू धर्म के अनुसार ये बहुत बड़ा पाप है। इसकी ढंग से जांच हो।

पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने वाराणसी में कहा- कि मेरे कुछ सहयोगी बाबा विश्वनाथ धाम गए थे, उन्होंने मुझे बाबा का प्रसादम दिया, तो मेरे मन में तिरुमाला की घटना याद आई, मेरा मन थोड़ा खटका, क्योंकि हर तीर्थ स्थल में ऐसी घटिया मिलावट हो सकती है।

तिरुपति के सामने विज्ञान भी फेल

दक्षिण भारत का तिरुपति बालाजी मंदिर उन चमत्कारी और रहस्यमयी मंदिर में से एक है जिसके रहस्यों का वैज्ञानिक भी पता नहीं लगा पाए हैं। आंध्र प्रदेश के चित्तूर जिले में तिरुमला पर्वत पर स्थित यह मंदिर दुनिया भर में मशहूर है। भगवान विष्णु को समर्पित यह मंदिर भारतीय वास्तुकला और शिल्पकला का उत्कृष्ट उदाहरण है। भगवान तिरुपति बालाजी का वास्तविक नाम श्री वेंकटेश्वर स्वामी है जो स्वयं भगवान विष्णु हैं। धार्मिक मान्यता है कि भगवान श्री वेंकटेश्वर अपनी पत्नी पद्मावती के साथ तिरुमला में निवास करते हैं। लोकमान्यता है कि जो भी श्रद्धालु सच्चे मन से भगवान वेंकटेश्वर के सामने प्रार्थना करते हैं, उनकी सभी मनोकामनाएं पूरी होती हैं। बहुत से श्रद्धालु यहां आकर तिरुपति मंदिर परिसर में अपने बाल दान करते हैं। तिरुपति बालाजी मंदिर जाने वाले श्रद्धालु बताते हैं कि भगवान वेंकटेश्वर स्वामी की मूर्ति पर असली बाल हैं। इन बालों की खासियत ये है कि ये कभी भी उलझते नहीं हैं और हमेशा मुलायम रहते हैं। जब आप मंदिर के गर्भ गृह में प्रवेश करेंगे तो ऐसा महसूस होगा कि भगवान श्री वेंकेटेश्वर की मूर्ति गर्भ गृह के मध्य में है, लेकिन आप जैसे ही गर्भगृह के बाहर आएंगे

- **तमिलनाडु के डिंडीगुल स्थित एआर डेयरी फूड्स के जिस 320 रुपये प्रति किलों के सस्ते और घटिया देसी घी से तिरुपति बालाजी मंदिर की रसोई में लड्डू बनते थे उसमें मछली का तेल और जानवरों की चर्बी होने की पुष्टि लैब की जांच रिपोर्ट में हुई है।**
- **चंद्रबाबू नायडू ने मुख्यमंत्री बनने के बाद जून 2024 में सीनियर आईएएस अधिकारी जे श्यामला राव को तिरुमाला तिरुपति देवस्थानम का नया एक्जीक्यूटिव ऑफिसर अपॉइंट किया था, उन्होंने प्रसादम (लड्डू) की क्वॉलिटी की जांच का आदेश दिया था।**

तो चौंक जाएंगे, क्योंकि बाहर आकर ऐसा प्रतीत होता है कि भगवान की मूर्ति दाहिनी तरफ स्थित है। अब यह सिर्फ भ्रम है या कोई भगवान का चमत्कार इसका पता आज तक कोई नहीं लगा पाया है। वेंकेटेश्वर भगवान के इस रूप में मां लक्ष्मी भी समाहित हैं जिसकी वजह से श्री वेंकटेश्वर स्वामी को स्त्री और पुरुष दोनों के वस्त्र पहनाने की परंपरा है। तिरुपति बाला जी मंदिर में भगवान वेंकटेश्वर की मूर्ति विशेष पत्थर से बनी अलौकिक मूर्ति है। यह मूर्ति इतनी जीवंत है कि हर किसी को महसूस होता है कि जैसे भगवान विष्णु स्वयं यहां विराजमान हैं। भगवान की प्रतिमा को पसीना आता है, पसीने की बूंदें देखी जा सकती हैं।

बिना घी और तेल के जलता है दीपक

इस मंदिर की सबसे बड़ी खासियत ये है कि हर गुरुवार को जब भगवान श्री वेंकेटेश्वर का श्रृंगार हटाकर स्नान कराकर चंदन का लेप लगाया जाता है और जब इस लेप को हटाया जाता है तो भगवान वेंकटश्वर के हृदय में माता लक्ष्मी जी की आकृति दिखाई देती है। इस अद्भुत रहस्य की गुत्थी आज तक नहीं सुलझी है। श्री वेंकेटेश्वर स्वामी मंदिर में एक दीया हमेशा जलता है, लेकिन चौंकाने और हैरान करने वाली बात ये है कि इस दीपक में न तो कभी तेल या घी डाला जाता। न ही इसमें कोई दूसरा ज्वलनशील पदार्थ डाला जाता है फिर भी यह हमेशा जलता है, यहां तक कि यह भी पता नहीं है कि यह दीपक सबसे पहले किसने और कब प्रज्वलित किया था। श्री वेंकेटेश्वर स्वामी मंदिर से 23 किलोमीटर की दूरी पर स्थित गांव में वहां के निवासियों के अलावा कोई बाहरी व्यक्ति प्रवेश नहीं कर सकता। इस गांव के लोग अनुशासित हैं और धार्मिक नियमों का पालन करते हैं। मंदिर में चढ़ाए जाने वाले फल, फूल, दही, घी, दूध, मक्खन आदि इसी गांव से आते हैं। इस मंदिर में हर साल तीन करोड़ से अधिक श्रद्धालु दर्शन के लिए आते हैं, यानी रोजाना करीब 82 हजार श्रद्धालु भगवान वेंकटेश्वर स्वामी के दर्शन करते हैं। प्रसाद के रूप में करीब 3.50 लाख लड्डू हर रोज तैयार किए जाते हैं। श्रद्धालुओं को प्रसाद के रूप में मंदिर की रसोई में पूरी शुद्धता के साथ बनाए गए लड्डू दिए जाते हैं। लड्डू सरकार द्वारा बनाई गई कमेटी तिरुमाला तिरुपति देवस्थानम बनवाती है जिससे हर साल 500 करोड़ रुपये की आय होती है। इस कमेटी का हर दो साल में राज्य सरकार द्वारा पुर्नगठन किया जाता है, कमेटी में धार्मिक लोगों के साथ सरकारी अधिकारी भी होते हैं। यही कमेटी प्रसाद के लड्डू बनाने की सामग्री खरीदती है।

लेकिन प्रसाद के लड्डुओं में मिलावट की खबर निश्चित तौर पर आस्थावान हिंदुओं को बहुत चोट पहुंचाने वाली है। जो हिंदू मांस-मछली खाते हैं वो भी ऐसा मिलावटी प्रसाद खाना या किसी को खिलाना पसंद नहीं करते। यहां तक कि बहुत सारे धार्मिक शहरों में मांस मछली और मदिरा की बिक्री तक पर रोक है। बहुत से ऐसे हिंदू परिवार हैं जो बर्थ-डे केक लेते समय भी दुकानदार से पूछते हैं उसमें अंडा तो नहीं है। देश में हिंदुओं का एक वर्ग ऐसा है जो निरामिस भोजन ही करते हैं। वो किसी भी तरह से मांस नहीं खाते। ऐसे भी बहुत सारे लोग है जो उस दुकान से कोई सामान नहीं खरीदते जहां अंडे बिकते हैं। लिहाजा ये घटनाक्रम ऐसे लोगों के लिए बहुत अधिक कष्टप्रद है जिन्होंने प्रसाद के तौर पर जानवरों की चर्बी से बने लड्डू खाए अथवा प्रसाद के रूप में दूसरों को खिलाए हैं। क्योंकि उन्होंने ये मिलावटी लड्डू श्रद्धा के साथ खाए होंगे। बहरहाल ये मसला बहुसंख्यक समाज की आस्था से जुड़ा हुआ है लिहाजा इसकी संवेदनशीला को समझना होगा और दोषियों के विरुद्ध कठोर कानूनी कार्रवाई करनी होगी।

कांग्रेस के हिंदू विरोधी होने के दस सबूत

राहुल गांधी के बयानों की पाकिस्तानी मीडिया भी निंदा कर रही है, अमेरिका में रहने वाले पाकिस्तान मूल के पत्रकार साजिद तरार ने तो यहां तक कहा कि इनका सरनेम गांधी न होता तो ये कहीं छोले बेच रहे होते, वो भारत के जम्हूरियत के बारे में जो स्टेटमेंट दे रहे हैं वो भारत की छवि को डेमेज करने वाले हैं।

देश की सबसे बूढ़ी पार्टी कांग्रेस क्या सच में हिंदू विरोधी है? इसका प्रमाणित जवाब हां हो सकता है, क्योंकि कांग्रेस के हिंदू विरोधी होने के दस प्रमाण आपके सामने हैं। पहला सबूत पंडित जवाहर लाल नेहरू ने इस्लामिक देश पाकिस्तान बनाया मुसलमानों के लिए, इंदिरा गांधी ने बांग्लादेश बनाया मुसलमानों के लिए, जम्मू-कश्मीर में अनुच्छेद 370 और धारा 25 लागू की मुसलमानों के लिए। अल्पसंख्यक बिल लाया गया मुसलमानों के लिए, मुस्लिम पर्सनल ला बोर्ड बनाया मुसलमानों के लिए, अल्पसंख्यक मंत्रालय बनाया गया मुसलमानों के लिए वक्फ बोर्ड बनाया गया मुसलमानों के लिए, अल्पसंख्यक विश्वविद्यालय बनाए गए मुसलमानों के लिए। देश का बंटवारा धार्मिक आधार पर हुआ मुसलमानों के लिए, प्लेस आफ वर्सिप एक्ट लाया गया मुसलमानों के लिए। एंटी कम्युनल वाइलेंस बिल संसद में दो बार पेश किया मुसलमानों के लिए जिसे भाजपा ने पास नहीं होने दिया। अगर ये बिल पास हो गया होता तो हिंदुओं को खत्म करने में कांग्रेस को सिर्फ दस साल लगते। हिंदुओं को खत्म करने के लिए 2013 में कांग्रेस की डा.मनमोहन सिंह सरकार ने वक्फ बोर्ड में खतरनाक संशोधन किया। जिससे वक्फ बोर्ड इतना ताकतवर बन गया कि वो किसी भी हिंदू की संपत्ति को आसानी से कब्जा सके। यह एक तरह से कांग्रेस की देश को धर्मनिरपेक्षता के नाम पर इस्लामिक देश बनाने की तैयारी नहीं तो और क्या है? हिंदुओं को बांटने के लिए आरक्षण की व्यवस्था भी कांग्रेस ने की ताकि हिंदू आपस में ही बंटे रहे। हिंदुओं को दोयम दर्जे का नागरिक बनाने के लिए हिंदू कोड बिल भी कांग्रेस की देन है। हिंदुओं के बड़े मंदिरों पर सरकार का नियंत्रण, लेकिन दिल्ली की सबसे बड़ी जामा मस्जिद सहित देश भर की एक भी मस्जिद, चर्च, गुरुद्वारे पर सरकार का नियंत्रण नहीं है। यानी हिंदुओं द्वारा मंदिरों में किए जाने वाले दान के पैसे पर सरकार का अधिकार और मस्जिद को मिलने वाले दान पर मुसलमानों का हक। यानी इस्लाम के नाम पर बने पाकिस्तान में मुसलमान ताकतवर और हिंदुस्तान में भी मुलसमानों को ताकतवर बनाने का काम सिर्फ और सिर्फ कांग्रेस ने किया।

राहुल गांधी ब्रह्मांड के इकलौते नेता हैं जो विदेशों में एंटी भारत बयान देकर भारतीयों को जलील करते हैं, भारतीय संवैधानिक संस्थाओं का अपमान करते हैं, भारत के लोकतंत्र को दुनिया के सर्वमान्य नेता नरेंद्र मोदी से खतरा बताते हैं, धर्म के नाम पर भारत को बांटने की कोशिश करते हैं।

अतुल सिन्हा
टीवी जर्नलिस्ट

पाकिस्तान में राहुल के बयान की निंदा

कांग्रेस ने सिर्फ तोड़ने की राजनीति की है। पंडित जवाहरलाल नेहरू, इंदिरा गांधी, राजीव गांधी और अब राहुल गांधी देश को तोड़ने की खानदानी विरासत और सियासत को आगे बढ़ा रहे हैं। राहुल गांधी विश्व में ही बल्कि ब्रह्मांड के इकलौते ऐसे नेता हैं जो विदेशों में एंटी भारत बयान देकर भारत और भारतीयों को जलील करते हैं। भारत और भारतवासियों की तोहीन करते हैं। भारतीय संवैधानिक संस्थाओं का अपमान करते हैं, भारत के लोकतंत्र को दुनिया के सर्वमान्य और ताकतवर नेता नरेंद्र मोदी से खतरा बताते हैं, धर्म के नाम पर भारत को बांटने की कोशिश करते हैं। राहुल गांधी के ऐसे बयानों की पाकिस्तानी मीडिया भी निंदा कर रही है। अमेरिका में रहने वाले पाकिस्तान मूल के पत्रकार साजिद तरार ने तो यहां तक कह दिया कि इनका सरनेम गांधी न होता तो ये कहीं छोले बेच रहे होते। पाकिस्तान मूल के पत्रकार साजिद तरार कहते हैं कि मैंने चुनाव में राहुल गांधी की कुछ स्पीचें सुनी है, मुझे डाउट था कि वो भारत के लोकतंत्र के बारे में जो स्टेटमेंट दे रहे हैं वो भारत की छवि को डेमेज करने वाले हैं। अमेरिका में आकर उन्होंने एंटी इंडियन बातें कहीं वो भी तब जब वो अपोजिशन के लीडर हैं, भारत की सबसे पुरानी पार्टी के नेता है, वो गांधी सरनेम का गलत फायदा उठा रहे हैं। इससे मेरी नजरों में राहुल गांधी की इज्जत कम हुई है। फिर अमेरिका में जिस तरह राहुल गांधी ने सिखों की जिल्लतदारी की कि वो भारत में पगड़ी और कड़ा नहीं पहन सकते, ये सरासर गलत है। भारत का तो आर्मी चीफ तक सिख होता है, अमेरिका में भारत के राजदूत सिख रहे हैं। उनकी वाल्दा को चाहिए कि वो राहुल को बैठा कर समझाएं, गांधी नाम को खराब न करे, या फिर सरनेम बदल ले। राहुल गांधी विदेश में भारत, भारतीयों और भारतीय सिखों की तौहीन करते हैं, ये शर्मनाक है। संवैधानिक संस्थाओं को अपमानित करते हैं, ये सब उनकी एंटी भारत विचारधारा है। पाकिस्तानी पत्रकार कमर चीमा के एक शो में साजिद तरार ने राहुल गांधी के बारे में और भी बहुत सी बातें कही हैं, जो कांग्रेस के लिए शर्मनाक हैं।

आतंकी पन्नू के प्रिय बने राहुल

सवाल उठता है कि पिछले दस वर्षों से बचकानी हरकत करने वाले राहुल गांधी अचानक अमेरिका के वर्जीनिया में भारतीय मूल के लोगों के बीच क्यों कहते हैं कि 'पहले आपको यह समझना होगा कि लड़ाई किस बारे में है? लड़ाई राजनीति के बारे में नहीं है, यह सही है, आपका नाम क्या है? लड़ाई इस बारे में है कि क्या एक सिख के तौर पर तुम्हें भारत में पगड़ी पहनने की इजाजत दी जाएगी या एक सिख के तौर पर तुम्हें भारत में कड़ा पहनने की इजाजत दी जाएगी या फिर एक सिख गुरुद्वारा जा सकेगा। असल मायनों में लड़ाई इसी को लेकर है और सिर्फ इनके लिए नहीं, बल्कि सभी धर्मों के लिए है।' अमेरिका में सिखों को लेकर दिए गए राहुल गांधी के इस बयान की जहां भारत में भाजपा से जुड़े सिख समुदाय ने आलोचना की है, वहीं खालिस्तान की मांग करने वाले आतंकी गुरपतवंत सिंह पन्नू ने राहुल गांधी के बयान का समर्थन किया है। गुरपतवंत सिंह पन्नू ने राहुल गांधी के बयान को सही ठहराते हुए कहा कि 'राहुल ने काफी बोल्ड स्टेटमेंट दिया है। उनका ये बयान सिख फॉर जस्टिस के अलग खालिस्तान देश की मांग को जस्टिफाई करता है।' पन्नू ने कहा कि भारत में सिखों की हालत पर राहुल गांधी ने जो बयान दिया है वो न केवल साहसिक है बल्कि 1947 के बाद से भारत में सिखों पर हो रहे अत्याचार को दिखाता है। यह पंजाब की आजादी के लिहाज से सिख फॉर जस्टिस के रुख की भी पुष्टि करता है। भारत द्वारा घोषित एक आतंकवादी गुरपतवंत सिंह पन्नू जब यह कहता है कि राहुल गांधी का बयान अलग खालिस्तान की मांग को जस्टिफाई करता है तो फिर राहुल गांधी किस रास्ते पर चल रहे हैं यह राष्ट्रवादियों को तय करना चाहिए है।

क्या जमीर मर चुका है?

पचास के दशक में जब हिंदू कोड बिल पास हुए थे, तब से कांग्रेस पर हिंदू विरोधी होने के आरोप लगते रहे हैं पर कांग्रेस की लोकप्रियता में तब कमी नहीं आई। साठ के दशक में गोहत्या विरोधी आंदोलन भी उसे हिंदू विरोधी साबित नहीं कर सका था। लेकिन अब राजनीति में बड़ा बदलाव हुआ है, 2014 के बाद से कांग्रेस का हिंदू विरोधी चेहरा बेनकाब हो रहा है। यह काम केंद्र में भाजपा की सरकार बनने के बाद शुरू हुआ। क्योंकि राहुल गांधी कभी हिंदुत्व को मिटाने की बात कहते तो कभी हिंदू शक्ति को समाप्त करने का विवादित बयान देकर देश के हिंदुओं की अपमानित करते रहे। लोकसभा चुनाव 2024 में तो इंडिया गठबंधन के सहयोगी दलों ने भी हिंदुओं का अपमान करने में कोई

2013 में कांग्रेस सरकार ने वक्फ बोर्ड में खतरनाक संशोधन किया, जिससे वक्फ बोर्ड इतना ताकतवर बना कि वो किसी भी हिंदू की संपत्ति को आसानी से कब्जा सके, यह एक तरह से कांग्रेस की देश को धर्मनिरपेक्षता के नाम पर इस्लामिक देश बनाने की तैयारी नहीं तो और क्या है?

कसर नहीं छोड़ी। 4 सितंबर 2023 को तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एमके स्टालिन के बेटे व सरकार में खेल मंत्री उदयनिधि स्टालिन ने सनातन धर्म के बारे में अभद्र टिप्पणी की थी। उन्होंने सनातन धर्म की तुलना कोरोना, डेंगू और मलेरिया से कर दी थी। इसके अगले दिन कर्नाटक सरकार में मंत्री और कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे के पुत्र प्रियंक खड़गे ने उदयनिधि के भाषण का समर्थन कर दिया था। ऐसे में सवाल उठते हैं कि मुस्लिम तुष्टीकरण की राजनीति करने वाले सभी क्षेत्रीय और राष्ट्रीय दल जिसमें आम आदमी पार्टी भी शरीक है, को वोट देने वाले हिंदुओं की ऐसी क्या मजबूरी है जो मुस्लिम परस्त दलों को वोट देते हैं? ऐसी कौन सी विवशता है कि गालियां खाकर भी हिंदू विरोधी दलों का समर्थन करते हैं? क्या हिंदुओं को अपमानित करने वाले दलों को वोट देने वाले हिंदुओं का जमीर मर चुका है?

2014 में क्यों हारी कांग्रेस?

अकेले कांग्रेस के नेता राहुल गांधी, मल्लिकार्जुन खड़गे, प्रियंका गांधी वाड्रा, कांग्रेस प्रवक्ता पवन खेड़ा, सुरेंद्र राजपूत सहित टीवी न्यूज चैनलों की डिबेट में बैठने वाले कांग्रेस के प्रवक्ता ही नहीं हैं जो मुसलमानों के गलत कामों को भी जायज ठहराते हैं, बल्कि समाजवादी पार्टी भी हिंदुओं के खिलाफ ही बोलती है। यह सब मुस्लिम वोटों की खातिर हो रहा है। ऑल इंडिया मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुस्लिमीन के अध्यक्ष व सांसद असदुद्दीन ओवैसी मुसलमानों की राजनीति करते हैं, इसमें किसी को कोई संदेह नहीं। इसी साल सांसदों के शपथ ग्रहण समारोह में ओवैसी ने जय फिलिस्तीन का नारा भी लगाया था, यूपी में सपा और बिहार में आरजेडी भी मुस्लिम वोटों की फसल काटती है, लेकिन इन दलों के नेता देश के बाहर विदेश में कभी भारत के खिलाफ बोलते नहीं देखे गए, लेकिन कांग्रेस नेता और नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी जब भी विदेश जाते हैं भारत और भारतीयों के जहर उलगते हैं। हाल ही में राहुल गांधी अमेरिका यात्रा पर गए जहां उन्होंने सार्वजनिक रूप से भारत के चुनाव आयोग की विश्वसनीयता पर सवाल उठा दिया। वॉशिंगटन डीसी में जॉर्जटाउन यूनिवर्सिटी के छात्रों से बातचीत के दौरान राहुल गांधी ने कहा कि उनकी नजर में 2024 का लोकसभा चुनाव निष्पक्ष नहीं था। उन्होंने भारत के चुनाव आयोग को भाजपा द्वारा नियंत्रित आयोग बता दिया। अमेरिका की धरती पर खड़े होकर राहुल ने कहा कि भाजपा चुनाव इसलिए जीती क्योंकि उसके पास पैसा है, सत्ता है, चुनाव आयोग है, मीडिया है और सारी एजेंसियों पर कब्जा है। ऐसे में एक सवाल तो राहुल गांधी से भी पूछा जाना चाहिए कि जब 2014 में लोकसभा चुनाव हुआ था तब कांग्रेस के पास पैसा था, सत्ता थी, चुनाव आयोग था, मीडिया था, सारी एजेंसियां थी, फिर कांग्रेस सत्ता से बेदखल क्यों हो गई, क्यों चुनाव नहीं जीत पाई? तब नरेंद्र मोदी को बहुमत कैसे मिला? क्या कांग्रेस के चुनाव आयोग ने भाजपा और नरेंद्र मोदी को फायदा पहुंचाया था? हालांकि अमेरिका में राहुल गांधी द्वारा दिए गए बयान का जवाब केंद्रीय मंत्री हरदीप पुरी ने दिया। उन्होंने इल्जाम लगाया कि राहुल गांधी दुनिया में एक खतरनाक नैरेटिव बनाना चाहते हैं कि भारत में सिखों को अपना धर्म मानने की आजादी नहीं। उन्होंने राहुल गांधी को याद दिलाया कि भारत के इतिहास में सिर्फ एक बार 1984 में ऐसा हुआ था, जब सिखों को पगड़ी बांधने और कड़ा पहनने में डर लगा था, जब तीन हजार से ज्यादा बेगुनाह मासूम सिखों को जिंदा जला दिया गया था। राहुल गांधी पीएम नरेंद्र मोदी का विरोध करें, उनकी आलोचना करें, ये विपक्ष के नेता के तौर पर उनका हक है। इसमें किसी को कोई आपत्ति नहीं, लेकिन राहुल गांधी विदेश जाकर हमारी संवैधानिक संस्थाओं को बदनाम करने की कोशिश करें, हमारे देश के सांप्रदायिक सदभाव के खिलाफ बोलें, ये बर्दाश्त नहीं है। मुझे लगता है कि राहुल गांधी को बचपना छोड़ना चाहिए, वो अब नेता प्रतिपक्ष हैं, उन्हें जिम्मेदारी से अपनी बात कहनी चाहिए। संवैधानिक संस्थाओं का अपमान करने के बजाए, जनता के जनादेश को स्वीकार करना चाहिए। ●

बनलेखी में क्या है खास?

बनलेखी गांव नैनीताल जिले के सबसे दूरदराज गांवों में से एक है, इसलिए ये उत्तराखंड की जमीनी संस्कृति के बारे में जानने के लिए एक शानदार डेस्टिनेशन है, चारों तरफ हरे-भरे पहाड़, दूर-दूर तक फैली हिमालय की बर्फ से ढकी चोटियां और चिड़ियों का चहकना इस गांव की खूबसूरती है।

सैलानी अमूमन उत्तराखंड की सैर पर आते हैं, तो मशहूर हिल स्टेशनों की तरफ रुख करते हैं। एक तरह से ये आसान भी है, क्योंकि ये हिल स्टेशन गूगल पर आसानी से सर्च हो जाते हैं। जबकि उत्तराखंड में एक से बढ़िया एक और खूबसूरत गांव हैं, जिनकी खूबसूरती के आगे नैनीताल, मसूरी और हिमाचल प्रदेश का शिमला शहर भी फेल है। भीड़-भाड़ और शोरगुल से दूर ये गांव उन सैलानियों के लिए एकदम सही हैं, जिन्हें एकांत पसंद हैं और पहाड़ की असली खूबसूरती देखना चाहते हैं। इन गावों की सैर करने पर सैलानियों को यहां की संस्कृति के साथ खानपान और पहाड़ के परिवेश से परिचित होने का अवसर मिलता है। पहाड़ के दुर्गम गांवों की पहाड़ जैसी जीवनशैली को करीब से अनुभव करने तथा उसके बारे में जानने का मौका मिलता है। ऐसा ही एक गांव बनलेखी, नैनीताल जिले के मुक्तेश्वर के आचल में छिपा है, जो गूगल मैप पर सर्च करने से भी नहीं मिलता है। बनलेखी गांव नैनीताल जिले के सबसे दूरदराज गांवों में से एक है। इसलिए ये उत्तराखंड की जमीनी संस्कृति के बारे में जानने के लिए एक शानदार डेस्टिनेशन है। चारों तरफ हरे-भरे पहाड़, दूर-दूर तक फैली हिमालय की बर्फ से ढकी ऊंची-ऊंचीं चोटियां, ठंडी व शुद्ध हवा और चिड़ियों का चहकना इस गांव की खूबसूरती में चार चांद लगाने का काम करते हैं। कुल मिलाकर इस बनलेखी गांव में आपको उत्तराखंड की असली संस्कृति की झलक देखने को मिलेगी। यह जगह बहुत खूबसूरत है, यहां के लोग बेहद प्यारे हैं। उन्हें अपने घरों में आपका स्वागत करने में बहुत खुशी होती है। इस गांव को देखने के लिए पैदल चलें, गांव के लोगों से बात करें उनकी दिनचर्या और जीवनशैली के बारे में जानेंगे तो आपको एक नई दुनिया के बारे में पता चलेगा। यहां के सीधे-सादे लोग आपको बिना जान पहचान के भी अपने घरों आने का निमंत्रण दे देंगे। अपने पहाड़ की लोकल डिसेज खिलाएंगे। यानी आप महसूस करेंगे कि एक नई दुनिया की खोज कर ली है। क्योंकि बनलेखी शब्द सही अर्थों में एक छिपा हुआ रत्न जैसा है। जब आप शहरी भीड़ भाड़ से बचकर सुकून की तलाश में निकले और उत्तराखंड आएं तो आपको यह जगह जरूर देखनी चाहिए। नैनीताल की पहाड़ियों के बीच स्थित बनलेखी गांव काठगोदाम से सिर्फ 65 किलोमीटर दूर है। यदि आप दिल्ली, लखनऊ, मुरादाबाद, गाजियाबाद आदि शहरों से ट्रेन से आते हैं तो काठगोदाम से बनलेखी गांव जाने के लिए टैक्सी और उत्तराखंड रोडवेज की बस मिल जाएंगी।

कमल कपूर
वरिष्ठ पत्रकार

हिमालय की ऊंची चोटियों पर सबसे सुंदर दृश्य सनराइज और सनसेट का होता है, जब पहाड़ की बर्फ से ढकी चोटियों पर सूरज की पहली किरण पड़ती है तो पहाड़ सोने के जैसा दिखाई देता है, कुछ देर का यह नजारा जीवन भर याद रहता है।

वॉटरफॉल में मछलियों की कई प्रजातियां

बनलेखी गांव से करीब 12 किलोमीटर की दूरी पर खूबसूरत भालूगाड़ वाटरफॉल है। बनलेखी गांव के बारे में भले ही बहुत कम सैलानियों को पता हो, लेकिन भालूगाड़ वॉटरफॉल टूरिस्टों के बीच बहुत फेमस है। यदि आप उत्तराखंड के नैनीताल की तरफ यात्रा करने आ रहे हैं तो बनलेखी गांव के साथ भालूगाड़ झरना देखने जरूर आएं। यहां आप शानदार नजारों और खूबसूरत वातावरण के बीच कुछ वक्त सुकून के साथ गुजार सकते हैं। यहां अपने दोस्तों और फैमिली के साथ पिकनिक का आनंद भी ले सकते हैं। भालूगाड़ वॉटरफॉल तक आने के बाद उसमें डुबकी ना लगाई जाए, तो फिर मजा नहीं आएगा। इसलिए प्रकृति के इस साफ पानी में एक डुबकी जरूर लगाएं। भालूगाड़ वॉटरफॉल में मछलियों की कई प्रजातियां भी हैं। यहां मछली की एक प्रजाति प्राकृतिक तौर पर 'पेडीक्योर' भी हैं। आमतौर पर मछली खाने के शोकीन लोग 'पेडीक्योर' के लिए एक हजार से पंद्रह सौ रुपये तक बाजार में खर्च करते हैं, लेकिन नेचुरल 'पेडीक्योर' प्रजाति की मछली चाहिए तो भालूगाड़ वॉटरफॉल आइए और इसका मजा लीजिए। इसके अलावा, भालूगाड़ में पक्षियों को देखने के लिए बढ़िया जगह है। यहां दूरबीन साथ लेकर आएंगे तो दूर तक चहचहाते पक्षी देखने में आसानी होगी।

सनराइज का आनंद

सनराइज और सनसेट यानी सूर्योदय और सूर्यास्त भले ही डेली रूटीन की चीजें हों लेकिन इस प्राकृतिक खूबसूरती को अपनी आंखों से हर कोई निहारना चाहता है। ये वो नजारा होता है जो हर किसी को अपनी ओर आकर्षित कर लेता है। किसी ऊंचे पहाड़ की चोटी से उगते सूरज को देखने का नजारा हो या फिर डूबते सूरज को देखना...ये दोनों ही तस्वीरें न सिर्फ आपके कैमरे में बल्कि आंखों में भी हमेशा के लिए बस जाती हैं। अगर आप सनसेट और सनराइज को करीब से देखने के शौकीन हैं तो इसके लिए आपको विदेश जाने की जरूरत नहीं। बल्कि उत्तराखंड की तरफ रुख करें। यहां सूर्योदय और सूर्यास्त का बेस्ट नजारा देखने को मिल जाएगा। हिमालय की ऊंची चोटियों पर सबसे सुंदर दृश्य सनराइज और सनसेट का होता है। जब पहाड़ की बर्फ से ढकी चोटियों पर सूरज की पहली किरण पड़ती है तो बर्फ से ढकी पर्वत श्रृंखला सोने के जैसी दिखाई देती है। इसके कुछ ही मिनटों बाद चारों तरफ रोशनी छा जाती है। यह कुछ देर का नजारा जीवन भर याद रहता है। मुक्तेश्वर की कोई भी यात्रा नंदा देवी चोटी से सनराइज और सनसेट के देखे बिना पूरी नहीं होती। समुद्र तल से 7,816 मीटर की ऊंचाई पर स्थित नंदा देवी पर्वत देश और दुनिया का दूसरा सबसे ऊंचा स्थान है। अगर आपको सनराइज देखना है तो इसके लिए सवेंरे जल्दी उठना पड़ेगा। सनसेट के लिए भी आपको सूर्य अस्त होने का इंतजार करना होगा।

- **बनखेली गांव के बारे में भले ही बहुत कम सैलानियों को पता हो, लेकिन भालूगाड़ वॉटरफॉल टूरिस्टों के बीच बहुत फेमस है, यदि आप उत्तराखंड के नैनीताल की तरफ यात्रा करने आ रहे हैं तो बनलेखी गांव के साथ भालूगाड़ झरना देखने जरूर आएं।**
- **मुक्तेश्वर की कोई भी यात्रा नंदा देवी चोटी से सनराइज और सनसेट के देखे बिना पूरी नहीं होती, नंदा देवी पर्वत देश का दूसरा सबसे ऊंचा स्थान है, अगर आपको सनराइज देखना है तो इसके लिए सवेंरे जल्दी उठना पड़ेगा।**

मुक्तेश्वर धाम में पूजा करें

मुक्तेश्वर आकर ऐसा महसूस होता है कि अब इसके आगे कोई पर्वत नहीं है। मुक्तेश्वर के किसी भी हिस्से में खड़े होकर हिमालय की चोटी को साफ साफ देखा जा सकता है। इसी क्षेत्र में मुक्तेश्वर धाम धार्मिक स्थल होने के साथ ही अद्भुत पर्यटन स्थल भी है। यदि आप अपने आपको खोजना चाहते हैं, तो इस धाम के दर्शन जरूर करने चाहिए। यह मंदिर करीब 2312 मीटर की ऊंचाई पर मुक्तेश्वर नाम की चोटी पर है, जिसे पांडव काल का धाम माना जाता है। मान्यताओं के अनुसार यहां पांडवों ने अज्ञातवास के दौरान शिवलिंग की स्थापना की थी। स्थानीय ग्रामीण इस शिवलिंग की आयु 5350 वर्ष बताते हैं। यानी यह मंदिर भारत का बेहद प्राचीन मंदिर में शामिल है, जो हिंदू धर्मग्रंथ में भगवान शिव को समर्पित 18 सबसे महत्वपूर्ण मंदिरों में से एक है। मुक्तेश्वर धाम मंदिर में सफेद संगमरमर का शिवलिंग है। शिवलिंग के अलावा यहां पर भगवान गणेश, बह्मा, विष्णु, पार्वती, हनुमान और नंदी सहित अन्य देवी-देवताओं की मूर्तियां स्थापित हैं। ऐसा माना जाता है कि भगवान शिव ने यहां राक्षस का वध करने के बाद उसे मोक्ष प्रदान किया था। इसलिए इसका नाम मुक्तेश्वर पड़ा। मान्यता है कि जो भी दंपति निसंतान होते हैं, उन्हें यहां आकर संतान की प्राप्ति होती है। इसके साथ ही मुक्तेश्वर साधु संतों का निवास स्थल भी रहा है। मुक्तेश्वर धाम संत श्री मुक्तेश्वर महाराज जी का निवास स्थान था। मुक्तेश्वर महाराज बंगाली मूल के थे, जो मौनी बाबा के नाम से प्रसिद्ध थे। वो कुटिया में रहते थे। मंदिर में उनकी समाधि बनी हुई है। उनके शिष्य स्वामी संशुधानंद अभी भी मंदिर में बने आश्रम में ही ध्यान करते हैं। 5350 वर्ष पुराने इस शिवलिंग में सच्चे मन से बेलपत्र और जल चढ़ाने से भक्तों की सभी मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। नोबेल पुरस्कार विजेता ब्रिटिश वैज्ञानिक रोबट कोच भी इस मुक्तेश्वर मंदिर की यात्रा कर चुके हैं। अगर आप भी धार्मिक यात्रा करना पसंद है, तो मुक्तेश्वर की यात्रा अवश्य करें। मंदिर तक का सफर करने के बीच प्राकृतिक नजारें देखकर मन को शांति मिलेगी। अगर आप ट्रैकिंग के लिए तैयार नहीं हैं, तो यहां सीढ़ियों से भी जाने का विकल्प चुन सकते हैं। बनलेखी गांव के नजदीक ही शिव मंदिर, राजरानी मंदिर और ब्रह्मेश्वर मंदिर जैसे कई फेमस मंदिर है। इन सब में सबसे फेमस जगह मुक्तेश्वर धाम है। इस इलाके के लोग सबसे ज्यादा इसी मंदिर में जाते हैं। इस मंदिर में शिव के दर्शन के बाद ही बनलेखी की अच्छी और सफल यात्रा होती है। ये हिल स्टेशन 2171 मीटर की ऊंचाई पर है, नैनीताल से 51 किलोमीटर और हल्द्वानी से 72 किलोमीटर है। कुमाऊं में बसा मुक्तेश्वर सुंदर घाटियों से घिरा हुआ है।

भगवा में रोहिंग्या

भारत में दाखिल हुए रोहिंग्यों ने नेपाल के बाद उत्तराखंड के पहाड़ी क्षेत्र को सुरक्षित ठिकाना बनाया है, ये हल्द्वानी व ऊधमसिंह नगर के रास्ते पूरे कुमाऊं मंडल में घुसपैठ कर चुके हैं, इन्हें मुस्लिम बस्तियों में आसानी से शरण मिल गई, अब ये रोहिंग्या देश की सुरक्षा व संप्रभुता के लिए भी चुनौती बन रहे हैं।

उदय भान सिंह
लेखक

भगवा कपड़े, गले में रुद्राक्ष की माला, माथे पर पीला या सफेद लम्बा तिलक, करीब 25 से 35 वर्ष के हट्ठे-कट्ठे बदन पर राख, हाथ में कमंडल और लाठी लेकर उत्तराखंड में घूमने वालों में बड़ी संख्या रोहिंग्या और बांग्लादेशी मुस्लिमों की है, जो एक साजिश के तहत देवभूमि उत्तराखंड की शांत वादियों को अशांत करना चाहते हैं। ऋषि-मुनियों की पावन धरती को बदनाम करने की साजिश रची जा रही है। ये बांग्लादेशी मुस्लिम और रोहिंग्या सनातन संस्कृति को सबसे बड़ा खतरा पैदा कर रहे हैं। कम से कम दो या दो से अधिक के ग्रुप में घूमने वाले रोहिंग्या दिन में भीख मांगते हैं और रात को धार्मिक नगरी हरिद्वार में मांस और शराब का खुलेआम सेवन करते हैं। नशे की हालत में चोरी जैसे अपराध भी करते हैं। इसलिए उत्तराखंड के मैदानी क्षेत्र से लेकर पहाड़ी इलाकों तक में लगातार अपराध बढ़ रहे हैं। उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने मजारों पर बुल्डोजर चलाया तो मजारों के कुछ खादिमों ने भगवा धारण कर लिया। शायद अब ये मजारों के स्थान पर मठ बनाकर सरकारी जमीन कब्जाने की फिराक में हैं। रोहिंग्या और बांग्लादेशी मुसलमान ज्यादातर रेल लाइन के किनारे झुग्गियों में रहते हैं। इनमें से कुछ ऐसे भी हैं जो ट्रेनों को दुर्घटनाग्रस्त करने के लिए रेल लाइनों के साथ छेड़छाड़ करते हैं। रेल लाइन के नट-बोल्ड तक ढ़ीले कर देते हैं, इसलिए देश भर में रेल दुर्घटनाओं में अचानक वृद्धि हुई है। इनके पीछे देश के कट्टरपंथी जमात का हाथ हो सकता है। बांग्लादेश के रास्ते भारत में दाखिल हुए रोहिंग्यों ने नेपाल के बाद उत्तराखंड के पहाड़ी क्षेत्र को सुरक्षित ठिकाना बना लिया है। दलालों के माध्यम से ये हल्द्वानी व ऊधमसिंह नगर के रास्ते पूरे कुमाऊं मंडल में घुसपैठ कर चुके हैं। इन्हें मुस्लिम बस्तियों में आसानी से शरण मिल गई है। इसलिए ये मुस्लिम आबादी में घुल-मिल कर देश की सुरक्षा के साथ संप्रभुता के लिए भी चुनौती बन रहे हैं। सुरक्षा एजेंसियों के अनुसार इनका पहाड़ तक पहुंचने का रूट बड़े खतरे की तरफ संकेत है। मसलन,इनके लिए बांग्लादेश से लेकर बिहार, उत्तर प्रदेश व उत्तराखंड तक विशेष कारिडोर तैयार किया गया। इसमें उत्तराखंड से सटे उत्तर प्रदेश के कई जिले भी अतिसंवेदनशील श्रेणी में आ गए हैं। जहां से इन्हें बड़ी मदद मिलती है।

मुफ्त का राशन ले रहे रोहिंग्या

सुरक्षा एजेंसियों की रिपोर्ट में कहा गया है कि रोहिंग्या बांग्लादेश से होते हुए भारत में दाखिल होते हैं। यहां उनका पहला पड़ाव पश्चिम बंगाल, असम और वाराणसी होता है। यहां से इनके कुछ गुट गोरखपुर की तरफ निकलते हैं जो सोनौली होते हुए नेपाल तक पहुंचते हैं। कुछ गुट लखनऊ की तरफ बढ़ते हैं। यहां से एक हिस्सा कानपुर की तरफ बढ़ता है जो बाद में घूमते घामते गाजियाबाद, गुरुग्राम और दिल्ली के विभिन्न क्षेत्रों में फैल जाते है। यहीं से धीरे-धीरे ये रोहिंग्या और बांग्लादेशी उत्तराखंड के हल्द्वानी व ऊधमसिंह नगर के रास्ते नैनीताल, अल्मोड़ा, बागेश्वर, चम्पावत व पिथौरागढ़ तक पहुंच जाते हैं। 2012 के बाद इनकी लगातार बढ़ती संख्या सुरक्षा के साथ सामाजिक व सांस्कृतिक रूप से गंभीर संकट पैदा कर रही है। सुरक्षा एजेंसियों की रिपोर्ट में कहा गया है कि इन्हें पहले धार्मिक स्थलों में शरण मिलती है, फिर इन्हें छोटे-छोटे काम में लगाया जाता है। फिर वोटों की फसल उगाने वाले स्थानीय नेता इनके राशन कार्ड, आधार कार्ड, वोटर कार्ड बनवाते हैं।

भगवाधारी रोहिंग्या उन संदिग्धों से ज्यादा खतरनाक हैं जो ठेली, रेहड़ी, फड़ या कबाड़ खरीदने का काम कर रहे हैं, क्योंकि भगवाधारी रोहिंग्यां सनातन संस्कृति को तहस-नहस करने का काम कर रहे हैं, ये उन इलाकों में आसानी से लूटपाट भी करते हैं जहां घरों में महिलाएं अकेली होती हैं।

इस तरह देश के संसाधनों और मुफ्त की योजनाओं का रोहिंग्या भरपूर लाभ उठाते हैं। मुफ्त राशन, मुफ्त पानी, मुफ्त का इलाज जैसी योजनाओं का लाभ लेते हैं। यह भारतीयों के टैक्स पर पल और बढ़ रहे हैं। यही रोहिंग्या देश की डेमोग्राफी चेंज कर रहे हैं। हालांकि उत्तराखंड में किरायेदारों तक का सत्यापन कराने का नियम है, लेकिन यहां की पुलिस और एलआईयू कैसे सत्यापन करती है कि रोहिंग्या पकड़ में ही नहीं आते हैं? पिछले दिनों उत्तराखंड पुलिस ने सत्यापन अभियान चलाया। यह अभियान रोहिंग्यों पर केंद्रित था, जिस पर प्रदेश के गृह मंत्रालय की भी नजर थी। कुमाऊं के संवेदनशील जिलों नैनीताल, ऊधमसिंह नगर, चंपावत, पिथौरागढ़, पर विशेष नजर रखने के लिए डिप्टी एसपी को सत्यापन अभियान में लगाया गया। नैनीताल जिले के कृष्णापुर, बूचड़खाना, सूखाताल, हरिनगर, बारापत्थर, सीआरएसटी स्कूल के पीछे वाले इलाकों में रोहिंग्यों के ठिकाने हैं। भीमताल, भवाली, रामगढ़, मुक्तेश्वर में रोहिंग्या हैं या नहीं इसकी भी गहनता से जांच कराई गई। पुलिस ने सुरक्षा एजेंसियों के इनपुट के आधार पर पूरे कुमाऊं में सत्यापन अभियान शुरू किया जिसमें दस्तावेजों की जांच के साथ ही स्थानीय संपर्क, निवास का समय और कार्यप्रणाली पर भी नजर रखी गई।

सत्यापन अभियान का नतीजा

सत्यापन अभियान के दौरान ऊधमसिंह नगर में 439 व नैनीताल जिले में 359 संदिग्ध मिले। सबसे अधिक 985 संदिग्ध राजधानी देहरादून में मिले। सभी संदिग्धों की रिपोर्ट पुलिस मुख्यालय भेज दी गई है। 10 दिन चले सत्यापन अभियान में उत्तराखंड पुलिस ने 10 संदिग्धों को गिरफ्तार भी किया। पुलिस आकड़े बताते हैं कि अभियान के दौरान उत्तराखंड में 67,860 रेहड़ी, ठेली वालों व किरायेदारों का पुलिस द्वारा सत्यापन किया गया। इसमें 2526 घुसपैठिये मिले। लेकिन 10 संदिग्धों को ही गिरफ्तार किया गया। जबकि बाकी 2516 संदिग्धों के खिलाफ पुलिस ने कार्रवाई करने का दावा किया। इससे सवाल उठता है कि पुलिस की नजर में जो घुसपैठियां हैं उनको गिरफ्तार क्यों नहीं किया गया? पुलिस का कहना है कि उत्तराखंड में घुसपैठ करने वाले अधिकांश संदिग्ध लोग ठेली, रेहड़ी या फिर फेरी लगाकर अथवा कबाड़ खरीदने का काम करते हैं। पुलिस को कुमाऊं मंडल के 6 जिलों नैनीताल, ऊधमसिंह नगर, चंपावत, बागेश्व अल्मोड़ा और पिथौरागढ़ में 1219 लोग संदिग्ध मिले। नैनीताल जिले में 12145 लोगों का सत्यापन किया गया जिसमें 359 संदिग्ध बताए गए। ऊधमसिंह नगर में 5186 लोगों का सत्यापन किया गया जिसमें 439 लोगों को संदिग्ध बताया गया। अल्मोड़ा जिले में 3553 का सत्यापन किया गया जिसमें 160 लोग संदिग्ध बताए जा रहे हैं। बागेश्वर में 1883 लोगों का सत्यापन किया गया जिसमें 196 संदिग्ध बताए जा रहे हैं। चंपावत में 1284 लोगों का सत्यापन किया गया जिसमें 42 संदिग्ध मिले। पिथौरागढ़ कुल 3186 लोगों का सत्यापन किया गया जिसमें 23 लोग संदिग्ध बताए गए। ये सभी कबाड़ खरीदने से लेकर, रेहड़ी, ठेली अथवा फेरी लगाने का काम करते हैं। ये सभी लोग बिना सत्यापन कराए रह रहे थे, जबकि राज्य में निवास करने वाले हर व्यक्ति को सत्यापन कराना आवश्यक होता है। गढ़वाल मंडल के 7 जिलों में सत्यापन के दौरान 1307 संदिग्धों की पहचान की गई। पुलिस रिपोर्ट में कहा गया है कि सबसे ज्यादा संदिग्ध 985 उत्तराखंड की राजधानी देहरादून में मिले। सत्यापन के दौरान गढ़वाल मंडल में संदिग्ध पाए जाने की बात करें तो हरिद्वार जिले में 11076 लोगों का सत्यापन किया गया जिसमें 179 संदिग्ध मिले। राजधानी देहरादून 11352 लोगों के सत्यापन करने पर 985 संदिग्ध पाए गए। इनमें से 9 लोगों को गिरफ्तार किया गया। पौड़ी में 3581 लोगों का सत्यापन किया गया जिसमें सिर्फ 7 संदिग्ध मिले। चमोली में 2604 लोगों का सत्यापन करने पर 19 संदिग्ध मिले। टिहरी 7840 लोगों का सत्यापन हुआ और 16 संदिग्ध मिले। उत्तरकाशी में 1829 लोगों का सत्यापन करने पर सिर्फ एक संदिग्ध मिला। रुद्रप्रयाग ऐसा जिला है जहां सत्यापन करने पर एक भी संदिग्ध नहीं मिला।

सत्यापन के नाम पर खानापूरी

पुलिस ने सत्यापन के नाम पर सिर्फ खानापूर्ति की है। पुलिस ने ठेली, रेहड़ी या फिर फेरी लगाकर अथवा कबाड़ खरीदने का काम करने वालों को ही सत्यापन किया, लेकिन बड़ी संख्या में रोहिंग्या भगवा धारण कर भीख मांगने का काम कर रहे हैं, उनका सत्यापन क्यों नहीं किया गया? धर्मनगरी हरिद्वार में सबसे ज्यादा रोहिग्या सनातन धर्म को बदनाम कर रहे हैं। हरिद्वार जैसी धार्मिक शहर के आसपास रहकर ये मांस-मदिरा का खुलेआम

- **रोहिंग्या और बांग्लादेशी मुसलमान ज्यादातर रेल लाइन के किनारे झुग्गियों में रहते हैं, इनमें से कुछ ऐसे भी हैं जो ट्रेनों को दुर्घटनाग्रस्त करने के लिए रेल लाइनों के साथ छेड़छाड़ करते हैं, रेल लाइन के नट-बोल्ड तक ढ़ीले कर देते हैं, इसलिए देश भर में रेल दुर्घटनाओं में अचानक वृद्धि हुई है।**
- **वोटों की फसल उगाने वाले स्थानीय नेता रोहिंग्यों के राशन कार्ड, आधार कार्ड, वोटर कार्ड बनवाते हैं, इस तरह देश के संसाधनों और मुफ्त की योजनाओं का रोहिंग्या भरपूर लाभ उठाते हैं, मुफ्त राशन, मुफ्त पानी, मुफ्त का इलाज जैसी योजनाओं का लाभ लेते हैं।**

सेवन कर रहे हैं। कारोबार करने वाले तो फिर एक जगह ठिकाना बनाकर रह रहे हैं, लेकिन भगवा वस्त्रों में छिपे रहिंग्यों की पहचान कैसे होगी? क्या पुलिस की सत्यापन सूची में भगवाधारी रोहिंग्या नहीं हैं? क्या उत्तराखंड पुलिस भगवा वस्त्रों में छिपे रहिंग्यों का पता लगाने में नाकाम है? क्योंकि भगवाधारी रोहिंग्यों का सबसे बड़ा गिरोह उत्तराखंड की धर्मनगरी हरिद्वार में ही फैला हुआ है। हरिद्वार के बहुत से जागरूक लोग ऐसे ढोंगी और नशेड़ियों को पकड़ते हैं उनसे जब गायत्री मंत्र अथवा हनुमान चालीसा सुनाने को कहते हैं तो उनकी असलियत सामने आ जाती है। ऐसी तमाम वीडियो सोशल मीडिया पर घूमती रहती है। सोशल मीडिया पर एक वीडियो ऐसी भी देखने को मिली जिसमें एक भगवाधारी बदरीनाथ मंदिर को मस्जिद बता रहा था। वो दावा कर रहा था कि यहां बदरुद्दीन की मजार थी, जिसे मंदिर बनाया गया है। यह सुनकर जब इस भगवाधारी से गायत्री मंत्र सुनाने को कहा गया तो उसका चेहरा बेनकाब हो गया। भगवाधारी रोहिंग्या उन संदिग्धों से ज्यादा खतरनाक हैं जो ठेली, रेहड़ी, फड़ या कबाड़ खरीदने का काम कर रहे हैं। क्योंकि भगवाधारी रोहिंग्यां सनातन संस्कृति को तहस-नहस करने का काम कर रहे हैं। ये उन इलाकों में आसानी से लूटपाट भी करते हैं जहां घरों में महिलाएं अकेली होती हैं। भीख मांगने के बहाने से ये आसानी से दरवाज खुलवा लेते हैं और फिर लूट अथवा डकैती की वारदात को अंजाम देकर निकल जाते हैं। इनका कोई ठिकाना नहीं होता इसलिए किसी भी वारदात को अंजाम देने के बाद ये इलाका भी बदल देते हैं। गैर भाजपाई दल इन रोहिंग्यों को शरण और संरक्षण दोनों देते हैं। दिल्ली में तो बाकायदा केजरीवाल सरकार ने इन्हें वोट बैंक बना रखा है। इन्हें भारतीय नागरिकों की तरह हर सुविधा दी जाती है। बिजली, पानी, राशन इलाज के साथ आम आदमी पार्टी के विधायक वक्त बे वक्त इनकी आर्थिक रूप से भी मदद करते हैं। यह खेल कोई चोरी छिपे नहीं होता बल्कि खुलेआम होता है। इसलिए इनकी पहचान करना मुश्किल होता है।

प्रयागराज

महाकुंभ में रोहिंग्यों पर रोक

देश में रोहिंग्या मुसलमान भगवा पहन कर धार्मिक आयोजनों में घुसपैठ कर रहे हैं, भीख मांग रहे हैं, धोखाधड़ी और ठगी कर रहे हैं इससे संत समाज चिंतित है, संत समाज की मांग है कि प्रयागराज में जनवरी 2025 में होने वाले कुंभ में रोहिंग्यों व ढोंगी बाबाओं के प्रवेश पर प्रतिबंध लगाया जाए।

जनवरी से फरवरी 2025 तक उत्तर प्रदेश के प्रयागराज में आयोजित होने वाले महाकुंभ मेले में ढोंगी बाबाओं और भगवाधारी रोहिंग्या मुसलमानों का प्रवेश रोकने के लिए अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद ने महत्वपूर्ण फैसला किया है। संत समाज ने महाकुंभ मेले में रोहिंग्या मुसलमानों के घुसपैठ करने की आशंका जताई है। संतों का कहना है कि रोहिंग्या भेष बदलकर धार्मिक मेलों में घुस आते हैं और फिर मेला परिसर में भीख मांगने के साथ ठगी और धोखेधड़ी कर संतों की छवि खराब करते हैं। इस बार प्रयागराज में महाकुंभ मेला 3 जनवरी 2025 से होगा। इससे पहले यह महाकुंभ 2013 में हुआ था। इस महाकुंभ मेले का संबंध ज्योतिष और आस्था दोनों से माना जाता है। ज्योतिषीय मान्यताओं के अनुसार, वृष राशि में वृहस्पति और सूर्य व चंद्रमा के मकर राशि में प्रवेश करने पर कुंभ मेले का आयोजन होता है। 2025 में वृष राशि में वृहस्पति के होने का संयोग बनेगा। इसलिए 13 जनवरी से 26 फरवरी तक महाकुंभ मेले का योग बनेगा। महाकुंभ का पहला शाही स्नान 14 जनवरी को मकर संक्रांति के दिन होगा। दूसरा शाही स्नान 29 जनवरी को मौनी अमावस्या के दिन होगा। तीसरा शाही स्नान 3 फरवरी को वसंत पंचमी पर होगा। इन 3 शाही स्नान के अलावा महाकुंभ के कुछ और भी स्नान की तिथियां प्रमुख मानी जाती हैं। जिसमें 13 जनवरी को पौष पूर्णिमा का स्नान, 12 फरवरी को माघी पूर्णिमा का स्नान और 26 फरवरी को महाशिवरात्रि का स्नान सबसे महत्वपूर्ण माना जाता है। हिंदुओं के लिए ये सभी स्नान आस्था के केंद्र रहते हैं। लेकिन जिस तरह से देश में रोहिंग्या मुसलमान भगवा पहन कर धार्मिक आयोजनों में घुसपैठ कर रहे हैं, भीख मांग रहे हैं, धोखाधड़ी और ठगी कर रहे हैं उससे संत समाज चिंतित है। संत समाज की मांग है कि प्रयागराज में दो माह बाद जनवरी 2025 में आयोजित होने वाले महाकुंभ में रोहिंग्या घुसपैठियों और ढोंगी बाबाओं के प्रवेश पर प्रतिबंध लगाया जाए। इसके लिए अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद के महंत राजेंद्र दास ने सुझाव दिया कि सभी अखाड़ों की तरफ से साधु-संतों को पहचान पत्र जारी करने चाहिए। ताकि महाकुंभ में आने वाले संत समाज को किसी तरह की परेशानी का सामना न करना पड़े।

महाकुंभ में रोहिंग्या घुसपैठियों और ढोंगी बाबाओं के प्रवेश पर प्रतिबंध लगाने के लिए अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद के महंत राजेंद्र दास ने सुझाव दिया कि सभी अखाड़ों की तरफ से साधु-संतों को पहचान पत्र जारी करने चाहिए, ताकि महाकुंभ में आने वाले संत समाज को परेशानी का सामना न करना पड़े।

रोहिंग्या मुस्लिमों कुंभ से दूर रखने की तैयारी

अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद इस समय दो गुटों में बंटा हुआ है। साधु संतों की सबसे बड़ी इस संस्था के एक गुट के महामंत्री महंत राजेंद्र दास हैं। उन्होंने मीडिया से कहा कि महाकुंभ मेले में रोहिंग्या मुसलमानों के भेष बदलकर आने पर रोक लगाने की मांग सबसे पहले उन्होंने उठाई है। महंत राजेंद्र दास का कहना है, कि पाखंडी, दुराचारी लोग सनातन धर्म को बदनाम कर रहे हैं। इसलिए बड़ी संख्या में रोहिंग्या मुसलमान भेष बदलकर, भगवा वस्त्र धारण कर धार्मिक मेला क्षेत्र में आते हैं और यहां पर लोगों से फ्रॉड करते हैं, पाखंड फैलाकर ऐसे कुकृत्य करते हैं, जिससे सनातन धर्म की बदनामी होती है। यही नहीं उन्होंने यह भी कहा कि रोहिंग्या मुसलमान बड़ी संख्या में भिखारी का भेष धर कर मेला क्षेत्र में घुसपैठ कर मेले का माहौल बिगाड़ने की कोशिश कर सकते हैं। इसलिए उन्होंने मांग उठाई है कि महाकुंभ मेला-2025 में रोहिंग्या मुस्लिमों के प्रवेश को रोका जाए। सभी अखाड़ों को उनके अखाड़ों से जुड़े साधु-संतों को परिचय पत्र देना चाहिए। ताकि बहरूपियों की आसानी से प्रशासन व पुलिस पहचान कर सके और उनको मेले में आने से रोक सके। इससे धार्मिक मेले और सनातन धर्म की हानि भी नहीं होगी और सुरक्षित तरीके से मेला संपन्न हो जाएगा। महंत राजेंद्र दास का यह भी कहना है कि अखाड़े से जुड़े साधु-संत बैठक करके खुद से यह फैसला लेंगे कि मेले में आने वाले सभी साधु संतों को अखाड़े की तरफ से पहचान पत्र दिया जाए। जिससे महाकुंभ मेला में भेष बदलकर आने वाले रोहिंग्या मुसलमानों के साथ फर्जी साधु संतों पर भी नियंत्रण किया जा सकेगा। महंत राजेंद्र दास ने यह भी कहा कि साधु संत शब्द का इस्तेमाल सिर्फ उन्हीं संतों के लिए किया जाना चाहिए, जो सनातन धर्म से जुड़े होते हैं और जिनके द्वारा सनातन धर्म का प्रचार प्रसार किया जाता है। जो खुद सनातन धर्म को मानने वाले हों और दूसरों को भी सनातन धर्म की शिक्षा देते हों। सिर्फ ऐसे ही साधु संत महात्माओं को साधु संत बाबा के नाम से संबोधित करना चाहिए जो सनातन धर्म को मानने वाले हों। उनका यह भी कहना था कि इस समय देश में तमाम ऐसे लोग हैं जो पैंट शर्ट, सूट पहनकर खुद को साधु संत और बाबा कहलवाते हैं। ये धर्म के नाम पर पाखंड और चमत्कार के नाम पर लोगों को ठगने का काम करते हैं। इस प्रकार के लोगों के नाम के साथ साधु अथवा बाबा शब्द का इस्तेमाल नहीं होना चाहिए। इन विषयों पर जल्द ही अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद से जुड़े सभी 13 अखाड़ों के संत महंत बड़ी बैठक करेंगे। जिसमें सनातन धर्म को बदनाम करने वाले तमाम पाखंडियों, दुराचारियों और सनातन धर्म को न मानने वाले फर्जी बाबाओं के खिलाफ कार्रवाई करने की नीति बनाकर सख्त कदम उठाए जाएंगे।

फर्जी बाबाओं पर रोक लगे

श्री पंचायती अखाड़ा बड़ा उदासीन के मुखिया महंत दुर्गादास का कहना है कि असमाजिक तत्वों को महाकुंभ मेला परिसर में घुसने से रोकने के लिए अखाड़ा परिषद ने अपने अखाड़े से जुड़े साधु-संतों की सूची तैयार करना शुरू कर दिया है, ताकि ऐसे लोगों का बहिष्कार हो जो धार्मिक मेलों में भोली-भाली जनता के साथ ठगी करते हैं। किन्नर आखड़े की महामंडलेश्वर कौशल्या नंद गिरी कहती हैं कि जो भी फर्जी बाबा संत की छवि को खराब कर रहे हैं, उन पर अंकुश लगाने के लिए पूरा अखाड़ा परिषद साथ है। ऐसे फर्जी और ढ़ोंगी बाबाओं पर रोक लगना आवश्यक है। क्योंकि महाकुंभ जैसे अवसर अखाड़ों और श्रद्धालुओं के लिए आकर्षण का केंद्र होते हैं। अखाड़ों के साधु सन्यासी केवल कुंभ मेले के दौरान ही बड़ी संख्या में प्रवेश करते हैं। इसलिए उनका महत्व और भी बढ़ जाता है। पूरे मेला क्षेत्र में तमाम अखाड़ों के शिविर लगते हैं, शिविरों में भारी संख्या में श्रद्धालु प्रवचन सुनने के लिए इकट्ठा होते हैं। संत समाज को आशंका है कि जिस तरह से हाथरस में समागम के दौरान भगदड़ मची और लोगों की जान गई उस तरह की घटना महाकुंभ में न हो इसलिए भी रोहिंग्यों को धार्मिक मेला परिसर से दूर खा जाए। ऐसे बाबाओं पर भी अंकुश लगाना चाहिए जो भोली-भाली जनता को चमत्कार के नाम पर बेवकूफ बनाकर अपना दरबार लगाते हैं और ठगी करते हैं। वैसे भी महाकुंभ में एक साथ करोड़ों की संख्या में श्रद्धालु और साधु संत

- **ज्योतिषीय मान्यताओं के अनुसार, वृष राशि में बृहस्पति और सूर्य व चंद्रमा के मकर राशि में प्रवेश करने पर कुंभ मेले का आयोजन होता है, 2025 में वृष राशि में बृहस्पति के होने का संयोग बनेगा, इसलिए 13 जनवरी से 26 फरवरी तक महाकुंभ मेले का योग बनेगा।**
- **2025 में लगने वाले महाकुंभ में नगर प्रवेश और शाही पेशवाई की तिथियां तय कर ली गई हैं, देशभर में फैले अखाड़े के नागा संन्यासी, महामंडलेश्वर, महंत, साधु-संत और मठाधीश 12 अक्टूबर को विजयदशमी पर्व पर प्रयागराज के लिए प्रस्थान करेंगे।**

तथा नागा बाबा इकट्ठा होते हैं।

अखाड़ों के कार्यक्रम निर्धारित

पंच दशनाम जूना अखाड़े ने 2025 में लगने वाले महाकुंभ में नगर प्रवेश और शाही पेशवाई की तिथियां तय कर ली हैं। देशभर में फैले अखाड़े के नागा संन्यासी, महामंडलेश्वर, महंत, साधु-संत और मठाधीश 12 अक्टूबर को विजयदशमी पर्व पर प्रयागराज के लिए प्रस्थान करेंगे। तीन नवंबर को यम द्वितीया पर हाथी-घोड़े, बग्घी, सुसज्जित रथों और पालकियों के साथ जूना अखाड़े की पेशवाई संगम की रेती पर लगने वाले महाकुंभ नगर के शिविर में देवता के साथ प्रवेश करेगी। संयासियों के सबसे बड़े पंच दशनाम जूना अखाड़े ने नगर प्रवेश, पेशवाई, शाही स्नान, शोभायात्रा से लेकर कढ़ी-पकौड़ा तक की तिथियां तय कर दी हैं। जूना अखाड़े के अंतरराष्ट्रीय सभापति महंत प्रेम गिरि की अध्यक्षता में हुई बैठक में महाकुंभ के स्नान पर्वों की तैयारियों के साथ मेले की व्यवस्था को लेकर कई प्रस्तावों को अंतिम रूप दिया जा चुका है। महंत हरि गिरि का कहना है कि जूना अखाड़े के प्रमुख पदाधिकारियों की मौजूदगी में महाकुंभ में भाग लेने, नगर प्रवेश करने, धर्म ध्वजा पूजन, नागा संयासियों के लिए लगाए जाने वाले शिविरों के लिए भूमि आवंटन और कुंभ शिविर में प्रवेश समेत अन्य तिथियों का निर्धारण मुहूर्त के अनुसार कर लिया गया है। अखाड़े के रमता पंच, नागा संयासी, मठाधीश, महामंडलेश्वर, आश्रमधारी शहर से बाहर रामपुर में स्थित सिद्ध हनुमान मंदिर परिसर में शरद पूर्णिमा पर 16 अक्टूबर को पहुंच जाएंगे। तीन नवंबर को यम द्वितीया पर रमता पंच की अगुवाई में जूना अखाड़ा पूरे लाव-लश्कर, बैंड बाजा, पालकियों के साथ जुलूस की शक्ल में नगर प्रवेश करेंगे 23 नवंबर को कुंभ मेला छावनी में काल भैरव अष्टमी के दिन आवंटित भूमि का पूजन कर धर्म ध्वजा स्थापित की जाएगी। 14 दिसंबर को अखाड़े के आचार्य महामंडलेश्वर अवधेशानंद गिरि के नेतृत्व में जूना अखाड़ा की ओर से पेशवाई निकाली जाएगी। पेशवाई, कुंभ मेला छावनी में समूह के साथ प्रवेश करेगी। 13 जनवरी को प्रथम शाही स्नान से पहले वेणी माधव भगवान की पूजा-अर्चना के बाद भव्य शोभायात्रा निकाली जाएगी और नगर परिक्रमा की जाएगी।

मेला प्राधिकरण ऑनलाइन

कुंभ मेले की शुरुआत से पहले साधु-संतों के साथ ही संस्थाओं को बसाया जाएगा। इसके साथ ही तीर्थ पुरोहितों का शिविर लगेगा। कुंभ मेला में 4 हजार से ज्यादा संस्थाएं और 13 अखाड़ों के शिविर लगते हैं। इसके साथ ही अखाड़ों के आचार्य महामंडलेश्वर अपने-अपने शिविर लगाते हैं। शिविर लगाने के लिए सभी साधु संत अखाड़ों के अलावा संस्थाएं और तीर्थपुरोहितों को प्रयागराज मेला प्राधिकरण के ऑफिस में आवेदन करना पडेगा। इसके बाद उन्हें मेला कार्यालय से जमीन आवंटन से लेकर नल, बिजली, शौचालय समेत अन्य सुविधाओं की पर्चियां मिलेंगी। इन्हीं पर्चियों के जरिये उनके शिविरों की बसावट पूरी होगी। महाकुंभ में इस बार संस्थाओं और साधु-संतों के साथ तीर्थ पुरोहितों को जमीन से लेकर सुविधा पर्ची तक हासिल करने के लिए मेला प्राधिकरण का चक्कर काटने से मुक्ति मिलेगी। प्रयागराज प्राधिकरण इस बार ऑनलाइन आवेदन करने की सुविधा शुरू करने जा रहा है। एक सॉफ्टवेयर के जरिये जमीन और सुविधाओं के लिए आवेदन करने की तैयारी पूरी हो गई है।

धर्मनगरी में बढ़ती मुस्लिम आबादी

धर्मनगरी हरिद्वार की पवित्रता बनाए रखने के लिए यहां मांस व मदिरा का सेवन प्रतिबंधित है, लेकिन मुस्लिम तो मांसाहारी होते हैं, इसलिए हरिद्वार की पवित्रता पर भी एक तरह से संकट है। लिहाजा हरिद्वार में तेजी से बढ़ती मुस्लिम आबादी को नहीं रोका गया तो एक दिन वक्फ बोर्ड गंगा को भी वक्फ संपत्ति घोषित कर देगा।

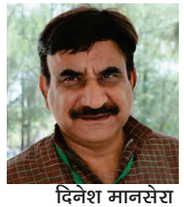

दिनेश मानसेरा
वरिष्ठ पत्रकार

भूमि उत्तराखंड में धर्मनगरी कहो या गंगानगरी हरिद्वार, करोड़ों हिंदुओं की धार्मिक आस्था के सबसे बड़े केंद्र के रूप में जानी और पहचानी जाती है। गंगा किनारे ऋषि, मुनि, देव, सन्यासियों, मठों और मंदिरों की इस पावन भूमि को योजनाबद्ध तरीके अब मुस्लिम आबादी ने घेर लिया है। हैरान करने वाली बात ये है कि सनातन धर्म की रक्षा के लिए यहां स्थापित अखाड़े तथा मठ भी हैं, पर सब बदलती डेमोग्राफी पर मौन साधे हुए हैं। हरिद्वार के ज्वालापुर में मस्जिद का निर्माण पिछले दो माह से चल रहा है, यहां कुंभ क्षेत्र में आधा दर्जन मजारें बना दी गई है जो धीरे-धीरे मस्जिद, नमाज स्थल का स्वरूप ले रही है। हरिद्वार कुंभ क्षेत्र को छोड़ कर मुस्लिम आबादी ने पूरे हरिद्वार जिले को अपने आगोश में ले लिया है। अंदर की खबर ये है कि कट्टरवादी मुस्लिम संगठन धर्मनगरी के स्वरूप को बिगाड़ने के लिए किसी बड़ी योजना पर काम कर रहे हैं। इसलिए इस धर्मनगरी में एक प्लान के तहत मुस्लिम आबादी को बसाया और बढ़ाया जा रहा है। सरकारी आंकड़ों के मुताबिक, हरिद्वार की मुस्लिम आबादी हर दस साल में 40 फीसदी की रफ्तार से बढ़ रही है। ये आंकड़े चौकाने तथा हैरान करने वाले है। इसी से पूरे जिले की डेमोग्राफी बदलने वाली है। हरिद्वार जिले की कुल आबादी में से 38 फीसदी के करीब मुस्लिम आबादी हो चुकी है। जो राज्य बनने से पूर्व दस फीसदी भी नहीं थी। यूपी से सटे इस जिले में ज्यादातर मुस्लिम परिवार उत्तर प्रदेश से उत्तराखंड आकर बस गए है। जिस तरह से सनातन संस्कृति की रक्षक गंगानगरी हरिद्वार में मुस्लिम आबादी फैल रही है वो इस धर्मनगरी में कहीं हिंदुओं को अल्पसंख्यक न बना दे, इसका खतरा फिलहाल सनातन की रक्षा करने वाले संत समाज को भी नहीं दिख रहा है। धर्मनगरी हरिद्वार की पवित्रता बनाए रखने के लिए यहां मांस व मदिरा का सेवन प्रतिबंधित है, लेकिन मुस्लिम तो मांसाहारी होते हैं, इसलिए हरिद्वार की पवित्रता पर भी एक तरह से संकट है। अगर हरिद्वार में तेजी से बढ़ती मुस्लिम आबादी को नहीं रोका गया तो एक दिन वक्फ बोर्ड गंगा को भी वक्फ संपत्ति घोषित कर देगा इसमें फिलहाल किसी को कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए। क्योंकि अभी तक वक्फ बोर्ड के पास जो असीमित अधिकार है उनका बेजा उपयोग होता आ रहा है, ये भी किसी से छिपा नहीं है।

हरिद्वार में मुस्लिम आबादी 38 प्रतिशत

हरिद्वार हिंदू सनातन धर्म का सबसे बड़ा धार्मिक केंद्र है। हिंदू धर्म के अधिकांश मठ, अधिकांश अखाड़े, ज्यादातर आध्यात्मिक केंद्र, बहुत से प्राचीन और पौराणिक महत्व के मंदिर भी हरिद्वार में ही हैं। यहां महाकुंभ और अर्द्धकुंभ मेला क्षेत्र भी है। यहीं से सनातनी व धार्मिक गतिविधियों का संचालन होता आया है। पितृ अस्थियों के विसर्जन से लेकर जनेऊ संस्कार पावन गंगा नदी के तट पर ही होते है। सनातन धर्म की आस्था और अटूट श्रद्धा का प्रतीक दुनिया का सबसे बड़ा धार्मिक मेला कुंभ हरिद्वार में भी होता है। हर साल सावन के महीने में चार करोड़ से ज्यादा कांवड़ श्रद्धालु पवित्र गंगा जल लेने आते हैं। हिंदू धर्म की आस्था और विश्वास की इस धर्मनगरी के आसपास मुस्लिम आबादी का तेजी से बढ़ना और अवैध रूप से गंगा किनारे वन विभाग और कैनाल की जमीन पर कब्जा करना धर्मनगरी के लिए कोई अच्छे संकेत नहीं कहे जा सकते। हरिद्वार जिले की जनगणना के आकंड़ों की बात करें तो यहां मुस्लिम आबादी 2001 में 4,78,000 (अनुमानित) से बढ़कर 2011 में 6,48,119 हो गई थी, यानी हरिद्वार जिले की कुल आबादी में 34.2 फीसदी का हिस्सा मुस्लिम आबादी का हो चुका था। हालांकि उत्तराखंड में मुस्लिम आबादी 11.19 प्रतिशत से बढ़ कर 16.9 प्रतिशत हो गई थी। 2020 के अनुमानित आकंड़ों के अनुसार, हरिद्वार में मुस्लिम आबादी 38 प्रतिशत के आसपास हो गई है। आने वाले समय में यह बढ़कर 50 प्रतिशत या इससे भी ज्यादा होगी, इससे इंकार नहीं किया जा सकता। हरिद्वार की आबादी इस साल के अंत तक करीब 22 लाख के करीब हो जाएगी। जिसमें मुस्लिम आबादी आठ लाख को पार कर देगी। इसी बढ़ती मुस्लिम आबादी की वजह से इस जिले में सामाजिक व राजनीतिक परिवर्तन होने लगा है। ऐसे में हर किसी के जहन में सवाल आएगा कि आखिरकार क्यों और कैसे ये आबादी रफ्तार पकड़े हुए है?

कांग्रेस से जुड़े नेता मुस्लिमों का संरक्षण करते आए हैं और कर भी रहे हैं, पूर्व मुख्यमंत्री हरीश रावत हरिद्वार से सांसद का चुनाव लड़ते हैं उनके दौर में अवैध बस्तियों को नियमित करने का खेल भी चला, शायद इसलिए हरिद्वार जिले में कई हिंदू बहुल गांव अब मुस्लिम बहुल हो गए हैं।

कट्टरपंथियों की साजिश

हरिद्वार जिले से पश्चिमी उत्तर प्रदेश के बिजनौर, मुजफ्फरनगर, मेरठ, सहारनपुर जिले सटे हुए हैं। इन सभी जिलों में मुस्लिम आबादी बड़ी संख्या में है। उत्तराखंड गठन के साथ ही हरिद्वार जिले में सिडकुल बनाकर उद्योगों का जाल बिछाया गया। जिसमें लेबर सप्लाई करने वाले ठेकेदारों ने यूपी के सीमावर्ती जिलों के मुस्लिमों की बड़े पैमाने पर भर्ती की। लेबर के रूप में मुसलमानों को हरिद्वार पहुंचाने के पीछे जमीयत-उलेमा-ए-हिंद और उसकी सहायक दारुल उलूम देवबंद, जैसे कट्टर मुस्लिम संगठनों का हाथ है। जो डेमोग्राफी चेंज करने के लिए योजनाबद्ध तरीके से काम कर रहे हैं। राज्य गठन के बाद विधानसभा चुनाव में कांग्रेस की सरकार बनी और नारायण दत्त तिवारी उत्तराखंड के मुख्यमंत्री बने, जिन्होंने उत्तराखंड के हरिद्वार और ऊधमसिंह नगर जिलों में सिडकुल की स्थापना कर यहां लगने वाले उद्योगों में सत्तर प्रतिशत रोजगार स्थानीय लोगों को दिए जाने की शर्त रखी थी। यह फैसला बाकायदा कैबिनेट और विधानसभा में लिया गया था, लेकिन उद्योगों को लेबर सप्लाई करने वाले ज्यादातर मुस्लिम ठेकेदारों ने योजना बद्ध तरीके से मुस्लिम लेबर को स्थानीय निवासी बना दिया और सरकारी आदेशों की खानापूर्ति कर दी। इसके अलावा गंगा और उसकी सहायक नदियों में खनन के काम में पश्चिम यूपी, बिहार, असम से आए मुस्लिम मजदूर यहां आकर नदी किनारे अवैध रूप से बसते चले गए जो अब यहां के वोटर बनकर नेताओं का भाग्य लिखने लगे हैं। स्थानीय कांग्रेसी नेताओं और विधायकों ने इस काम को बखूबी अंजाम दिया। हरिद्वार में हर साल करोड़ों लोग कांवड़ लेने आते हैं। कांवड़ और उसका सामान बनाने वाले पहले पड़ोसी राज्य यूपी के जिलों में रहते थे, लेकिन वो भी हरिद्वार शिफ्ट हो गए। हरिद्वार से लेकर देहरादून, ऋषिकेश में पिछले बीस सालों में मुस्लिम आबादी का विस्तार तेजी से हुआ है। इमारतें बनाने वाले राज, मजदूर बढ़ई, फिटर, पेंटर आदि का काम करने वाले कुंभ क्षेत्र के बाहरी हिस्से में बसते चले गए और सरकार के साथ स्थानीय प्रशासन और मठ व अखाड़ों से मुखिया सोते रहे।

मुस्लिम वोट बने निर्णायक

हरिद्वार के ज्वालापुर क्षेत्र के भाजपा विधायक रहे सुरेश राठौर ने अक्टूबर 2019 में सार्वजनिक रूप से बयान दिया था कि हरिद्वार में गंगा किनारे 67 किलोमीटर के दायरे में मुस्लिम आबादी बढ़ती जा रही है जिसकी जांच होनी चाहिए, कि कौन लोग यहां आकर बसे हैं? कौन लोग इन्हें बसा कर इनके राशन कार्ड और वोटर आईडी बनवा रहे हैं। पिछले साल विश्व हिंदू परिषद ने भी उत्तराखंड सरकार का ध्यान इस ओर दिलाया था, विहिप कहती है कि हरिद्वार को एक साजिश के तहत मुसलमानों द्वारा घेरा जा रहा है, विहिप ने सवाल किया था कि सरकारी जमीन पर आखिर इन अवैध बस्तियों को क्यों पनपने दिया जा रहा है?

- **हरिद्वार जिले की जनगणना के आकंड़ों की बात करें तो यहां मुस्लिम आबादी 2001 में 4,78,000 (अनुमानित) से बढ़ कर 2011 में 6,48,119 हो गई थी, यानी हरिद्वार जिले की कुल आबादी में 34.2 फीसदी का हिस्सा मुस्लिम आबादी का हो चुका था।**
- **रोहिंग्या तो कई बार भीख मांगते समय पकड़े भी जाते हैं, लेकिन उनके खिलाफ कोई कानूनी कार्रवाई नहीं होती। इसलिए वो भीख मांगने का इलाका बदलते रहते हैं। पुलिस भी इन ढोंगी और रोहिंग्या भिखारियों का सत्यापन कभी नहीं करती।**

2022 के विधानसभा चुनाव में भाजपा के कट्टर हिंदू प्रत्याशी स्वामी यतिश्वेरा नंद बदलती डेमोग्राफी की वजह से चुनाव हार गए थे। हरिद्वार जिले में भाजपा प्रत्याशी सुरेश राठौर ज्वालापुर से, संजय गुप्ता लक्सर से चुनाव हारे थे। जबकि खानपुर में निर्दलीय प्रत्याशी उमेश कुमार ने भाजपा प्रत्याशी को हरा दिया था। चुनाव विश्लेषक यहीं मानते है कि भाजपा यहां अंदरूनी कलह से नहीं बल्कि, बढ़ती मुस्लिम आबादी की वजह से हारी है। रुड़की के विधायक प्रदीप बत्रा अपना 2017 का चुनाव 12 हजार से ज्यादा वोट से जीते थे जबकि 2022 में वो मात्र 2200 वोटों से जीत हासिल कर पाए। क्योंकि हरिद्वार जिले में मुस्लिम आबादी और उनके वोट निर्णायक हो गए हैं। इन्हीं मुस्लिम आबादी में रोहिंग्या घुलमिल गए हैं। ये रोहिंग्या हरिद्वार में कोई काम नहीं करते, ये दिन भर बदन पर राख लपेट कर और भगवा वस्त्र पहन कर भीख मांगते हैं और रात को महंगी शराब और मांसाहार का सेवन करते हैं। हालांकि हरिद्वार में शराब और मांसाहार का सेवन प्रतिबंध है, लेकिन एक भी ऐसी मुस्लिम बस्ती नहीं है जहां मांसाहार का इस्तेमाल न होता हो। क्योंकि मुस्लिम लेबर बिना मांसाहार के रह नहीं सकती है। रोहिंग्या तो कई बार भीख मांगते समय पकड़े भी जाते हैं, लेकिन उनके खिलाफ कोई कानूनी कार्रवाई नहीं होती। इसलिए वो भीख मांगने का इलाका बदलते रहते हैं। पुलिस भी इन ढोंगी और रोहिंग्या भिखारियों का सत्यापन कभी नहीं करती। वो सिर्फ लेबर के बीच में सत्यापन की रस्म पूरी करती है।

साधु संत चुप क्यों?

हरिद्वार में मुस्लिम आबादी ज्यादातर शहर के बाहर गंगा किनारे, रेलवे की जमीन पर अवैध कब्जे कर बसी है। कांग्रेस के शासन काल में इसमें भारी वृद्धि होती रही, लेकिन भाजपा सरकार आने पर भी इसमें कोई कमी नहीं आई बल्कि इनके आने और बसने का सिलसिला यूं ही जारी रहा, यहां तक कहा गया कि इनमें म्यमार से भगाए गए रोहिंग्यों ने भी कब्जे जमा लिया। कांग्रेस से जुड़े नेता इनका संरक्षण करते आए हैं और कर भी रहे हैं। पूर्व मुख्यमंत्री हरीश रावत हरिद्वार से सांसद का चुनाव लड़ते रहे है उनके दौर में अवैध बस्तियों को नियमित करने का खेल भी चला। शायद इसलिए हरिद्वार जिले में कई हिंदू बहुल गांव अब मुस्लिम बहुल हो गए हैं। कांग्रेस ने तो पंजाब और हरियाणा में अपने शासन में ऐसे जिले बनाए जो आज मुस्लिम बहुल हो चुके हैं। वैसे ही हालात कुछ सालों बाद हिंदू तीर्थ नगरी हरिद्वार का भी हो जाएगा, इसमें किसी को कोई संदेह नहीं होना चाहिए। लेकिन ये हालात चिंताजनक ही कहे जा सकते है। हरिद्वार के कुंभ क्षेत्र से बाहर आते ही राष्ट्रीय मार्ग के दोनों तरफ मस्जिदों की ऊंची मीनारें दिखाई देने लगी है, जबकि कुछ साल पहले ऐसा नहीं था, कुंभ क्षेत्र में बाजार हाट लगाने वाले मुस्लिम समुदाय के लोग कई बार खुले में नमाज पढ़ते दिखाई दिए जिन पर प्रशासन को कार्रवाई करनी पड़ी थी। ये वही हरिद्वार है जहां सनातन धर्म के रक्षकों के अखाड़े और देश के सभी प्रमुख साधु संतों के बड़े-बड़े आश्रम तथा मठ है, इसके बावजूद हरिद्वार जिले में कैसे इस्लामिक हरी चादर बिछती जा रही है? ये बड़ा सवाल है। साधु संत कभी-कभी इस बारे में बयान देकर चिंता तो करते है, लेकिन धरातल पर उनके द्वारा कार्य किए जाने पर खामोशी ही दिखलाई देती है।

कुंभ में खपाने थे नकली नोट?

मदरसे में 1 लाख 30 हजार रुपये के नकली नोट और नोट छापने की मशीन बरामद हुई, सभी नोट 100-100 रुपये के है, प्रयागराज में जनवरी 2025 में महाकुंभ मेले का आयोजन होना है, इससे साफ है कि मौलाना मेले में नकली नोटों की बड़ी खेप खपाने की फिराक में होगा।

पारस अमरोही
वरिष्ठ पत्रकार, लखनऊ

कट्टरपंथी जमात भारत को कमजोर करने पर आमादा है। ये कट्टरपंथी देश की अर्थव्यवस्था को कमजोर करने के लिए भी काम कर रहे हैं। इसका प्रमाण उत्तर प्रदेश के प्रयागराज जिले के अतरसुइया में 28 अगस्त 2024 को तब मिला जब पुलिस ने जामिया हबीबिया मस्जिद-ए-आजम मदरसे में छापा मारा। मदरसे में 1 लाख 30 हजार रुपये के नकली नोट और नोट छापने की मशीन बरामद हुई। सभी नोट 100-100 रुपये के थे। इस मामले में पुलिस ने मदरसे के मौलवी तफसीरुल आफीरीन और ओडिशा के जाहिर खान सहित चार लोगों को गिरफ्तार किया है। प्रयागराज में अगले साल जनवरी 2025 में महाकुंभ मेले का आयोजन होना है। इससे जाहिर होता है कि मौलाना गैंग महाकुंभ मेले में नकली नोटों की बड़ी खेप खपाने की फिराक में होगा। नकली नोटों का कारखाना मिलने के बाद जांच एजेंसियों के टारगेट पर आए जामिया हबीबिया मस्जिद-ए-आजम मदरसे की छानबीन हुई तो पता चला कि इस मदरसे में बच्चों को राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ (आरएसएस) को एक आतंकवादी संगठन के तौर पर पढ़ाया जा रहा था। क्योंकि इसी मदरसे से जांच एजेंसियों को कट्टरपंथियों द्वारा लिखी गई किताबें मिली हैं। जिसकी जांच की जा रही है। इनमें से एक किताब महाराष्ट्र के रिटायर्ड आईपीएस अधिकारी एसएम मुशर्रफ द्वारा लिखी गई है। मुशर्रफ द्वारा लिखी गई किताब में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ को आतंकी संगठन बताया गया है। इसी तरह की सामाजिक नफरत फैलाने वाली और भी कई पुस्तकें बरामद हुई हैं। छापे के दौरान किताबों के साथ कुछ भड़काऊ तस्वीरें भी मिली हैं। ये तमाम चरमपंथी साहित्य, गिरफ्तार मदरसे के मौलवी तफसीरुल आफीरीन के कमरे से मिले हैं। इन्हीं किताबों से मदरसे में पढ़ने वाले बच्चों को नफरत की तालीम दी जा रही थी। यानी मदरसे में बच्चों को हेट स्टडी कराई जाती थी। उनके दिमाग में हिंदुओं के खिलाफ जहर भरा जा रहा था। जांच एजेंसियों को पता चला है कि मौलवी तफसीरुल बच्चों का ब्रेनवॉश भी करता था। वह राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ को देश का सबसे बड़ा आतंकी संगठन बताता था। बरामद किताबों में एक 'आरएसएस देश का सबसे बड़ा आतंकवादी संगठन' शीर्षक वाली भी है, जो महाराष्ट्र कैडर के पूर्व आईएएस अधिकारी एसएम मुशर्रफ द्वारा लिखी गई है।

गिरफ्तार युवकों में मदरसे का तफसीरुल आफीरीन, मोहम्मद अफजल, मोहम्मद शाहिद और जाहिर खान है, जाहिर खान मूल रूप से ओडिशा का रहने वाला है, वह मदरसे में आलिम है, पढ़ाई पूरी करने के बाद वह इसी मदरसे में पढ़ाने लगा था।

बिना रजिस्ट्रेशन चल रहा था मदरसा

मौलवी के कमरे से कई स्पीड पोस्ट की रसीद मिली हैं। रसीदों के आधार पर पुलिस वो एड्रेस वेरीफाई कर रही है जहां स्पीड पोस्ट भेजी गई हैं, ताकि यह पता लगाया जा सके कि क्या नकली नोट कहीं और भी भेजे जाते थे। यानी इन रसीदों के साथ क्या, कहां और क्यों भेजा गया इसकी भी जांच की जा रही है। मदरसे से बरामद अधिकांश किताबें उर्दू में हैं जिनके हिंदी अनुवाद किए जा रहे हैं। इन्हीं में से एक किताब में पाकिस्तानी अखबार द डॉन की तारीफ की गई है। 26/11 के मुंबई आतंकी हमले को पाक आतंकी अजमल कसाब के बजाय हिंदूवादी संगठनों पर थोपने का प्रयास बरामद एक किताब में किया गया है। मदरसे में बच्चों को पढ़ाया जाता था कि मालेगांव, मोडासा और समझौता एक्सप्रेस में ब्लास्ट आरएसएस से जुड़े लोगों ने किए थे। बच्चों को पढ़ाते हुए मौलवी तफसीरुल आफीरीन आरएसएस के साथ अभिनव भारत को कट्टरवादी ब्राह्मण संगठन और दंगे कराने वाला समूह बताता था। हालांकि पुलिस और जांच एजेंसियों ने अभी तक इन आरोपों की आधिकारिक पुष्टि नहीं की है। अलबत्ता मीडिया से बात करते हुए पुलिस ने सिर्फ इतना ही कहा कि जांच पूरी होने के बाद आधिकारिक जानकारी दी जाएगी। इस मदरसे में करीब 70 छात्र दीनी तालीम लेते हैं। ये छात्र उत्तर प्रदेश के अलावा ओडिशा, बिहार, मध्य प्रदेश और पश्चिम बंगाल आदि राज्यों के हैं। इनके यहां रहने के लिए मदरसे में हॉस्टल का इंतजाम है। जांच में चौकाने वाली बात ये भी सामने आई कि 84 साल पुराना यह मदरसा बगैर किसी मान्यता और सोसाइटी रजिस्ट्रेशन के चल रहा था। हैरानी की बात ये है कि अतरसुइया थाने से महज एक किलोमीटर की दूरी पर यह मदरसा है। पिछले वर्ष योगी सरकार ने जब मदरसों का सत्यापन और सर्वे कराया था तब ये मदरसा पकड़ में क्यों नहीं आया? वैसे भी यह मदरसा प्रयागराज शहर के पॉश इलाके में है। ऐसे इलाके में देश विरोधी गतिविधियां चल रही थी और एलआईयू तथा पुलिस के बीट सिपाही को कानों कान खबर तक नहीं थी। ऐसे में प्रयागराज की एलआईयू और पुलिस की भूमिका भी संदिग्ध हो जाती है।

मदरसे का मौलाना मास्टर माइंड

हालांकि प्रयागराज पुलिस का दावा है कि उसे पिछले काफी समय से अतरसुइया स्थित जामिया हबीबिया मस्जिद-ए-आजम मदरसे में संदिग्ध गतिविधियों की सूचना मिल रही थी। मदरसे में कई बाहरी लोगों के आने-जाने की जानकारी भी मिल रही थी। लिहाजा पुलिस ने इस मदरसे की निगरानी शुरू कर दी। जब पुलिस को पक्का यकीन हो गया कि मदरसे में सब सही नहीं चल रहा तब 28 अगस्त को यहां पूरे प्लान और सुरक्षा बंदोबस्त के साथ दबिश दी गई। पुलिस जब जामिया हबीबिया मस्जिद-ए-आजम मदरसे के भीतर घुसी तब वहां एक प्रिंटिंग मशीन पर 3 लोग कुछ छापते मिले। करीब जाकर देखा तो पता चला कि तीनों 100-100 रुपये के नकली नोटों की छपाई कर रहे थे। पुलिस ने तीनों से पूछताछ की तो पता चला कि यह काम मदरसे के 25 वर्षीय प्रिंसिपल मोहम्मद तफसीरुल की सरपरस्ती में चल रहा है। पुलिस ने नकली नोट छापने वाले तीनों युवकों के साथ मौलवी (प्रिंसिपल) को गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तार युवकों में 18 वर्षीय मोहम्मद अफजल, 18 वर्षीय मोहम्मद शाहिद और 23 वर्षीय जाहिर खान है। जाहिर खान उर्फ अब्दुल जाहिर मूल रूप से ओडिशा का रहने वाला है। वह मदरसे में आलिम है। पढ़ाई पूरी करने के बाद जाहिर खान इसी मदरसे में पढ़ाने लगा था। जबकि हाईस्कूल पास मोहम्मद अफजल के वालिद मोईद अहमद कपड़े की दुकान पर काम करते हैं। आठ जमात पास मोहम्मद शाहिद मदरसे में मौलवी बनने आया था, लेकिन नकली नोट छापने वाले रैकेट का हिस्सा बन गया। हाईस्कूल पास मौलवी तफसीरुल के वालिद मदरसे में ही पढ़ाते थे।

प्रिंटर और मशीनें ओडिशा से मंगाई

पूछताछ में चारों आरोपियों ने बताया कि वो पिछले तीन महीनों से नकली नोटों के इस काले कारोबार को संचालित कर रहे थे। नकली नोट छापने के लिए प्रिंटर और अन्य मशीनें ओडिशा के भद्रक निवासी जाहिर खान उर्फ अब्दुल जाहिर ने अपने भाई से मंगवाई थी। जाहिर का भाई पहले प्रयागराज में आधार कार्ड बनवाने का काम कर चुका है। नकली नोट छापने का धंधा करने वालों का कहना था कि 100 रुपये के नोट की लोग ज्यादा जांच पड़ताल नहीं करते, यही सोच कर 100 रुपये के नोट छापना शुरू किया था। अधिकतर नोटों को प्रयागराज के अलग-अलग हिस्सों में दुकानदारों को धोखे से दिया जाता था। आरोपियों ने बाजार में कितनी नकली करेंसी चलाई इसकी भी जांच पुलिस कर रही है। अनुमानित राशि लगभग 5 लाख रुपये हो सकती है। नकली नोट को खपाने के लिए यह गैंग युवाओं को अपने साथ जोड़ रहा था। उनको 100 रुपये असली देने पर 300 रुपये नकली दिए जाते थे। अब पुलिस टीमें इस गिरोह से जुड़े अन्य लोगों की तलाश कर रही है। फिलहाल प्रयागराज पुलिस ने इन चारों के खिलाफ भारतीय न्याय संहिता की धारा 178, 179, 180, 181 और 182 (1) के तहत मामला दर्ज कर लिया है। इस मामले की जांच के लिए इंटेलिजेंस ब्यूरो के साथ एलआईयू की टीम भी जुट गई है। यानी मदरसे में नकली नोट छापने का कारखाना मिलने के बाद से जांच एजेंसियां एक्टिव हैं।

- **मदरसे की छुट्टी के बाद मौलवी खुद भी नकली नोटों की छपाई के काम में शामिल हो जाता था, मदरसे से पकड़े गए आरोपियों से पुलिस की पूछताछ में इस बात का पता चला कि 100 रुपये का एक नकली नोट छापने में महज दो रुपये का खर्च आता था।**
- **जामिया हबीबिया मस्जिद-ए-आजम मदरसे की छानबीन में पता चला कि इस मदरसे में बच्चों को राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ को एक आतंकवादी संगठन के तौर पर पढ़ाया जा रहा था, क्योंकि इसी मदरसे से जांच एजेंसियों को कट्टरपंथियों की किताबें मिली हैं।**

दो रुपये में 100 का नोट तैयार

प्रयागराज के मदरसे के भीतर चल रहे नकली नोटों के कारखाने की जड़ें काफी गहरी हो सकती हैं। मदरसे के जिस कमरे में नकली नोटों की छपाई होती थी, मौलवी मोहम्मद तफसीरूल उसका ताला बाहर से लगाकर रखता था। बाहर बच्चों की पढ़ाई चलती थी और अंदर कमरे में बाकी लड़के नकली नोट छापने का काम करते थे। बच्चों की छुट्टी के बाद मौलवी खुद भी नकली नोटों की छपाई के काम में शामिल हो जाता था। मदरसे से पकड़े गए आरोपियों से पुलिस की पूछताछ में इस बात का भी खुलासा हुआ कि 100 रुपये का एक नकली नोट छापने में महज दो रुपये का खर्च आता था। पुलिस ने जिस वक्त अफजल और शाहिद को गिरफ्तार किया, उन दोनों के पास नकली नोटों की कई गड्डियां थी। इन गड्डियों में सबसे ज्यादा चौंकाने वाली बात ये थी कि करीब 1300 नोटों पर एक ही सीरियल नंबर था। 100 रुपये के इन नकली नोटों को आसपास के मार्केट में ही खपाया जा रहा था। आमतौर पर कोई भी शख्स 500 रुपये के नोट को ही चेक करके लेता है। 50 या 100 के नोट को बिना चेक किए ही रख लिया जाता है। मौलवी ने आम लोगों की इसी कमजोरी को पकड़ा और 100-100 रुपये के नोट छापने शुरू कर दिए। प्रयागराज में अगले साल यानी जनवरी 2025 से महाकुंभ मेला शुरू होने वाला है। महाकुंभ की तैयारियां भी तेजी से चल रही हैं। मेले को लेकर सरकार किसी भी इंतजाम में कोई कसर नहीं छोड़ना चाहती। ऐसे में सवाल उठ रहा है कि क्या मौलाना गैंग महाकुंभ मेले में नकली नोटों की बड़ी खेप खपाने की तैयारी में था। क्योंकि मेले में 100 रुपये के नकली नोट आसानी से खपाए जा सकते थे। शायद इसलिए ही मदरसे का मौलाना और उसके गैंग के सदस्य नकली नोटों को बाजार में खपाने के लिए नाबालिगों को अपने साथ जोड़ रहे थे।

हिंदुस्तान में भी हिंदू आजाद नहीं?

मुगल शासक भारत के मंदिरों पर आक्रमण करने, प्राचीन और पौराणिक महत्व के मंदिरों में लूटपाट करने, हिंदू महिलाओं पर अत्याचार करने और कुल मिलाकर हिंदू संस्कृति को समाप्त करने की जो कुचेष्टापूर्ण गतिविधियां करते रहे, वही सब कुछ आज मुसलमान कर रहे हैं।

कृष्ण कुमार चौहान

भारत में क्या मुगल मानसिकता तेजी से बढ़ रही है? यह सवाल प्रासंगिक इसलिए है कि हिंदू बहुल भारत में हिंदुओं द्वारा अपने त्योहार, शोभा यात्रा अथवा धार्मिक उत्सव आदि स्वतंत्रता एवं शांति के साथ मनाए जाने को मुस्लिम संप्रदाय सहन नहीं कर पा रहा है। मुगल शासक भारत के मंदिरों पर आक्रमण करने, प्राचीन और पौराणिक महत्व के मंदिरों में लूटपाट करने, हिंदू महिलाओं पर अत्याचार करने और कुल मिलाकर हिंदू संस्कृति को समाप्त करने की जो कुचेष्टापूर्ण गतिविधियां करते रहे, वही सब कुछ आज मुसलमान कर रहे हैं। कट्टरपंथी मौलाना मुस्लिम जमात को इकट्ठा कर उन्हें हिंदुओं के खिलाफ खुलेआम भड़काते हैं और मौलानाओं की भड़काऊ वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल की जातीं हैं, ताकि समाज में जहर घोला जा सके। यही कट्टर मौलाना हिंदुओं के त्योहारों पर नाबालिगों को पथराव के लिए तैयार करते हैं। गुजरात के सूरत में गणेश पंडाल में बिना किसी विवाद के मदरसे के छह छात्र गणेश पंडाल पर 8 सितंबर को पथराव करते हैं। हालांकि पंडाल में मौजूद पुलिस ने पब्लिक की मदद से सभी नाबालिगों को पकड़ लिया, लेकिन उनके खिलाफ न तो कोई सख्त कार्रवाई हुई और न ही उन्हें न्यायिक हिरासत में भेजा गया। किशोर न्यायालय ने अगले दिन ही उन्हें रिहा भी कर दिया। नाबालिगों को आगे करने के पीछे कट्टरपंथियों की सोची-समझी साजिश है। क्योंकि पहला तो यही तर्क है, कि बच्चे हैं गलती हो गई, माफी-तलाफी से मामला रफा-दफा हो जाता है। दूसरे, यदि कोई गंभीर अपराध किया है, तो उसे जेल न भेज कर बाल-सुधार गृह में रखा जाता है, किशोर न्यायालय में उस पर केस चलता है और यहां से वे बहुधा बरी कर दिए जाते हैं। यदि चार-पांच माह की सजा होती भी है, तो नाबालिगों को बाल सुधार गृह में ही रखा जाता है और सरकार इन मेहमानों पर मेहरबान हो कर खाना, कपड़ा अलग से देती है। गुजरात के सूरत में गणेश पंडाल पर पथराव की यह कोई पहली घटना नहीं है।

14 सितंबर की शाम राजस्थान के भीलवाड़ा जिले के जहाजपुर कस्बे में एकादशी जलझूलनी शोभायात्रा पर मुसलमानों द्वारा जामा मस्जिद की छत से पथराव किया जाता है। हालांकि यहां यह शोभायात्रा कोई पहली बार नहीं निकाली जा रही थी। सदियों से हिंदू समाज जलझूलनी एकादशी के अवसर पर यहां शोभायात्रा निकालता है। शोभायात्रा के जामा मस्जिद के सामने पहुंचने पर मस्जिद के अंदर से 20-25 मिनट तक पथराव किया गया, जिसमें पुलिसकर्मियों सहित कई लोग घायल हुए। इससे पहले पश्चिम बंगाल के मुर्शिदाबाद और पूर्वी मेदिनीपुर में 18 अप्रैल 2024 को मुसलमानों ने रामनवमी की शोभायात्रा पर पथराव किया था। मुर्शिदाबाद में तो बम और गोलों के धमाके भी सुनाई दिए थे। इस कांड में कई लोगों को चोटें आई थीं। 13 जुलाई 2023 को हरियाणा के नूंह में ब्रंज मंडल यात्रा पर मुस्लिम संप्रदाय के लोगों ने छतों से पथराव किया था। उपद्रवियों ने दर्जनों गाड़ियों और एक थाने को आग के हवाले कर दिया था। इस घटना में एक होमगार्ड की मौत भी हुई थी। ऐसे ही गुजरात के आणंद जिले और हिम्मतनगर में 10 अप्रैल, 2022 को रामनवमी की शोभायात्रा के समय पथराव किया गया और शोभायात्रा में चल रहे वाहनों को आग के हवाले कर दिया गया। इसमें आधा दर्जन पुलिसकर्मी घायल हुए थे। पथराव करने वालों में सिकंदर पठान, समीर पठान, खालिद पठान, वाहिद पठान, उमर पठान, मुबीन शेख आदि कई नाम आए थे, जिन्हें पुलिस ने गिरफ्तार किया था। 2022 में ही दिल्ली की जहांगीरपुरी में हनुमान जयंती के जलूस पर मुस्लिम कट्टपंथियों ने पथराव कराया था, जिसके बाद तुष्टीकरण की राजनीति करने वाले दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की सरकार ने धार्मिक शोभायात्रा और जुलूस निकालने पर ही रोक लगा दी थी।

नाबालिगों को आगे करने के पीछे कट्टरपंथियों की सोची-समझी साजिश है, क्योंकि पहला तो बच्चे हैं गलती हो गई, माफी-तलाफी से मामला रफा-दफा हो जाता है, दूसरे यदि कोई गंभीर अपराध किया है, तो उसे जेल न भेज कर बाल-सुधार गृह में रखा जाता है।

मध्य प्रदेश के खरगोन में भी 10 अप्रैल 2022 को ही रामनवमी की शोभायात्रा पर मुसलमानों की भीड़ ने पथराव किया था। उपद्रवियों ने कई स्थानों पर आगजनी भी की थी। इसके बाद शहर के दूसरे हिस्सों में भी हिंसा शुरू हो गई थी। प्रशासन को पड़ोसी जिलों से अतिरिक्त पुलिस बल मंगाया तब हालात काबू में आ पाए। इसी प्रकार 10 अप्रैल 2022 की रात मुंबई के मानखुर्द में चरपंथियों ने रामनवमी शोभायात्रा पर पथराव किया और 20 वाहनों में तोडफ़ोड़ की थी। उसी दिन 10 अप्रैल 2022 को ही झारखंड के लोहरदगा में रामनवमी के मेले में लगी दुकानों और वाहनों में मुसलमानों ने आग लगा दी तथा दिल्ली जा रही राजधानी एक्सप्रेस ट्रेन पर पथराव किया था। इस हिंसा में 3 लोग बुरी तरह से घायल हो गए थे और प्रशासन को जिले में धारा 144 लगा कर इंटरनेट बंद करना पड़ा था। इसी दिन झारखंड के ही बोकारो में रामनवमी शोभायात्रा पर बेलगाम मुस्लिम भीड़ ने पथराव किया। मुस्लिम तुष्टिकरण की राजनीति करने वाली पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने तो हद ही कर दी थी। उन्होंने तो हिंदुओं को मुस्लिम इलाकों से रामनवमी का जुलूस निकालने पर अंजाम भुगतने की धमकी तक दे डाली थी। इससे प्रोत्साहित होकर हावड़ा में विश्व हिंदू परिषद द्वारा निकाली जा रही रामनवमी शोभायात्रा पर मुसलमानों ने हमला कर दिया और फाजिर बाजार की दुकानों में आग लगा दी। इस घटना के बाद पुलिस ने बाकुड़ा में रामनवमी शोभायात्रा के आयोजकों पर लाठीचार्ज किया और मस्जिद के सामने से जुलूस निकालने और हंगामे का आरोप लगा कर 17 लोगों को गिरफ्तार किया था।

मात्र रामनवमी आदि पर्व त्योहारों की शोभायात्राओं पर ही मुसलमान देश के हिंदुओं पर आक्रामक नहीं होते, उन्हें जैसे ही हिंदुओं और उनकी संस्कृति को रौंदने का मौका या बहाना मिलता है, वे ऐसा करते हैं। हिंदुओं के पर्वों पर अब पत्थरबाजी आम क्यों हो गई है? क्योंकि मोदी और योगी राज में शांतिप्रिय मुसलमान डरा हुआ है? वो गणेश उत्सव, डांडिया उत्सव, दुर्गा विसर्जन से लेकर सरस्वती पूजा, होली, दिवाली और रामनवमी का इंतजार पत्थरबाजी के लिए करता हैं। मुसलमानों में क्या ये अपने आप में एक अलग प्रकार का भय है? ये

- **मुस्लिम अल्पसंख्यक के नाम पर कट्टरपंथी जो मार-काट और हिंसा फैलाते हैं वो महज घटनाएं नहीं हैं, बल्कि ये सिग्नेचर है, ये स्टेटमेंट है, ताकत के प्रदर्शन का, कि देखो हम अल्पसंख्यक होकर भी क्या कर सकते हैं और तुम हमारा क्या बिगाड़ लोगे?**
- **कट्टर मौलाना हिंदुओं के त्योहारों पर नाबालिगों को पथराव के लिए तैयार करते हैं, गुजरात के सूरत में गणेश पंडाल में बिना किसी विवाद के मदरसे के छह छात्र गणेश पंडाल पर 8 सितंबर को पथराव करते हैं।**

भय इस स्तर का है कि ये भयाक्रांत कट्टरपंथी जमात हिंदुओं के हर पर्व पर पत्थरबाजी और दंगे भड़का कर अपने डर का इजहार करते हैं। अल्पसंख्यक के नाम पर कट्टरपंथी जो मार-काट और हिंसा फैलाते हैं वो महज घटनाएं नहीं हैं, बल्कि ये सिग्नेचर है, ये स्टेटमेंट है, ताकत के प्रदर्शन का, कि देखो हम अल्पसंख्यक होकर भी क्या कर सकते हैं, और तुम हमारा क्या बिगाड़ लोगे? सवाल ये कि आखिर इन्हें ये कॉफिडेंस मिलता कहां से है? ये कॉफिडेंस इन्हें रामचंद्र गुहा टाइप के कहानीकार देते हैं, ये कॉफिडेंस इन्हें राजदीप, बरखा, रवीश सरीखे खबरनवीस और फेसबुक पर टहलते वो युवा देते हैं जिन्हें एक ही तरह की खबरें सुनाने और पढ़ाने का शौक है। पूरा माहौल बनाया जाता है कि मोदी के आने के बाद ही सब कुछ हो रहा है, जबकि पहले ऐसा कुछ भी नहीं था।

ऐसा भी नहीं हैं कि सारी की सारी घटनाएं आज ही शुरू हुई हैं। आपने अगर रवीश का प्राइम टाइम शो ही देखा है, तो इसका मतलब यह नहीं बाकी कोई और पत्रकारिता कर ही नहीं रहा। यदि कोई वामपंथी पत्रकार कह दे कि घटनाएं कांग्रेस-सपा-तृणमूल के कार्यकाल में हुई, लेकिन माहौल तो मोदी के कारण बना है, तो वो सच नहीं हो जाता। पहलू खान को मारने की हिम्मत अगर मोदी सरकार देती है तो फिर फैयाज और कुरैशी नामक के गौतस्करों द्वारा यवतमाल से नागपुर दाने के रास्ते में कांस्टेबल प्रकाश मेशराम पर ट्रक चढ़ा कर मार देने वाले शांतिदूत कहे जाएंगे। इन कट्टरपंथियों का हिम्मत कौन देता है? और ऐसी एक घटना नहीं है, कि गौतस्करों ने गाड़ी पुलिस पर चढ़ा कर भागने की कोशिश न की हो बल्कि तमाम घटनाओं से गूगल अटा पड़ा है। आपको वो दौर याद होना चाहिए जब 11 बरस पहले हिंदुओं के हर पर्व पर बड़े धमाके सुनाई देते? कौन करवाता था, किस मजहब के लोगों को डर का माहौल पैदा करने को मजबूर करता था? तब एक तर्क यह दिया जाता था कि रामनवमी पर जुलूस निकालने की जरूरत क्या है, पहले तो नहीं होता था। ये कितनी वाहियात बात है! जुलूस निकालने में क्या समस्या हैं किसे और क्यों परेशानी है? अगर हिंदु रामनवमी की शोभायात्रा निकालेंगे तो कट्टरपंथी पत्थर बरसाएगा? संविधान में ऐसा कहां लिखा है। मुसलमानों के जुलूस सही हैं तो फिर हिंदुओं द्वारा निकाले जाने वाले जुलूसों पर सवाल क्यों? रामनवमी पर जलूस तो पहले भी निकाले जाते थे, जिसे तुष्टीकरण की राजनीति करने वाली पार्टियों की सरकारों ने बंद कराया था। हिंदू जुलूस ही निकालते हैं, दंगा नहीं करते। फिर हिंदुओं के धार्मिक जुलूस पर पत्थरबाजी करने का लाइसेंस मुसलमानों को कैसे मिल जाता है? मुहर्रम के कितने जुलूसों पर पथराव होता है कोई बता सकता है? ऐसे में यदि कोई कहे कि कट्टरपंथियों की सामूहिक सोच में ही समस्या है क्योंकि कट्टरपंथियों का एक धड़ा पत्थरबाजों की को डरा हुआ बताता है तो दूसरा धड़ा भाई चारे की बात करता है। ऐसे में सवाल तो उठेगा ही कि डरने वाले कट्टरपंथी हिंदुओं के पर्व पर पथराव, आगजनी, दंगे और हिंसा पर कैसे उतर आते हैं? क्या हिंदुओं की धार्मिक शोभायात्रा को मुस्लिम इलाके से निकलने की आजादी नहीं है? क्या मस्जिद के सामने से हिंदुओं का धार्मिक जुलूस नहीं निकल सकता? क्या सरकारी सड़कों पर चलने का सबको हक नहीं है? जय सियाराम अथवा जय श्रीराम के नारे से किसी को परेशानी कैसे हो सकती है, जबकि मुसलमानों की अजान को हिंदू दिन पांच बार सुनता और सहन करता है, लेकिन कभी कोई आपत्ति नहीं करता जबकि मुसलमानों को जय श्रीराम के नारे भर से आपत्ति क्यों है?

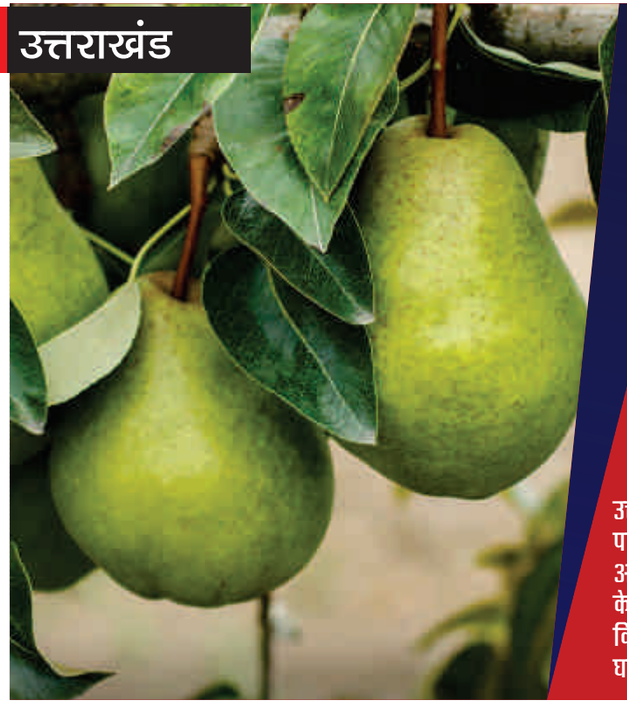

एक लाख हैक्टेयर फल क्षेत्र घटा

उत्तराखंड में 'एप्पल मिशन', 'कीवी मिशन' व 'उन्नति एप्पल परियोजना' कितनी परवान चढ़ेगी ये तो पता नहीं, लेकिन आर्थिक सर्वेक्षण की रिपोर्ट ने जो खुलासा किया है वो उत्तराखंड के निवासियों की आंख खोलने वाला है, रिपोर्ट से खुलासा हुआ कि राज्य में तो दो वर्षों में फल उत्पादन रकबा एक लाख हैक्टेयर घट गया है।

मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने उत्तराखंड में फल उत्पादन बढ़ाने के लिए 'एप्पल मिशन', 'कीवी मिशन' तथा 'उन्नति एप्पल परियोजना' कोका-कोला इंडिया और इंडो डच हॉर्टिकल्चर टेक्नोलॉजीज प्राइवेट लिमिटेड के सहयोग से शुरू की है। मुख्यमंत्री का मानना है कि इन योजनाओं में सामूहिक प्रयासों से कृषि एवं फल उत्पादन को बढ़ावा मिलेगा, लेकिन इस प्रोजेक्ट्स को उत्तराखंड सरकार के ही उद्यान विभाग ने पलीता लगा दिया है। 'एप्पल मिशन', 'कीवी मिशन' व 'उन्नति एप्पल परियोजना' कितनी परवान चढ़ेगी ये तो पता नहीं, लेकिन आर्थिक सर्वेक्षण की रिपोर्ट ने जो खुलासा किया है वो उत्तराखंड के निवासियों की आंख खोलने वाला है। आर्थिक सर्वेक्षण की रिपोर्ट से खुलासा हुआ कि उत्तराखंड में तो दो वर्षों में फल उत्पादन रकबा एक लाख हैक्टेयर घट गया है। अब उत्तराखंड का उद्यान विभाग बहाना बना रहा है कि फल उत्पादन क्षेत्रफल घटने की प्रमुख वजह जलवायु परिवर्तन है। बहाना कुछ भी बनाया जाए, लेकिन इससे फल उत्पादन परियोजना की सफलता पर सवालिया निशान तो लग ही जाता है। वैसे भी उद्यान विभाग वर्षों से फल उत्पादन के फर्जी आंकड़े दर्शाकर सरकार की आंख में धूल झोंकने का काम करता आ रहा है। इसलिए उत्तराखंड उद्यान विभाग भ्रष्टाचार का अड्डा माना जाता है। अक्टूबर 2023 में नैनीताल हाईकोर्ट ने भी उद्यान विभाग में करोड़ों रुपये के घोटाले की जांच सीबीआई से कराने के आदेश दिए थे। साथ ही राज्य सरकार को समस्त मूल रिकॉर्ड के साथ ही जांच के दौरान मांगे जाने वाले दस्तावेज सीबीआई को मुहैया कराने के निर्देश भी दिए थे। जांच मिलने के बाद सीबीआई ने अपना काम शुरू कर दिया है।

डा. राजेंद्र कुकसाल
उद्यान विशेषज्ञ

आर्थिक सर्वेक्षण रिपोर्ट

आर्थिक सर्वेक्षण 2023-24 की रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2020-21 में फल उत्पादन क्षेत्रफल 1,81,000 हैक्टेयर था तथा फलों का उत्पादन 6,48,000 मैट्रिक टन होता था। वर्ष 2022-23 में यह फल उत्पादन क्षेत्रफल घटकर 81,000 हैक्टेयर रह गया तथा फलों

- **उद्यान विभाग वर्षों से फल उत्पादन के फर्जी आंकड़े दर्शाकर सरकार की आंख में धूल झोंक रहा है, इसलिए उद्यान विभाग भ्रष्टाचार का अड्डा माना जाता है, अक्टूबर 2023 में नैनीताल हाईकोर्ट ने उद्यान विभाग में करोड़ों रुपये के घोटाले की जांच सीबीआई से कराने के आदेश दिए थे।**
- **उद्यान विभाग के फल उत्पादन के आंकड़ों का सच सामने आने लगा तो अपनी नाकामी का ठिकरा जलवायु परिवर्तन पर फोड़ दिया, उद्यान विशेषज्ञ मानते हैं कि जलवायु परिवर्तन से उत्पादन प्रभावित हो सकता है किंतु एक लाख हैक्टेयर बगीचे गायब नहीं हो सकते।**

का उत्पादन गिरकर 3,69,000 मैट्रिक टन पर आ गया। इस प्रकार वर्ष 2021-22 की तुलना में वर्ष 2022-23 में फल उत्पादन क्षेत्रफल 50 लाख नाली यानी एक लाख हैक्टेयर कम हो गया। फल उत्पादन में भी करीब तीन लाख मैट्रिक टन की गिरावट दर्ज हुई। फल उत्पादन के घटते रकबे और गिरते फल उत्पादन के पीछे अपनी नाकामी छिपाने के लिए उद्यान विभाग ने नया बहाना तलाश लिया। उद्यान विभाग के विद्वान वैज्ञानिक दावा करने लगे कि कुछ वर्षों में बड़ा जलवायु परिवर्तन हुआ है जिससे उत्तराखंड में फल उत्पादन और फल उत्पादन रकबा कम हुआ है। इसका सोशल मीडिया और मीडिया में प्रचार भी कराया जा रहा है। ऐसे में सवाल तो उठेगा ही कि उद्यान विभाग ने जलवायु के अनुसार फलों की प्रजातियों को विकसित क्यों नहीं किया? जलवायु के अनुरूप फल उत्पादकों को फल उत्पादन के लिए प्रेरित क्यों नहीं किया? उद्यान विभाग का जलवायु परिवर्तन का बहाना शायद सरकार की समझ में आ जाए, लेकिन यह बहाना उद्यान विशेषज्ञों के गले नहीं उतर रहा। क्योंकि कड़ुवा सच यह है कि पलायन आयोग की रिपोर्ट एवं समाचार पत्रों व सोशल मीडिया में जब उद्यान विभाग की योजनाओं व फल उत्पादन के आंकड़ों की वास्तविकता सामने आने लगी तब अपनी नाकामी का ठिकरा जलवायु परिवर्तन पर फोड़ दिया। उद्यान विशेषज्ञ मानते हैं कि जलवायु परिवर्तन से उत्पादन प्रभावित हो सकता है किंतु एक लाख हैक्टेयर बगीचे गायब हो जाएं यह चमत्कार देवभूमि उत्तराखंड में सिर्फ उद्यान विभाग ही कर सकता है।

आकड़ों में अव्वल उद्यान विभाग

उद्यान विभाग फर्जी फल उत्पादन के आंकड़ों के सहारे राष्ट्रीय पुरस्कार हासिल करता रहा है, लेकिन आर्थिक सर्वेक्षण रिपोर्ट और पलायन आयोग की रिपोर्ट ने उद्यान विभाग के फर्जी आकंड़ों की परते खोल कर रख दी। क्योंकि उद्यान विभाग करोड़ों रुपये की योजनाओं, जिसमें हार्टिकल्चर टैक्नोलॉजी मिशन, जिला योजना, राज्य सेक्टर की योजना, कृषि विकास योजना, परंपरागत कृषि विकास योजना, जनजातीय विकास योजना निधि, नाबार्ड आदि पर खर्च करता रहा है। लेकिन ग्राम्य विकास एवं पलायन आयोग उत्तराखंड की रिपोर्ट में उद्यान विभाग के फल उत्पादन के फर्जी आकंड़ों के दस्तावेज पेश कर दिए हैं। पलायन आयोग और आर्थिक सर्वेक्षण की रिपोर्ट में कहा गया है कि पौड़ी, टिहरी व अल्मोड़ा में उद्यान विभाग द्वारा फल उत्पादन के किए गए दावों के मुकाबले वास्तविक फल उत्पादन काफी कम पाया गया। पलायन आयोग की पौड़ी जनपद की रिपोर्ट में कहा गया है कि उद्यान विभाग ने इस जिले में 2015-16 का फल उत्पादन रकबा 20,301 हैक्टेयर दर्शाया है लेकिन 2018-19 के सर्वे में पौड़ी में मात्र 4,042 हैक्टेयर क्षेत्रफल में फल उत्पादन हो रहा

उद्यान विभाग कमीशन के चक्कर में खराब फल पौध खरीदता है, फिर कृषकों के खेत तक पहुंचाने में गलत तरीका होने से 40 प्रतिशत पौधे एक साल में सूख जाते हैं, पर उद्यान विभाग सूखने वाले 40 प्रतिशत पौधों को भी जिंदा मानकर पौध रोपण का क्षेत्रफल कागजों में बढ़ा देता है।

था, यानी 16,259 हैक्टेयर कम। तो क्या उद्यान विभाग ने फर्जी रकबे और फल उत्पादन का दावा पेश किया? हैरानी की बात ये है कि 2019-20 में उद्यान निदेशालय ने फाइलों में पौड़ी में फल उत्पादन क्षेत्रफल बढ़ा कर 21,647 हैक्टेयर दर्शा दिया। यही हाल उत्तराखंड के अन्य जनपदों का भी है। पलायन आयोग की रिपोर्ट में टिहरी जिले में 2015-16 में सेब उत्पादन का क्षेत्रफल 3,820 हैक्टेयर था जो 2017-18 में घट कर सिर्फ 853 हैक्टयर, नाशपाती का 1,815 से घटकर 240 हैक्टेयर, पुल्म का 2,627 से घटकर 240 हैक्टेयर, खुबानी का 1498 हैक्टयर से घटकर 162 तथा अखरोट का 4833 हैक्टयर से घटकर 422 हैक्टयर रह गया है। टिहरी जिले में 2015-16 में शीतकालीन फलों के उत्पादन का क्षेत्र फल 14593 हैक्टेयर था जो 2017-18 में घट कर 1,902 हैक्टेयर रह गया, यानी 12,691 हैक्टेयर क्षेत्र फल कम हो गया। यह तब हो रहा है जब राज्य के प्रत्येक जिले में प्रति वर्ष लाखों पौधों के रोपण पर लाखों रुपये उद्यान विभाग की योजनाओं में व्यय होता है। ऐसा क्यों होता है? तो इसका जवाब है कि उद्यान विभाग कमीशन के चक्कर में खराब फल पौध खरीदता है। फिर कृषकों के खेत तक पहुंचाने के लिए अपनाए जाने वाला तरीका फूहड़ होने से 40 प्रतिशत पौधे लगाने के पहले ही बरस सूख जाते हैं। लेकिन उद्यान विभाग हिसाब किताब में सूखने वाले 40 प्रतिशत पौधों को भी जिंदा मानकर पौध रोपण का क्षेत्रफल व फलों का उत्पादन कागजों में बढ़ाता रहता है। लिहाजा उद्यान विभाग के आंकड़े भरोसे लायक नहीं होते। उद्यान विभाग फल पौधों की आपूर्ति राज्य की पंजीकृत नर्सरियों से होना दर्शाता है किंतु वास्तव में वो शीतकालीन फलपौध हिमाचल प्रदेश व कश्मीर से तथा वर्षाकालीन फल पौध सहारनपुर या मलिहाबाद लखनऊ की प्राइवेट नर्सरियों से होती है।

आकड़ों के सहारे बादशाहत

फर्जी और काल्पनिक आंकड़े तैयार करने में माहिर उत्तराखंड उद्यान विभाग 2015-16 में नाशपाती, आड़ू, प्लम एवं खुबानी उत्पादन में देश में प्रथम स्थान पर पहुंच गया था। अखरोट उत्पादन में देश में दूसरे स्थान पर था। उद्यान विभाग के आंकड़ों में दावा किया जाता है कि उत्तराखंड में नाशपाती का उत्पादन 78,778 मैट्रिक टन, आड़ू का उत्पादन 57,933 मैट्रिक टन, प्लम का उत्पादन 36,154 मैट्रिक टन, खुबानी का उत्पादन 28,197 मैट्रिक टन अखरोट का उत्पादन 19,322 मैट्रिक टन तथा सेब का उत्पादन 51,940 मैट्रिक टन है। पड़ोसी हिमाचल प्रदेश से तुलना करें तो उत्तराखंड में कागजी फल उत्पादन के आकंडे की बात करें तो 2011-12 में उत्तराखंड में फल उत्पादन 8,02,124 मैट्रिक टन हुआ था, जो हिमाचल प्रदेश के 3,72,820 मैट्रिक टन अधिक था। हालांकि उद्यान विभाग के फर्जी फल उत्पादन के आंकड़ों के सहारे लगी ज्यादातर बड़ी खाद्य प्रोसेसिंग यूनिटें बंद हो गई हैं। रामगढ नैनीताल में 70 के दशक में एग्रो द्वारा फूड प्रोसेसिंग यूनिट लगाई गई थी, लेकिन फल उपलब्ध न होने के कारण यह यूनिट बंद कर दी गई। इसी प्रकार अल्मोड़ा जिले के मटेला में 80 के दशक में करोड़ों रुपये की लागत से बना कोल्ड स्टोर फल उपलब्ध न होने से बंद पड़ा है। रानीखेत चौबटिया गार्डन की एप्पल जूस प्रोसिसिग यूनिट बंद पड़ी है। चमोली जनपद के कर्णप्रयाग में भी 80 के दशक में एग्रो द्वारा फूड प्रोसेसिंग यूनिट खुली और बंद हो गई। रुद्रप्रयाग जनपद के तिलवाड़ा में फूड प्रोसेसिंग यूनिट लगाई गई वह भी अधिकतर बंद ही रहती है। कई स्वयं सेवी संस्थाओं एवं परियोजनाओं के माध्यम से फूड प्रोसेसिंग यूनिट लगाई गई किंतु फल उपलब्ध न होने के कारण संचालकों को यूनिट बंद करनी पड़ी। पर्वतीय क्षेत्रों में कहीं-कहीं पर प्राइवेट स्माल स्केल प्रोससिंग यूनिट लगी है किंतु अधिकांश यूनिटें पहाड़ी क्षेत्रों में फल न मिलने के कारण मैदानी क्षेत्रों हरिद्वार आदि स्थानों से किन्नो संतरा का पल्प जूस इकट्ठा कर माल्टा जूस के नाम पर बेच रही हैं। किसी भी राज्य के सही नियोजन के लिए आवश्यक है कि उसके पास वास्तविक आंकड़े हों तभी भविष्य की रणनीति तय की जा सकती है। फर्जी आंकड़ों के आधार पर यदि योजनाएं बनाई जाती है तो उससे आवंटित धन का दुरुपयोग ही होता है। उत्तराखंड राज्य गठन के बाद उम्मीद जागी थी कि पहाड़ी राज्य में विकास योजनाएं राज्य की विषम भौगोलिक परिस्थितियों के अनुसार बनेंगी किंतु ऐसा नहीं हो पाया। राज्य के भौगोलिक परिस्थितियों के अनुसार योजनाओं में सुधार नहीं हुआ। विभाग योजनाओं के क्रियान्वयन के लिए कार्ययोजना तैयार करता है कार्ययोजना में उन्हीं मदों में अधिक धनराशि रखी जाती है जिसमें आसानी से संगठित और संस्थागत भ्रष्टाचार किया जा सके। यह एक तरह से उत्तराखंड और उत्तराखंड की जनता का दुर्भाग्य ही कहा जाएगा कि अलग राज्य बनने से उन्हें ऐसा कुछ हासिल नहीं हुआ जिस पर वो गर्व कर सकें।

त्रिकालदर्शी संत
नान्तिन महाराज

मध्य प्रदेश के मुरैना जिले की चम्बल नदी के तट पर स्थित रूअर गांव में नान्तिन महाराजा का जन्म हुआ था, किंतु 7-8 वर्ष की अल्पायु में ही गृहत्याग कर अयोध्या आ गए, कुछ समय अयोध्या की हनुमानगढ़ी में रहकर उत्तराखंड की पावन धरा में पदार्पण किया।

डा.सतीश चंद्र अग्रवाल
पूर्व आयकर आयुक्त

देवभूमि उत्तराखंड में अनेक उच्चकोटि के संत महात्मा समय-समय पर तप व साधना करते रहे हैं। इससे जनसामान्य को भी उनकी कृपा, सानिध्य व मार्गदर्शन का लाभ भी मिलता रहा है। बीसवीं सदी में ऐसे ही एक त्रिकालदर्शी संत पूज्य नान्तिन महाराज रहे। जिन्होंने मुख्यतः कूर्मांचल की गिरि कन्दराओं में डेरा डालकर कठोर साधना की। कहते हैं कि इनका जन्म तो मध्यप्रदेश के मुरैना जिले की चम्बल नदी के तट पर स्थित रूअर गांव में हुआ था, किंतु 7-8 वर्ष की अल्पायु में ही गृहत्याग कर अयोध्या आ गए। कुछ समय अयोध्या की हनुमानगढ़ी में रहकर उत्तराखंड की पावन धरा में पदार्पण किया। बद्रीविशाल जी के दर्शन किए। तत्पश्चात कुछ दिन बागेश्वर के शिव मंदिर में ठहर कर पिथौरागढ़ के आंवलाघाट में रामगंगा के तट पर एक निर्जन गुफा में ध्यान साधना करने लगे। एक बाल योगी को देखकर ग्रामीण महिलाओं ने ही उन्हें नान्तिन बाबा कहना शुरू किया तो यही नाम सदा-सर्वदा के लिए उनके साथ जुड़ गया। कुमाऊंनी बोली में बच्चों को नान्तिन कहते हैं। गिरि सम्प्रदाय में दीक्षा होने पर गंगागिरी महाराज ने सिद्धगिरि नाम दिया किंतु भक्तों में वे नान्तिन महाराज से ही जाने जाते रहे। उनका पूरा जीवन हिमालय की कन्दराओं, गुफाओं व गहन वनों में तप साधना में बीता। बागेश्वर की कुकड़ामाई, रामनगर के समीप सीतावनी, नैनीताल के लड़ियाकांटा, पनियाली (हल्द्वानी) में वन क्षेत्र, भवाली के आगे गैरखान निगलाट आदि स्थानों पर कुछ माह या वर्ष बिताकर अन्य स्थान पर चले जाते थे। उन्होंने न केवल उत्तराखंड वरन भारतवर्ष के सभी तीर्थों की यात्राकी।

कठिन तप, ध्यान व साधना के बल पर अनेक सिद्धियां नान्तिन महाराज के हस्तगत हो गई थीं, उन्हें वाकसिद्धि प्राप्त थी, उनकी कही गई बात भविष्य में सत्य सिद्ध होती थी, कुछ भक्तों का कहना है कि वे एक ही समय में एक से अधिक स्थानों पर भी प्रकट हो जाते थे।

औषधि विज्ञान के जानकार थे

नान्तिन महाराज विलक्षण संत थे। उन्हें औषधि विज्ञान व जड़ी-बूटियों की गहन जानकारी थी। अनेक भक्त उनके इलाज से रोगमुक्त हुए। साथ ही आध्यात्मिक विकास को भी प्राप्त हुए। बहुत से गृहस्थ भक्तों के अलावा संन्यासी शिष्य भी बने। जिनमें प्रमुख थे नाथ बाबा, देवी महाराज, तपेश्वरी बाबा और वर्तमान के शंकर महाराज। 12 जनवरी1986 को दिन वे हल्द्वानी में ब्रह्मलीन हुए। भवाली से 2-3 किलोमीटर दूर मुक्तेश्वर मार्ग पर श्यामखेत मंदिर में उनकी समाधि है। यहां महाराज जी ने पूर्व में नवरात्रि पूजा की थी। मां पीताम्बरी देवी व शिव परिवार की सुन्दर प्रतिमाएं प्राण प्रतिष्ठित हैं। नान्तिन महाराज का विग्रह भी है। यहां वर्ष भर धार्मिक अनुष्ठान होते रहते हैं। हल्द्वानी में निलायम कालोनी में सुंदर सिद्धेश्वर शिवालय व नान्तिन आश्रम बाद में बनाया गया। बरेली-रामपुर मार्गपर मिलक कस्बे के पास भैरव मंदिर भी नान्तिन महाराज की स्मृति में बना है। उनके शिष्य नाथबाबा वहीं के पटिया गांव के रहने वाले थे। कठिन तप, ध्यान व साधना के बल पर अनेक सिद्धियां उनके हस्तगत हो गई थीं। उन्हें वाकसिद्धि प्राप्त थी। उनकी कही गई बात भविष्य में सत्य सिद्ध होती थी। कुछ भक्तों का कहना है कि वे एक ही समय में एक से अधिक स्थानों पर भी प्रकट हो जाते थे। हिंसक पशु भी उनके वश में रहते थे। जंगली हाथी. बाघ, गुलदार, भालू व विषैले सर्प आसपास होते हुए भी नान्तिन महाराज निश्चिंत भाव से साधनारत रहते थे। यहां तक कि उनके भक्तों को भी कभी हानि नहीं पहुंचाई। उन्हें सामुद्रिक शास्त्र व हस्तरेखा का भी विशेष ज्ञान था। एक बार वे भवाली में भक्त मोहन चंद्र भट्ट जी के निवास पर थे। बाल सुलभ बाबा जी को उनकी पुत्री ने हस्तरेखा देखकर भविष्य बताने का आग्रह किया। बाबा ने कहा 'जा तू डाक्टरनी बनेगी, लड़का खुद चलकर आएगा, तीन दिन में शादी हो जाएगी।' उस समय घर के कुछ सदस्य भी मौजूद थे। वे हंसने लगे, यह सोचकर कि बाबा मजाक कर रहे हैं, क्योंकि भट्ट जी की पुत्री आर्ट साइड से इंटर कर रही थी। एक-दो साल बाद हुआ यह कि पिथौरागढ़ के डा.पुनेठा परिवार के साथ विवाह का प्रस्ताव लेकर आए और विवाह तय हुआ और तीसरे दिन फेरे हो गए। क्योंकि वे मिलिट्री में मेडिकल सेवा में थे। छुट्टियां लेकर आए थे। इस प्रकार डाक्टर पति पाकर वह डाक्टरानी बन गई। यह प्रसंग मुझे स्वयं भट्ट जी ने डाक्टर पुनेठा व पुत्री की उपस्थिति में सुनाया था।

सुल्ताना डाकू का भविष्य बताया

बीसवीं सदी के प्रारंभ में नैनीताल जिले के मैदानी इलाके-हल्द्वानी, कालाढूंगी, रामनगर, काशीपुर, रुद्रपुर, नजीबाबाद, बिजनौर आदि में कुख्यात डाकू सुल्ताना का बहुत आतंक था। उसके साथ 40-50 डाकुओं का दल भी हथियारों और घोड़ों सहित संग रहता था। बिट्रिश शासन की पुलिस उसे पकड़ने के लिए

- **पिथौरागढ़ के आंवलाघाट में रामगंगा के तट पर एक निर्जन गुफा में ध्यान साधना करने वाले एक बाल योगी को देखकर ग्रामीण महिलाओं ने ही उन्हें नान्तिन बाबा कहना शुरु किया तो यही नाम सदा-सर्वदा के लिए उनके साथ जुड़ गया।**
- **नान्तिन महाराज का कहना था कि जन्म से तो मनुष्य व पशु एक से होते हैं, भूख-प्यास, वासना, सुख-दुख सब के साथ है, मनुष्य को जैसी संगत मिलती है वैसा ही प्रभाव होता है, कष्टों से मुक्ति परमात्मा की शरण में जाने पर ही संभव है।**

सक्रिय रहती थी, किंतु वह चकमा देकर जंगलों में ठिकाना बदलता रहता था। लगभग 1924 की बात है। किशोरवय के नान्तिन महाराज कालाढूंगी से बाजपुर जाने वाले मार्ग पर सघन वन गुड़प्पा में एक पीपल के पेड़ के नीचे साधनारत थे। टाट का चोला पहनते थे और पीपल आदि के कोमल पत्ते ही उनका आहार थे। जंगली पशुओं हाथी, गुलदार, बाघ, भालू, आदि की बहुतायत भी थी। संयोग से सुल्ताना डाकू ने भी उसी जंगल में छिपने के लिए डेरा डाला। उसके कारिंदे भेष बदल कर आसपास निगरानी करते थे। एक कारिंदे ने नान्तिन महाराज को देखा तो उसे शक हुआ कि यह पुलिस का मुखबिर तो नहीं। वह तहकीकात करने बाबा के पास आया। उन्होंने कहा 'मैं तो 2-3 माह से यहीं साधना कर रहा हूं।' उस कारिंदे ने सुल्ताना को खबर दी तो सुल्ताना आगे की जांच करने स्वयं आया और भेंट के लिए कुछ राशन सामग्री, फल आदि भी लाया। बाबा ने कहा 'तुम दिल से अच्छे आदमी हो। गरीबों की मदद भी करते हो, लेकिन डकैती डालना अच्छा नहीं है। तुम यह काम छोड़ दो, अन्यथा तुम्हारा मृत्युयोग निकट है। इस जंगल से शीघ्र चले जाओ।' वस्तुतः दबंग अंग्रेज अधिकारी मिस्टर यंग को सुल्ताना डाकू को पकड़ने या मारने का काम सौंपा हुआ था। सुल्ताना डाकू साथियों के संग वहां से चला तो गया किंतु डकैती करना नहीं छोड़ा। कुछ माह बाद ही वह पकड़ा गया और 7 जुलाई 1924 में उसके चार साथियों सहित फांसी हो गई। अन्य को कालापानी की सजा हुई।

बचपन में मिले सिद्धसंत

मेरे लिए यह अत्यन्त सौभाग्य की बात है कि ऐसे सिद्धसंत का दर्शन और सानिध्य देवयोग से बचपन में ही प्राप्त हुआ। हल्द्वानी के रेलवे बाजार में हमारे निकट संबंधी श्री रामेश्वर दयाल जी का घर था। वे नान्तिन महाराज से आग्रह कर सन 1962 या 1963 में अपने निवास पर ले आए। महाराज जी करीब 40-45 दिन वहां रहे। सावन का महीना था। हम भाई-बहन उनके आंगन में पड़े झूले का आनंद लेने हर दूसरे-तीसरे दिन जाते रहते थे। ज्यादा समय लड़कियां यानी हमारी बहने ही झूला झूलती रहती थी। अतः मैं आंगन के पास बरामदे में महाराज जी के समीप जाकर खड़ा रहता और भक्तों के प्रश्न व महाराज जी के उदबोधन को सुनता। मैं नहीं जानता था कि वे कौन से साधू-संत हैं। अधिकांश बातें तो विस्मृत हो गई, लेकिन कुछ बातें अभी भी याद हैं। इस प्रकार अनजाने में ही अनेक बार चरण स्पर्श, आशीर्वाद और प्रसाद प्राप्त करने का अवसर मिला। कई वर्ष पश्चात मुझे ज्ञात हुआ कि वे नान्तिन महाराज थे। उसी अवधि में भैरो चौक हल्द्वानी में पूज्य संत महादेव गिरि भी विराजमान थे, जहां अनेक बार अपने दादा जी के साथ दर्शन प्रसाद आदि का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

संगत का विशेष प्रभाव

नान्तिन महाराज जी के अनेक भक्त अभी भी हैं, जिन्हें उनके दर्शन व सत्संग का लाभ मिला। पीताम्बर देवी व शिवजी उनके मुख्य आराध्य देव थे। नवरात्रियों में वे हवन-पूजन व भंडारा भक्तों से कराया करते थे। उनका कहना था कि जन्म से तो मनुष्य व पशु एक से ही होते हैं। भूख-प्यास, वासना, सुख-दुख सब के साथ है। मनुष्य को जैसी संगत मिलती है वैसा ही प्रभाव होता है। जन्म-जन्म में चौरासी लाख योनियों में भ्रमण और कष्टों से मुक्ति परमात्मा की शरण में जाने पर ही संभव है। यह जो माया का चक्कर घूम रहा है उससे बचने के लिए चक्की की कील भगवान ही हैं। उनकी खोज की आदत बनानी चाहिए। तभी मनुष्य पशुओं से श्रेष्ठ माना जाएगा। नान्तिन महाराज की कठोर साधना भक्तों पर अनुग्रह के अनेक प्रसंग लोगों की स्मृति में रचे बसे हैं।

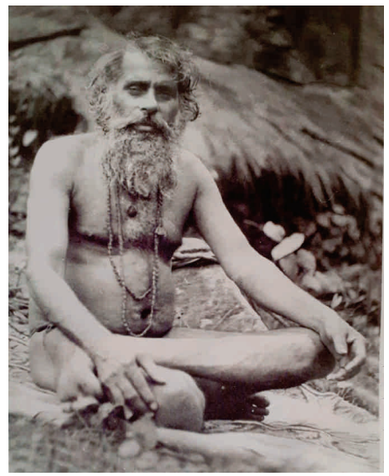

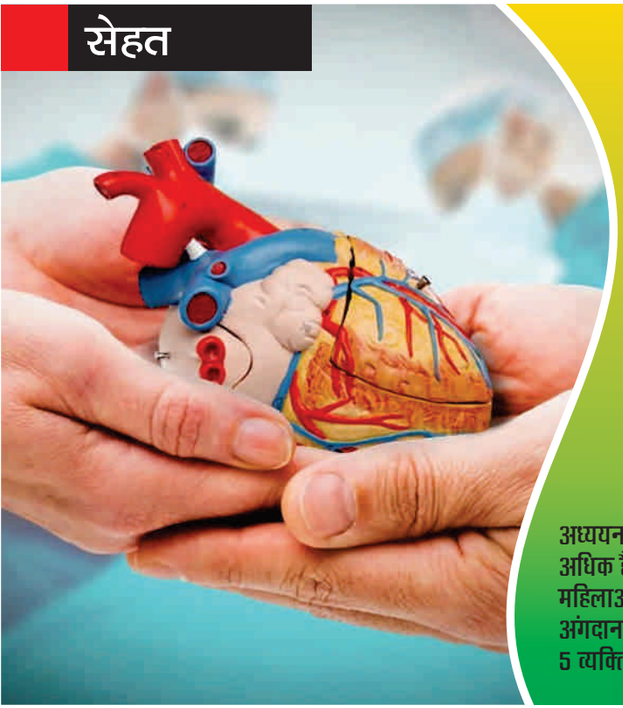

अंगदान में महिलाएं ही आगे क्यों?

अध्ययन के आंकड़े बताते हैं कि अंग लेने वालों में पुरुषों का प्रतिशत 80 से अधिक है जबकि महिलाओं का प्रतिशत 20 से भी कम है, जबकि अंगदान करने में महिलाओं का प्रतिशत 80 के करीब है और पुरुषों का प्रतिशत 20 से कम है, अंगदान करने वालों में प्रति 5 लोगों में 4 महिलाएं हैं, वहीं अंग लेने वालों में प्रति 5 व्यक्तियों में 4 पुरुष हैं।

अंगदान जैसे महादान के मामले में भारत के संदर्भ में एक बात खासकर उभर कर सामने आ रही है और वह यह की अंगदान के क्षेत्र में आखिर महिलाएं ही आगे क्यों है? क्या वे स्वयं ही आगे आई है अथवा देश काल और परिस्थितियों ने उन्हें आगे आने के लिए विवश किया है? अब इसका सच क्या है यह शोध का विषय हो सकता है मगर भारत के संदर्भ में यदि आंकड़ों की भाषा पर गौर करें तो महिलाओं के द्वारा जीवनरक्षण प्रत्यारोपण के लिए अंगदान की भागीदारी लगभग 80 प्रतिशत तक होती है और भारत जैसे पुरुष प्रधान समाज में यह आंकड़ा निश्चित ही चौंकाने वाला हो सकता है। अंगदान जीवित या मृत व्यक्ति का एक या एक से अधिक अंगों का किसी अन्य व्यक्ति के शरीर में प्रत्यारोपण करने के लिए दान की एक प्रक्रिया है। अंगदान ऐसे किसी पुरुष या स्त्री को जीवन जीने का दूसरा मौका प्रदान कर सकता है जो प्रत्यारोपण के बिना मृत्यु की कगार पर है। अपने अंगों का दान करके एक ही व्यक्ति कई व्यक्तियों का जीवन बचाने में सहायक हो सकता है। कोई भी व्यक्ति प्रत्यारोपण के लिए अंगों की कमी को दूर करने में ऐसी मदद कर सकता है जो मानवीय के साथ अनुकरणीय होती है। भारत में अंग प्रत्यारोपण 1994 के अधिनियम के तहत किए जाते हैं इसमें 2011 में आवश्यक संशोधन करके इसे कई मायनों में और सशक्त बनाया गया है। उत्तर प्रदेश राज्य अंग एवं ऊतक प्रत्यारोपण संगठन (एसओटीटीओ) की रिपोर्ट के मुताबिक पुरुष मरीजों को लिवर एवं किडनी दान करने वाली 87 फीसदी महिलाएं होती हैं। इसमें करीब 50 फीसदी मामलों में पत्नी अंगदान करती है। पत्नी के न होने पर 38 फीसदी केस में मां अंगदान करती है। वहीं जब महिलाओं को अंगदान की जरूरत होती है तो सिर्फ 13 फीसदी परिवार के पुरुष ही आगे आते हैं।

आलोक एम इंदौरिया
इंदौर मध्य प्रदेश

अंगदान के लिए जागरूकता की जरूरत

जीवित और मृत व्यक्तियों द्वारा कई अंगों का दान किया जा सकता है। एक जीवित इंसान एक किडनी, अपने लिवर का एक हिस्सा, एक फेफड़ा अग्नाशय का एक हिस्सा कॉर्निया, त्वचा, हड्डी, हृदय के बाल जैसे ऊतक दान कर सकता है। जबकि एक मृत व्यक्ति के परिवार द्वारा पूरा लीवर, हृदय, फेफड़ा अग्नाशय, छोटी और बड़ी आतें, वाल्व आदि दान किए जा सकते हैं। अभी तक अंग प्रत्यारोपण में युवाओं को प्राथमिकता दी जाती थी, लेकिन संशोधित नियमों के बदलाव के बाद अब बुजुर्ग भी बेहतर जीवन की उम्मीद कर सकते हैं। अंगदान और प्रत्यारोपण को लेकर जागरूकता की कमी के कारण दानदाता के मन में कई प्रकार के भय और मिथक व्याप्त है। जिसके कारण इतनी बड़ी जनसंख्या वाले देश में अंगदान के लिए आमजन उतना आगे नहीं आ रहा जिस तादाद में उसको आना चाहिए। आज भी अंग प्राप्तकर्ता और अंग दानदाता के बीच लंबा फासला है, जिसके कारण मरीजों की संख्या आनुपातिक रूप से काफी बड़ी है।

अंगदान जीवित या मृत व्यक्ति का एक या एक से अधिक अंगों का किसी अन्य व्यक्ति के शरीर में प्रत्यारोपण करने के लिए दान की एक प्रक्रिया है, अंगदान ऐसे किसी पुरुष या स्त्री को जीवन जीने का दूसरा मौका प्रदान कर सकता है जो प्रत्यारोपण के बिना मृत्यु की कगार पर है।

मगर इसके बावजूद भी लोगों की थोड़ी-थोड़ी जागरूकता का गहरा प्रभाव पड़ा है और पिछले कई वर्षों से अंगों के प्रत्यारोपण में भारी वृद्धि हुई है। 2013 में 4990 रोगियों के अंग प्रत्यारोपण का आंकड़ा सामने आया था जो 2022 में बढ़कर 15561 हो गया। जीवित अंगदाताओं से लीवर के प्रत्यारोपण की कुल संख्या 2013 में 658 थी, जो 2022 में बढ़कर लगभग 3000 हो गई। इसी तरह मृत दानदाताओं में 2013 में कुल 240 की संख्या थी जो 2022 में बढ़कर तीनगुना से अधिक 761 हो गई?। गुर्दा प्रत्यारोपण के क्षेत्र में 2013 में जीवित दानदाताओं की संख्या 3495 थी, जो 2022 में बढ़कर 9834 हो गई। हृदय प्रत्यारोपण की संख्या 2013 में सिर्फ 30 थी जो 2022 में 250 के लगभग हो गई जबकि फेफड़े प्रत्यारोपण की संख्या भी 23 से बढ़कर 138 हो गई। इस प्रकार यह बढ़ती हुई संख्या इस बात का प्रमाण है कि अंगदान के प्रति लोगों का रुझान तेजी से बढ़ा है।

अंगदान में शिक्षित वर्ग फिसड्डी

भारत के संदर्भ में देखें तो यहां अंगदान करने वालों की संख्या अंग प्राप्त करने वालों की तुलना में काफी कम है। लोगों में अंगदान को लेकर भांति-भांति की भ्रांति और धारणाएं हैं लेकिन अंगदान के मामले में हमारे देश की महिलाएं काफी ही नहीं बल्कि बहुत ज्यादा आगे हैं। हैरान करने वाली बात यह है कि पढ़ा लिखा तबका अंगदान के मामले में उतना जागरूक नहीं है जितना होना चाहिए। भारत में अंगदान की हालत आज यह है कि अंगदान करने वालों की संख्या से ज्यादा संख्या ट्रांसप्लांट का इंतजार करने वाले मरीजों की है। दुर्भाग्य से ये इंतजार कभी कभी इतना लम्बा हो जाता है कि कई लोग तो इंतजार में ही काल के गाल में समा जाते हैं। क्योंकि अंगदाता के अभाव में ट्रांसप्लांट नहीं हो पाता। एक कड़वा सच यह भी है कि अंग डोनर में अधिकतम संख्या महिलाओं की ही है। एक आंकड़े के अनुसार अंग लेने वालों में पुरुषों का प्रतिशत 80 से अधिक है जबकि महिलाओं का प्रतिशत 20 से भी कम है। जबकि अंगदान करने में महिलाओं का प्रतिशत लगभग 80 प्रतिशत के आसपास और पुरुषों का प्रतिशत 20 से कम पाया जाता है। यदि गौर से देखें तो पता चलेगा की अंगदान करने वालों में प्रति पांच लोगों में चार महिलाएं हैं। वहीं अंग लेने वालों में प्रति पांच व्यक्तियों में चार पुरुष हैं। एक मेडिकल जनरल में प्रकाशित रिपोर्ट के अनुसार 2019 में हुए ट्रांसप्लांट में 80 प्रतिशत लिविंग अंग दाता महिलाएं ही थी। यानी महिलाएं लिविंग अंग दाता भी है और जिंदा रहते हुए अंगदान करने के मामले में पुरुषों के मुकाबले में बहुत आगे हैं। लिविंग अंग दाता के रूप में अपनी किडनी और लीवर का दान करने के मामले में महिलाएं ही आगे हैं। बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव को उनके किसी बेटे ने अपनी किडनी डोनेट नहीं की बल्कि उनकी बेटी रोहिणी आचार्य ने अपनी एक किडनी डोनेट की है। यह मामला काफी चर्चित रहा था।

महिलाओं पर सामाजिक दबाव?

बरहाल अंगदान जैसे महादान के मामले में भारतवर्ष में महिलाएं ही आगे हैं और इस आगे होने में महत्वपूर्ण कारण जहां सामाजिक ताना-बाना है वहीं आर्थिक कारण संभवतः सबसे बड़ा वह कारण है जिसके चलते राजी या गैरराजी महिलाएं अपने पति, बच्चे या परिजन के लिए अंगदान के लिए सबसे पहले आगे आती हैं या उन्हें परिस्थिति वश आगे आना ही पड़ता है। दरअसल महिलाओं का यह मानना है कि यदि पुरुष अंगदान करेगा तो फिर घर कैसे चलेगा? यानी ऑपरेशन की जटिल प्रक्रिया और उसके बाद आराम घर की आर्थिक कमर को तोड़ कर रख देगा जिससे अंततः महिलाओं को ही इस क्षेत्र में आगे आना पड़ता है। इसके अलावा भारत में महिलाओं पर एक सामाजिक दबाव भी रहता है जिसके कारण भी वह कई बार न चाह कर भी अंगदान के लिए विवश हो जाती है। क्योंकि पति परमेश्वर वाली थीम और महिला का देवी स्वरूप होना कहीं ना कहीं हमारे सामाजिक ताने-बाने में बहुत ज्यादा रचा बसा है। किडनी डोनेट के तमाम मामलों में पत्नी ने ही पति को अपनी किडनी डोनेट की है। अंगदान की इस प्रक्रिया में भारतीय समाज की पुरातन पुरुषवादी सोच एक तरह से सम्मिलित हो गई है या सम्मिलित कर दी गई है कि किडनी और लीवर दान के मामले में पत्नी के द्वारा ही अंगदान करना लगभग अनिवार्य सा हो गया है। ऐसा भी माना जाता है कि इस मामले में उसकी सहमति है ही। ऐसे तमाम उदाहरण है जिसमें बेटी ने पिता या माता को पत्नी ने पति या उनके परिजनों को अंगदान किया है। परिवार के पुरुष को अंगदान की आवश्यकता होने पर महिला पर मनोवैज्ञानिक और भावनात्मक दबाव बनाया जाता है वहीं इसके उलट महिलाओं को यदि किसी अंग की आवश्यकता पड़ जाए तो घर के पुरुष न केवल अंगदान में आनाकानी करते हैं बल्कि बाहर से अंगदाता की व्यवस्था में लग जाते हैं या फिर महिला मरीज को भगवान और दबा के भरोसे छोड़ दिया जाता है। सवाल यह है कि आखिर महिला ही अंगदान की कसौटी पर हमेशा क्यों कसी जाती है? अंगदान करना एक उच्च मानवीय कृत्य है परंतु महिला को उसकी इच्छा के विरुद्ध अंगदान करने के लिए विवश करना कितना न्याय संगत है? अंगदान के मामले में इस देश का पुरुष वर्ग जब तक आगे नहीं आएगा महिला अंगदान को लेकर अबला ही रहेगी सबला शायद कभी ना बन पाए। आज आवश्यकता एक ऐसे जन जागरण की है जिससे पुरुषों में भी अंगदान करने की भावना प्रबल हो। वैसे एक सच ये भी है कि भारत में अंग दान करने की बात तो बहुत बड़ी है यहां तो रक्त दान से भी बहुत से लोग भागते हैं। जब किसी रोगी को रक्त की आवश्यकता होती है तो बहुत से परिजन पीछे हट जाते हैं, और ब्लड डोनर की तलाश करते हैं। बल्ड की आम तौर पर महिलाओं को प्रसव के दौरान ज्यादा जरूरत पड़ती है।

- **देश में किडनी के रोगी सर्वाधिक 86 परसेंट है यानी 90,000 के आसपास, वहीं 9,800 से अधिक मरीजों को लिवर ट्रांसप्लांट का इंतजार है, एक मोटे अनुमान के अनुसार 50 से 64 वर्ष तक की आयु वर्ग के लोगों को सबसे ज्यादा अंग प्रत्यारोपण की जरूरत है।**
- **मेडिकल जनरल में प्रकाशित रिपोर्ट के अनुसार 2019 में हुए ट्रांसप्लांट में 80 प्रतिशत लिविंग अंग दाता महिलाएं ही थी। यानी महिलाएं लिविंग अंग दाता भी है और जिंदा रहते हुए अंगदान करने के मामले में पुरुषों के मुकाबले में बहुत आगे हैं।**

मरने के बाद अंगदान

मेडिकल साइस के अध्ययन के आंकड़ों पर नजर डाली जाए तो पता चलता है कि मृत्यु के बाद अंगदान करने के मामले में पुरुष काफी आगे हैं जबकि जीते जी किसी का जीवन बचाने के लिए महिलाओं की भूमिका भारत में सबसे ज्यादा है। नोटों के द्वारा जारी सालाना रिपोर्ट में यह दर्शाया गया है कि 2023 में 1099 कैडेवर यानी ब्रेन डेड डोनेशन हुए जिसमें 77 प्रतिशत पुरुष थे वहीं 15436 लोगों ने जीते जी अपने परिवार के लिए अंगदान किया जिसमें महिलाओं का प्रतिशत 64 से अधिक है। सबसे अधिक कैडेवर डोनेशन तेलंगाना में हुए दूसरे नंबर पर तमिलनाडु में और तीसरा नंबर कर्नाटक आता है यानी दक्षिण भारत कैडेवर डोनेशन में बहुत आगे है। कुल 233 हार्ट ट्रांसप्लांट में सबसे ज्यादा 70 तमिलनाडु में हुए और कुल 150 लंग्स ट्रांसप्लांट में 75 तेलंगाना में हुए। ऐसा बताया जाता है कि किडनी के रोगी सर्वाधिक 86 परसेंट है यानी तकरीबन 90,000 के आसपास हैं वहीं 9,800 से अधिक मरीजों को लिवर ट्रांसप्लांट का इंतजार है। एक मोटे अनुमान के अनुसार 50 से 64 वर्ष तक की आयु वर्ग के लोगों को सबसे ज्यादा अंग प्रत्यारोपण की जरूरत है जो लगभग भारत में 44,000 रोगियों के आसपास बैठती है। इसलिए अंगदान के प्रति जागरूकता की आवश्यकता है।

पर्यावरण के दुश्मन

एक तरफ हम पर्यावरण की रक्षा की अहद लेते हैं, पेड़ काटने पर जमीन आसमान एक कर देते हैं, ग्लोबल वार्मिंग पर हायतोबा मचाते हैं और दूसरी तरफ लंबे युद्धों में शामिल देशों को रोक नहीं पाते, पेड़ तो छोड़िए कुछ सनकी लोग अपनी 'मैं' के घमंड में पूरी धरती को बर्बाद कर देना चाहते हैं।

प्रदीप डीएस भट्ट
लेखक, मेरठ

जब पूरा विश्व इजराइल-फिलीस्तीन, रूस और यूक्रेन युद्ध से ही परेशान हो रहा है, तब बताता चलूं कि ग्लोबल पीस इंडेक्स की 2024 की रिपोर्ट के अनुसार इस वक्त विश्व में 56 युद्ध और गृह युद्ध चल रहे हैं। 1970 के दशक में 23 प्रतिशत युद्धों का अंत शांति वार्ता से हुआ था, इसमें भारत-पाकिस्तान युद्ध भी शामिल है। 21वीं शताब्दी के प्रथम दशक में ये आंकड़ा घटकर 4 प्रतिशत रह गया है जो किसी भी दृष्टि से ठीक नहीं है। ये तथ्य महत्वपूर्ण है कि द्वितीय विश्व युद्ध में अमेरिका द्वारा जापान पर 6 व 9 अगस्त 1945 को परमाणु बम का प्रयोग किया गया था, किंतु आज करीब 79 वर्ष बाद 7 देश परमाणु संपन्न हो गए हैं। इन देशों के पास हजारों की संख्या में परमाणु बम हैं। आप कल्पना कर सकते हैं कि भविष्य की स्थिति कितनी विकट होगी। एक तरफ हम पर्यावरण की रक्षा की अहद लेते हैं, पेड़ काटे जाने पर जमीन आसमान एक कर देते हैं, ग्लोबल वार्मिंग पर हायतोबा मचाते हैं और दूसरी तरफ लंबे युद्धों में शामिल देशों को रोक नहीं पाते। पेड़ तो छोड़िए कुछ सनकी लोग अपनी 'मैं' के घमंड में पूरी धरती को बर्बाद कर देना चाहते हैं। फिर ये पर्यावरण बचाओ का खोखला नारा किसके लिए और क्यों? यूक्रेन जिसका पुराना नाम कीवियन रूस है। जो नौवीं शताब्दी में बड़ा एवं शक्तिशाली देश था, किंतु 12वीं शताब्दी तक आते-आते यह देश क्षेत्रीय शक्तियों में विभाजित हो गया। 24 फरवरी 2022 को रूस ने यूक्रेन पर युद्ध थोप दिया। ऐसा मैं इसलिए कह रहा हूं, क्योंकि सोवियत संघ के विघटन के बाद 15 अलग देश अस्तित्व में आए जिसमें से यूक्रेन भी एक स्वतंत्र देश बना। कुछ छुटपुट कारणों सहित जैसे ही यूक्रेन ने नाटो (नॉर्थ अटलांटिक ट्रीटी ऑर्गनाइजेशन) में शामिल होने का फैसला किया वैसे ही रूस की दृष्टि यूक्रेन की तरफ वक्र हो गई। इसका सीधा सा कारण है यदि यूक्रेन नाटो की गोद में बैठता है तो रूस की सुरक्षा कंप्रोमाइज हो जाएगी। यानी यूक्रेन के नाटो में शामिल होने से नाटो सेना की सीमा सीधे रूस से सट जाएंगी। बस रूस के राष्ट्रपति ब्लादिमीर पुतिन इसी बात से असहज हो गए। रूठने से लेकर मनाने तक के सभी जतन बेकार हुए तो 24 फरवरी को रूस ने यूक्रेन पर सीधे हमला कर दिया। इसकी आशंका विश्व को पहले से थी किंतु इसमें अमेरिका अपने हित देख रहा था और यूरोपीय देश अपने। रूस के राष्ट्रपति पुतिन जहां केजेबी से हैं वहीं यूक्रेन के राष्ट्रपति जेलेंस्की की पहचान एक कॉमेडियन की रही है। दुनिया के सभी देशों को यकीन था कि यूक्रेन 10-15 दिन में सरेंडर कर देगा किंतु ढाई वर्ष बाद भी दोनों देश अपनी ताकत दिखाने में लगे हैं। कुल मिलाकर सवाल ये है कि युद्ध में जो बारूद फट रहा है वो क्या पर्यावरण के लिए हानिकारक नहीं है? ऊपर से परमाणु बम का खतरा अलग से मंडरा रहा है।

रूस व यूक्रेन का भारी नुकसान

इस युद्ध से रूस एवं यूक्रेन को भारी भरकम नुकसान हुआ है। यूक्रेन अपनी जिद छोड़ने को तैयार नहीं है और रूस अपनी। खामियाजा दोनों देशों की जनता भुगत रही है। इस युद्ध में नुकसान का आकलन करना तो मुश्किल है किंतु इस युद्ध से किस देश को कितना लाभ हुआ, उसका अंदाजा लगाया जा सकता है। अमेरिका यूरोपीय यूनियन एवं कई देशों ने अपने कचरा हथियार यूक्रेन को बेच दिए। अमेरिका ने अपने एफ16 फाइटर जेट यूक्रेन को दे दिए जो पुरानी पीढ़ी के थे। व्यापारिक दृष्टि से देखें तो अमेरिका ने अपना कबाड़ यूक्रेन को बेचकर अपनी चांदी कर ली, किंतु वो सारा कबाड़ रूस की स्मार्ट टेक्नोलॉजी के आगे धराशायी हो गया। जब ढाई साल से युद्ध चल रहा है तो मिसाइल, रॉकेट, टैंक और गोला बारूद खत्म होगा ही। अमेरिका, यूरोपियन डेनमार्क, नार्वे, नीदरलैंड पाकिस्तान ने यूक्रेन की मदद की तो रूस को हथियारों की सप्लाई चीन एवं तुर्की जैसे देश कर रहे हैं। इन देशों ने भी शस्त्र बेचकर चांदी काटने की कोशिश की। चीन, तुर्की को तो कुछ हासिल हुआ किंतु पाकिस्तान न इधर का रहा न उधर का रहा। पाकिस्तान-भारत की तरह रूस से कच्चा तेल लेना चाहता था किंतु जब रूस को जानकारी हुई कि पाकिस्तान यूक्रेन को हथियार दे रहा है तो बात हद से ज्यादा बिगड़ गई। खैर एक अनुमान है कि युद्ध से यूक्रेन को 55 बिलियन डॉलर का नुकसान हो चुका है।

इजराइल-फिलिस्तीन विवाद

अब बात करते हैं इजराइल और फिलिस्तीन विवाद की, तो दोनों के बीच झगड़े की शुरुआत 1917 में हुई थी। जब ब्रिटिश विदेश सचिव ऑर्थर जेम्स बेल्फॉर ने बेल्लफॉर घोषणा के तहत फिलिस्तीन में यहूदियों के लिए नेशनल होम के लिए ब्रिटिश राज्य की तरफ से आधिकारिक समर्थन किया गया था। 1914 में प्रथम विश्वयुद्ध (28 जुलाई-1914 से 11 नवंबर-1918) की शुरुआत हो चुकी थी। ब्रिटिश आर्मी युद्ध में व्यस्त थी नाजियों द्वारा यहूदियों पर अत्याचार किए जा रहे थे, तभी बेल्फोर्ड डिक्लेरेशन की घोषणा हो गई। जिसके बाद यहूदियों ने फिलिस्तीन में जमीन खरीदनी शुरू कर दी। सच कहूं तो अंग्रेजों ने 1947 में जो भारत के साथ किया, उसका एक्सपेरिमेंट उन्होंने 30 वर्ष पहले यहूदियों और इजराइल के साथ किया था। इजराइल और फिलिस्तीन का झगड़ा आत्म निर्णय के अधिकार को लेकर सैन्य और राजनीतिक संघर्ष है। संघर्ष के मेन मुद्दों में वेस्ट बैंक और गाजा पट्टी पर इजराइल का कब्जा, यरुशलम की स्थिति, इजराइली बस्तियां, सीमा निर्धारण, जल अधिकार परमिट व्यवस्था, फिलिस्तीन आंदोलन, फिलिस्तीन वापसी का अधिकार वगैरह वगैरह हैं। 1917 से लेकर 2021 तक इजराइल ने न जाने कितने छुटपुट युद्ध किए हैं। किंतु 7 अक्टूबर 2023 को यहूदी जब शांति प्रार्थना में व्यस्त थे तब फिलिस्तीन समर्थक हमास ने दक्षिणी इजराइल पर हमला कर दिया था। यहूदी शांति प्रार्थना के समय न तो हथियार रखते हैं न ही चलाते हैं। इस हमले से इजराइल सकते में आ गया और जवाबी कार्रवाई की तो विश्व ने इजराइल का वो रूप देखा जिसे आज तक किस्सों कहानियों में यदा कदा सुना जाता था। गाजा पट्टी में फिलिस्तीनियों ने हमास द्वारा बिछाए गए सुरंगों के जाल ने इजराइल को बहुत परेशान किया किंतु टेक्नोलॉजी के बूते इजराइल, हमास पर भारी पड़ा है। इजराइल की आक्रमकता का अंदाजा इससे लगाया जा सकता है कि शुरुआती झटकों से उबरकर गाजा पट्टी में 6 दिनों में 6 हजार बम गिराकर गाजा पट्टी की नाकाबंदी की और फिर गाजा में पैदल सेना उतार दी। दस महीने की लड़ाई में एक तरफ इजराइल अर्जुन की तरह अकेला खड़ा है, अगर उसका कोई सहायक है तो वो अमेरिका है। भारत तटस्त की भूमिका में है। इन्हीं सब के बीच ईरान ने इजराइल के खिलाफ कुछ उल्टा सीधा करने की कोशिश की तो इजराइल के एक ही वार से उसके राष्ट्रपति जन्नत सिधार गए, इसके अलावा ईरान को काफी हानि उठानी पड़ी है। विश्व के सभी देश भलीभांति जानते हैं कि फिलिस्तीन और लेबनान के आतंकी गुटों को परोक्ष रूप से ईरान ही पालता है अन्यथा क्या कारण है कि हिज्बुल्लाह की अपनी अलग एक घातक आर्मी बन गई। ताजातरीन घटना पर दृष्टि डालें तो पाएंगे कि इजराइल वर्तमान से 2 से 4 साल आगे की सोच कर चलता है। सितंबर 2024 में हुए पेजर धमाके फिर वाकी टॉकी धमाके इस ओर इशारा कर रहे हैं कि कैसे इजराइल ने इस पर 2022 से ही कार्य शुरू कर दिया था जिससे हिज्बुल्लाह का कोर कमांडर तक मारा गया। आचर्श्य की बात तो ये है कि रूस जो विश्व के बहुत से देशों के लिए स्वयं यूक्रेन युद्ध का खलनायक है वह मास्को में बैठकर इजराइल-फिलिस्तीन पर ज्ञान दे रहा है जरा बानगी पढ़िए...

मास्को-चिंगारी भड़काना बहुत आसान है। वहां जो घटनाएं हो रही हैं, उन्हें देखते हुए कहना आसान है कि जब आप पीड़ित और खून से लथपथ बच्चों को देखते हैं तो आपकी मुट्ठियां भिंच जाती हैं और आंखों में आंसू आ जाते हैं। यह किसी भी समान्य व्यक्ति की प्रतिक्रिया है। अगर ऐसी कोई प्रतिक्रिया नहीं है तो उस व्यक्ति के पास दिल नहीं है वह पत्थर का बना हुआ है। इन पंक्तियों को पढ़कर मुझे सिर्फ हंसी आती है। क्योंकि जो व्यक्ति स्वयं पिछले ढाई वर्ष से यूक्रेन से 'युद्धम शरणम गच्छामी' खेल रहा हो वह फिलिस्तीन का पक्ष लेकर इजराइल पर दोषारोपण कैसे कर सकता है? जितनी जाने इजराइल-फिलिस्तीन, हमास, हिज्बुल्लाह की गई हैं उससे सैकड़ों गुना जाने रूस-यूक्रेन युद्ध में अब तक जा चुकी हैं। यहां सिर्फ जान के नुकसान का आकलन है माल आकलन संभव ही नहीं। पहले रूस-यूक्रेन युद्ध को लेकर विश्व चटकारे लेकर खबरें परोस रहा था अब वह भी इन खबरों से फेडआप हो चुका है। खबर कोई भी हो ज्यादा दिन तक खबर में रहे तो वह खबर फिर खबर नहीं रहती। रूस-यूक्रेन युद्ध की खबरों का हाल कुछ ऐसा हो चुका है। दोनों देशों के असहले खत्म हो चुके हैं उधार के हथियारों से युद्ध नहीं जीते जात। दोनों देशों की अर्थव्यवस्था भी चौपट हो गई है। कुछ दिनों में इजराइल-फिलिस्तीन हिज्बुल्लाह को भी समझ आ ही जाएगा, लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी होगी। यूरोपियन देशों एवं अमेरिका को रूस ही गैस एवं तेल सप्लाई कर रहा था। रूस ने प्रतिकार स्वरूप गैस सप्लाई बंद की तो पिछली दो सर्दियों में यूरोप कितना परेशान हुआ ये जग जाहिर है। अटल जी की पंक्ति याद आ गई 'चिंगारी का खेल बुरा होता है' अब अमेरिका, यूरोप सहित संयुक्त राष्ट्र के पावरफुल देश चाहते हैं कि भारत के प्रधानमंत्री मोदी इस युद्ध को रुकवाएं क्योंकि उन्हें पता है कि आज विश्व पटल पर अगर कोई शक्तिशाली नेता है, तो वो मोदी ही हैं, जिनकी स्वीकार्यता यूक्रेन और रूस के नेताओं में बराबर है। इसका प्रमाण भी दुनिया देख चुकी है जब भारत ने युद्धरत रूस-यूक्रेन के नेताओं से बात कर निश्चित समय के लिए युद्ध रुकवाकर भारत के नागरिकों के साथ अन्य देशों के नागरिकों को भी भारतीय तिरंगे की छत्रछाया में सकुशल घर पहुंचाया था। अमेरिका एवं अन्य यूरोपीय देश इजराइल एवं हिज्बुल्लाह के बीच युद्ध रुकवाने की कोशिश नहीं कर रहे हैं। आखिर ये दोहरी नीति क्यों? क्यों बार बार ये सुनने और पढ़ने में आता है कि अमेरिका हो या फिर यूरोपीय देश ये सिर्फ युद्ध भड़काना जानते हैं समेटना नहीं। अपने फायदे के लिए ये देश किसी भी सीमा तक चले जाते हैं फिर चाहे इसके लिए इन्हें तख्ता पलट ही क्यों न करना पड़े। सबसे ताजातरीन मामला बांग्लादेश का है। बांग्लादेश की कामचलाऊ सरकार के मुखिया संयुक्तराष्ट्र की सभा में जाते हैं तो स्वीकार करते हैं कि शेख हसीना के खिलाफ जबरदस्त साजिश रची गई। ये खबर भी निकल कर आई कि अमेरिका, बांग्लादेश में सैनिक अड्डा स्थापित करना चाहता था जब वो सफल नहीं हुआ तो उसने बांग्लादेश में तख्ता पलट करा दिया। अमेरिका तो कामयाब हो गया किंतु उसमें पिसा केवल बांग्लादेशी हिंदू। ताजा खबर के अनुसार अमेरिका और यूरोपियन यूनियन इजराइल और लेबनान हिज्बुल्लाह के बीच 21 दिन का युद्ध विराम चाहती है किंतु बेंजामिन नेतनयाहू ने इससे साफ इंकार कर दिया। इजराइल का इतिहास रहा है कि वह अपने दुश्मनों के प्रति निर्मम रहा है इसलिए ये कहना जल्दबाजी होगी कि इजराइल अपनी संप्रभुता के साथ कोई समझौता करेगा क्योंकि ये उसका स्टाईल नहीं है। जब तक वह हिज्बुल्लाह को समाप्त नहीं कर देता तब तक इजराइल इस युद्ध में कोई युद्ध विराम नहीं करेगा। इस स्थिति को देखते हुए भारत ने लेबनान में रहने वाले भारतीयों को एडवायजरी जारी कर दी है कि वे जल्द से जल्द लेबनान छोड़ दें। हम जैसे पर्यावरण प्रेमी सिर्फ प्रार्थना ही कर सकते हैं कि ईश्वर हमें इन पर्यावरण के दुश्मनों से बचाए। ●

- **रूस के राष्ट्रपति पुतिन जहां केजेबी से हैं वहीं यूक्रेन के राष्ट्रपति जेलेंस्की की पहचान एक कॉमेडियन की रही है, दुनिया के सभी देशों को यकीन था कि यूक्रेन 10-15 दिन में सरेंडर कर देगा किंतु ढाई वर्ष बाद भी दोनों देश अपनी ताकत दिखाने में लगे हैं।**
- **इजराइल का इतिहास रहा है कि वह अपने दुश्मन के प्रति निर्मम रहा है इसलिए ये कहना जल्दबाजी होगी कि इजराइल अपनी संप्रभुता के साथ कोई समझौता करेगा क्योंकि ये उसका स्टाईल नहीं है वो हिज्बुल्लाह को समाप्त करके ही रुकेगा।**

पूरी हुई हिमालय दिवस की रस्म?

हिमालय सिर्फ बर्फ से ढ़का भूखंड नहीं है, बल्कि अपने आप में पूरी सभ्यता को समेटे हुए है, पानी और आक्सीजन का भंडार है, हिमालय समूचे देश को जीवन देने जैसा कार्य कर रहा है, लेकिन हिमालय और हिमालयवासियों के हितों की निरंतर अनदेखी हो रही है।

डॉ. हरीश चंद्र अंडोला
दून यूनिवर्सिटी

हिमालय जिसे 'पृथ्वी पर स्वर्ग' भी कहा जाता है, भारत की प्राकृतिक सुंदरता और सांस्कृतिक विरासत में बहुत महत्व रखता है। अब यदि हिमालय नहीं बचेगा तो जीवन भी नहीं बचेगा, क्योंकि हिमालय न सिर्फ प्राण वायु देता है, बल्कि पर्यावरण को संरक्षित करने और जैव विविधता को बरकरार रखने में भी अहम भूमिका निभाता है। इसी हिमालय में बेशकीमती जड़ी-बूटियां और वनस्पतियां भी पाई जाती हैं। लिहाजा हमें हिमालय का संरक्षण मां के रूप में करना चाहिए। हालांकि हिमालय के संरक्षण को लेकर उत्तराखंड में हर साल 9 सितंबर को हिमालय दिवस मनाया जाता है। हिमालयी पारिस्थितिकी तंत्र और क्षेत्र को संरक्षित करने के उद्देश्य से मनाए जाने वाले हिमालय दिवस के पीछे महत्वपूर्ण तथ्य ये भी है कि हिमालय प्रकृति को बचाने, बनाए रखने और प्रतिकूल मौसम की स्थिति से देश की रक्षा करने में अहम भूमिका निभाता है। वनस्पतियों, फूलों और जीवों की जैव विविधता में समृद्ध होने के अलावा, हिमालय रेंज देश में बारिश के लिए भी महत्व रखता है। इसलिए हिमालय दिवस आम जनता के बीच जागरूकता पैदा करने और संरक्षण की गतिविधियों में सामुदायिक भागीदारी निभाने के लिए एक उत्कृष्ट दिवस है। हिमालय सिर्फ बर्फ से आच्छादित भूखंड नहीं है, बल्कि वह अपने आप में पूरी सभ्यता व संस्कृति को समेटे हुए है। पानी और शुद्ध आक्सीजन का भंडार है। हिमालय समूचे देश को जीवन देने जैसा कार्य कर रहा है, लेकिन हिमालय और हिमालयवासियों के हितों की निरंतर अनदेखी हो रही है। यह अपने आप में बड़ी चिंता का विषय है। वह भी तब जब हिमालयी राज्यों के निवासी समाज व पर्यावरण बचाने के लिए निरंतर आवाज बुलंद करते आए हैं। लेकिन केंद्र ने चाहे वन अधिनियम बनाया हो अथवा जल, जमीन की नीतियां सभी हिमालयवासियों के लिए अनुपयोगी सिद्ध हुए हैं।

बिगड़ रही हिमालय की सेहत

अधिकांश नियम बनाए हो अथवा जल, जमीन से संबंधित नीतियां सभी हिमालयवासियों के लिए अनुपयोगी ही हैं। उत्तराखंड इससे अछूता नहीं है। समस्या इतनी विकराल है कि व्यक्तियों द्वारा संरक्षित प्राकृतिक संसाधन उनके नियंत्रण से बाहर हैं। कृषि, खेती और किसानी की तरफ नजर दौड़ाएं तो हिमालय स्वयं में जैविक प्रदेश है। यहां के निवासी एक ही खेत से बारहनाजा की फसल उगाते रहे हैं, लेकिन सरकारी स्तर पर पारंपरिक बीज, जैविक खाद्य, कृषि और पशुपालन के महत्व को नहीं समझा गया। कृषि भूमि की चकबंदी की बजाय कृषि विविधीकरण के नाम पर अजैविक व्यवस्था हिमालय पर थोपी गई है। इसे किसी दशा में उचित नहीं ठहराया जा सकता। उत्तराखंड में हिमालय दिवस पर क्षेत्र में जलवायु परिवर्तन व आपदाओं से पड़ रहे असर और इससे निपटने के उपायों पर चर्चा हुई। हर साल की तरह इस साल भी हिमालय से जुड़े कई कार्यक्रम, सेमिनार और गोष्ठियां हुई, हिमालय पर खूब चिंता जताई गई, लेकिन क्या हिमालय को संरक्षित करने के लिए किए जा रहे प्रयास सफल हो रहे हैं? ये सवाल इसलिए उठा रहे हैं क्योंकि हिमालय में पानी के स्रोत साल दर साल सूखते जा रहे हैं। मौसमी बदलाव लगातार हिमालय की खराब सेहत की तरफ इशारा कर रहा है। इस वर्ष हिमालय दिवस की थीम हिमालय के ईको सिस्टम को संरक्षित करना रही। दुनिया के 6 देशों से होकर गुजरने वाला हिमालय भले ही अपनी युवा अवस्था में हो, लेकिन इसकी सेहत साल दर साल खराब ही हो रही है। इसकी किसी को कोई चिंता नहीं है।

हिमालय के लिए अलग नीति बने

समूचा हिमालय क्षेत्र जड़ी-बूटियों का विपुल भंडार है, जो यहां की आर्थिकी का बड़ा स्रोत हो सकता है। यह तभी संभव है, जब स्थानीय जन जड़ी-बूटी उगाएं और सरकार इन्हें तत्काल खरीदने या बाजार उपलब्ध कराने का काम करे। हिमालयी प्रदेश उत्तराखंड पर्यावरणीय दृष्टि से अति संवेदनशील है। विकास और पर्यावरण के मध्य सामंजस्य न होने से भूस्खलन, भूधंसाव जैसी आपदाएं आती रहती हैं। वैज्ञानिकों, भूगर्भवेताओं, सामाजिक कार्यकर्ताओं, स्वैच्छिक संगठनों और पर्यावरणविदों ने समय-समय पर अध्ययन और शोध कर महत्वपूर्ण दस्तावेज सरकार को सौंपे। हिमालयी क्षेत्र में पर्यावरण जल, जंगल, जमीन की संवेदनशीलता और विकास की गतिविधियों में

हिमालय की आबोहवा लगातार खराब हो रही है, हवा में ब्लैक कार्बन, ग्लेशियरों का तेजी से पिघलना, बारिश का अनियमित होकर बादल फटने जैसी तमाम घटनाओं का होना, लगातार हिमालय की खराब सेहत का संकेत दे रहे हैं।

सावधानी से संबंधित सुझाव भी सरकार को दिए, जिन्हें तवज्जो दी जानी आवश्यक है। पर्यावरण संरक्षण के लिहाज से जंगलों को पनपाने में भी हिमालयवासियों का बड़ा योगदान है। लिहाजा, इसके एवज में हिमालय के निवासी ग्रीन बोनस के हकदार तो होते ही हैं। हिमालय व हिमालयवासियों से जुड़े ऐसे एक नहीं अनेक प्रश्न फिजां में घूमते रहते हैं। इनके समाधान के लिए आवश्यक है कि हिमालय के लिए अलग से नीति बने। इसके लिए सरकारों को गंभीरता से विचार करना चाहिए।

हिमालय का अस्तित्व खतरे में?

हिमालय ने अपनी आश्चर्यजनक सुंदरता और आकर्षण के कारण पीढ़ियों से मानव कल्पना को मोहित किया है। हाल के दिनों में हिमालय में आपदाओं की एक श्रृंखला देखी गई है जो इसके अस्तित्व को खतरे में डाल रही है। जलवायु परिवर्तन के कारण हिमनदों की बर्फ पिघल रही है, जिसने मौसम के पैटर्न को बाधित किया है। इसके अलावा अनियंत्रित शहरी विस्तार और अस्थिर विकास पद्धतियों के कारण हिमालय को भारी तबाही का सामना करना पड़ रहा है। हिमालय क्षेत्र में परिस्थिति के नाजुक संतुलन को बनाए रखने वाले कारकों को पहचानना क्षेत्रीय चिंता से कहीं अधिक, एक वैश्विक आवश्यकता बन गई है। हिमालय हमारी प्रकृति की एक शानदार लेकिन जटिल वास्तविकता को पेश करता है। यह दुनिया की सबसे ऊंची चोटियों वाली सबसे युवा पर्वत श्रृंखला है। यह क्षेत्र अपने अद्वितीय भूगोल और पारिस्थितिकी के कारण दुनिया के महत्वपूर्ण जैव-विविधता केंद्रों में एक है। यह पर्वत प्रणाली पश्चिम से पूरब तक लगभग 7.5 लाख वर्ग किलोमीटर क्षेत्र को कवर करती है। इसकी लंबाई 3,000 किलोमीटर से ज्यादा है और औसत चौड़ाई 300 किलोमीटर तक है। ऊंचाई के मामले में यह निचली घाटियों से लेकर 8,000 मीटर से ज्यादा ऊपर तक है। पश्चिम में हिमालय उत्तरी पाकिस्तान से वाया नेपाल और भूटान भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र तक फैला हुआ है। इस श्रृंखला में तीन उतनी ही व्यापक उप-श्रृंखलाएं शामिल हैं, जिनमें सबसे उत्तरी और सबसे ऊंची श्रृंखला ग्रेट हिमालय या इनर हिमालय के नाम से जानी जाती है। हिमालय का पारिस्थितिकी तंत्र बहुत नाजुक है। हिमालय की भू-विवर्तनिक (जियो-टेक्टोनिक) प्रकृति अच्छी तरह से ज्ञात है, लेकिन उसे स्वीकार तो किया जाता है पर ठीक से समझा नहीं जाता। हिमालय का भारतीय खंड अब तक बहुत बड़ी लंबाई तय कर चुका है। वर्तमान मेडागास्कर कहे जाने वाले क्षेत्र से लेकर तिब्बती क्रेटन (महाद्वीपीय स्थल मंडल का पुराना और स्थिर खंड, जो धरती की दो ऊपरी सतहों क्रस्ट और मेंटल से मिलकर बना होता है) तक जिसके तले अब भी सिकुड़ रहा है। इसी वजह से यह एक जटिल, विविध और जोखिम भरी पारिस्थिति को जन्म देता है, जिससे 'तीसरा ध्रुव' बनता है।

हिमालय की आबोहवा खराब हो रही

उत्तर-दक्षिण के अक्ष पर सौ किलोमीटर से थोड़ा अधिक दूरी तक इसमें तेज बदलाव

- **जलवायु परिवर्तन के कारण हिमनदों की बर्फ पिघल रही है, जिसने मौसम के पैटर्न को बाधित किया है, इसके अलावा अनियंत्रित शहरी विस्तार और अस्थिर विकास पद्धतियों के कारण हिमालय को भारी तबाही का सामना करना पड़ रहा है।**
- **क्या हिमालय को संरक्षित करने के लिए किए जा रहे प्रयास सफल हो रहे हैं? ये सवाल इसलिए उठा रहे हैं क्योंकि हिमालय में पानी के स्रोत लगातार सूखते जा रहे हैं, मौसमी बदलाव हिमालय की खराब सेहत की तरफ इशारा कर रहा है।**

हुआ है, जिसने संपूर्ण ग्लेशियल भूभाग को सिंधु-गंगा के सपाट मैदानों में बदल डाला। यही वह बदलाव है, जो हिमालय में चल रही गतिविधियों, खासकर बुनियादी ढांचे के विकास और उसके चरित्र पर गहरी समझदारी की मांग करता है। हिमालय की आबोहवा लगातार खराब हो रही है, हवा में ब्लैक कार्बन, ग्लेशियरों का तेजी से पिघलना, बारिश का अनियमित होकर बादल फटने जैसी तमाम घटनाओं का होना, लगातार हिमालय की खराब सेहत का संकेत दे रहे हैं। प्रदूषण, मानव क्रियाकलाप यहां की पारिस्थि पर लगातार प्रभाव डाल रहा है, ऐसे में जल्द प्रभावी कदम नहीं उठाए जाते हैं तो हिमालय ही मानव के अस्तित्व के लिए सबसे बड़ा खतरा होगा। वैसे भी पूरी हिमालय श्रृंखला में उत्तराखंड का हिमालय सबसे अधिक संवेदनशील है, इसलिए यहां तेजी से भूस्खलन होता है। बादल फटने की घटनाएं भी अधिक होती हैं। इसलिए हिमालय की पारिस्थिति तंत्र को होने वाले नुकसान को रोकने और जलवायु परिवर्तन के खतरों से बचाने के लिए लोगों को जागरूक करना आवश्यक है। हिमालय का क्षेत्र पानी, वनस्पति और जैव विविधता के मामले में समृद्ध है, इसलिए इन संसाधनों की सुरक्षा करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। जबकि लोग इसका बेहिसाब दोहन कर रहे हैं जिस पर तत्काल रोक लगानी होगी। हिमालय के आस-पास रहने वाले स्थानीय लोगों की आजीविका मुख्य रूप से प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर करती है। हिमालय दिवस का उद्देश्य उनके संरक्षण और विकास को भी बढ़ावा देना है। इसलिए हिमालय क्षेत्र में ग्लेशियरों के पिघलने और जलवायु परिवर्तन के अन्य प्रभावों के प्रति जागरूकता से ही इन खतरों से निपटना जा सकता है। वनों का कटान रोकने और वृक्षारोपण को प्रोत्साहित करने के लिए सामूहिक वृक्षारोपण कार्यक्रम तो होते हैं, लेकिन धरातल पर पौधे कम लगते हैं जबकि कागजों में पौधारोपण के रिकार्ड टूटते हैं। क्योंकि जिस हिसाब से हर साल सरकार पौधा रोपण करती है उससे तो दस साल में ही पौधा रोपने के लिए जगह नहीं बचनी चाहिए थी, लेकिन हिमालय की सुरक्षा के नाम पर हो रहे भ्रष्टाचार ने हिमालय को खतरे के स्तर पर पहुंचा दिया है।

दो सितंबर को बुग्याल दिवस मनाने की घोषणा

हिमालय दिवस पर आयोजित एक कार्यक्रम में मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने हिमालय के सरोकारों से जुड़े विषयों के लिए महानिदेशक यूकॉस्ट दुर्गेश पंत के संयोजन में एक कमेटी बनाने का ऐलान करते हुए हिमालय के संरक्षण और संवर्धन के लिए कार्य कर रहे लोगों का आभार व्यक्त किया। उन्होंने हर वर्ष दो सितंबर को बुग्याल संरक्षण दिवस मनाने की घोषणा भी की। मुख्यमंत्री का कहना था हमें हिमालय, जल और जंगल के संरक्षण की दिशा में मिलकर प्रयास करने होंगे। इस साल भी उत्तराखंड में कई जगह आपदा आई। पिछले साल 29 नवंबर 2023 को सिलक्यारा टनल में फंसे श्रमिकों को सुरक्षित बाहर निकाला गया। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने कहा कि हिमालय दिवस का यह आयोजन सिर्फ एक सप्ताह का कार्य नहीं होना चाहिए बल्कि हर दिन हमें प्रकृति को बचाने की कोशिश करनी चाहिए। सरकार जल स्रोतों और नदियों के पुनर्जीवीकरण की दिशा में निरंतर काम कर रही है। इसके लिए स्प्रिंग एंड रिवर रिज्यूवनेशन अथॉरिटी का गठन किया गया है। हेस्को के संस्थापक और पद्मभूषण डॉ. अनिल प्रकाश जोशी ने हिमालय दिवस पर कहा कि देश के कई बड़े संस्थान हिमालय के संरक्षण के लिए अध्ययन कर रहे हैं। इन सभी संस्थाओं को एक मंच पर लाकर हिमालय विकास पत्र पर कार्य करने की आवश्यकता है। हिमालय के संरक्षण के लिए विकास वैज्ञानिकों के अनुसंधान के अनुरूप होना चाहिए। हिमालय के लिए विकास का मॉडल बनना जरूरी है। आज जिस तेजी से ग्लेशियर पिघल रहे हैं, वो चिंता का विषय है।

साहित्यकारों का एक टाइप खामोखां

सामान्य फेसबुकिया जब यह कवियों जैसा, 'तु मुझे बुला, मैं तुझे बुलाऊ' वाला, गिव एंड टेक का व्यवहार फेसबुक पर देखता है, तो दांतों तले उंगली दबाता है,'माई गॉड! इस आदमी की इतनी पहुंच है!' लेख में कुछ भी खींचा नहीं है, जो भी लिखा है, सच तथा भुक्तभोग है।

ओमप्रकाश मंजुल
पूरनपुर, पीलीभीत

साहित्यकारों के अनेक प्रकार होते हैं। उन सबका यहां वर्णन करके मैं लेख को राजपाल यादव से दारा सिंह नहीं बनाना चाहता, पर उन्हीं में से एक टाइप, 'खामोखां साहित्यकार' का भी होता है। इनमें से एक-दो खामोखां टाइप साहित्यकार मेरे निकटस्थ रह चुके हैं। यहां इनके कुलक्षणों (कुछ लक्षणों) को लक्ष्य करने का निम्न प्रयास है...इन खामोखां टाइप साहित्यकारों का सोशल मीडिया के माध्यम से कुछ उत्तम और मध्यम ज्ञान हो जाता है, कि वे उदार और निर्मल भी हैं। तो खामोखां टाइप साहित्यकार सोशल मीडिया पर किसी न किसी तरह नैकट्य प्राप्त कर धीरे-धीरे चहेते बन जाते हैं। जब ये पूर्ण यकीन हो जाता है कि इष्टदेव इतने प्रसन्न कर लिए हैं कि अब उनसे कैसा भी वर मांगा जा सकता है, तो एक दिन शुभ मुहूर्त में ये उन्हें फोन लगाते हैं। 'गुरूजी...सर...(इष्ट को जो शब्द पसंद हो) मैं अपनी एक रचना की समीक्षा आपके कर कमलों से लिखवाना चाहता हूं। आपकी समीक्षा मेरे लिए बहुत महत्व रखती है। यदि आप अपने बिजी समय में से कुछ समय निकाल कर उस पर दो शब्द लिख देंगे, तो मेरा करियर बन जाएगा और मैं आपका आजीवन आभारी रहूंगा।' भला इतने अच्छे शिष्य या फैन को कौन मना कर सकता है। सो गुरू जी या सर फोन पर बीच-बीच में यथावश्यक रेस्पांड करते हुए समीक्षा की स्वीकृति दे ही देते हैं। इधर खामोखां टाइप साहित्यकार अपनी कोई टूटी-फूटी तुकबंदी या दूरदराज की पत्र-पत्रिका से फटाई कविता या कुछ भी सर के पास भेज देता है और जैसे ही सर द्वारा लिखित समीक्षा मिलती है कि सरऽऽ से उसे फेसबुक, व्हाट्सऐप, गंगाघाट, जमुनाघाट, श्मशानघाट, सुनसान घाट, जहां-जहां तक संभव है, पर भेज देता है। समझ लीजिए यहीं से खामोखां टाइप में साहित्यकार का अकुरण होता है।

साजिश-ए-साहित्यकार

यह साहित्यिक अंकुरण मुरझाता नहीं, आगे निम्नांकित खाद, पानी और हवा के समुचित योग-संयोग-प्रयोग से उत्तरोत्तर विकास को प्राप्त होता रहता है। गुरू जी का इतना घनिष्ठ सानिध्य पाकर स्वाभाविक है, खामोखां टाइप, गुरू जी की जन्म तिथि जान ही गया होगा। वैसे भी फेसबुक प्रोफाइल पर अधिकतर अच्छे लोगों की जन्म तिथि अंकित होती ही है। खामोखां टाइप, गुरू जी के जन्म दिवस की अति शिद्दत से प्रतीक्षा करता रहता है और जैसे ही यह पावन व महान दिन आता है कि आधी रात को ही 'आज देश के राष्ट्रीय स्तर के महान साहित्यकार परम आदरणीय श्री...का पवित्र अवतरण दिवस है' और सर की उपलब्धियों तथा सर जी को शुभकामनाओं के नाम न जाने क्या-क्या लफ्फाजी कर उसे फेसबुक पर फेंक देता है। समझ लीजिए सर जी बिन पैसे के ही खामोखां टाइप के हाथ बिक गए और अगला बिना किसी व्यय, विज्ञापन के लोगों की नजरों में किसी महान साहित्यकार से संबंधित साहित्यकार बन गया। आज सोशल मीडिया के जमाने में किसी भी खामोखां टाइप को जमाने में सर्वाधिक सहायता पुस्तक-प्रदर्शन संस्कृति करती है। वह किसी न किसी तरह से अपने मूल मैटर या किन्हीं दूसरों के मैटरों को उड़ा कर एक बुक या बुकलेट छपवा लेता है। (साहित्य के क्षेत्र में इसे बुक न समझ कर किसी भी खामोखां टाइप को साहित्यकार की मंजिल तक पहुंचाने वाला बाजीगर का बजरबट्टू समझिए, जिसे घुमाकर बाजीगर खन...खन करने वाले फटाफट-फटाफट सिक्के पैदा करता है।) इस पुस्तिका को घुमाकर एक खामोखां टाइप न केवल साहित्यकार के रूप में मान्य और प्रतिष्ठित हो जाता है, वरन वह प्रतिष्ठित और वरिष्ठ साहित्यकारों की पंगत में पहुंच जाता है। वह उदारमना साहित्यकारों के यहां घूमता है और उन्हें अपनी पकटिया पकड़ाता है। बदले में वृद्ध साहित्यकार भी अपनी कोई मोटी पुस्तक उसे भेंट कर देते हैं और चाय पिलाते हैं अलग से। फोटो का शौक वरिष्ठ व वृद्ध साहित्यकारों में भी कम नहीं होता। खामोखां टाइप इस तमाशे की सेल्फी लेते ही सोशल मीडिया पर वायरल कर देता है और वह एक क्षण में पूरी दुनिया की दृष्टि में एक प्रमाणित व प्रामाणिक साहित्यकार के रूप में छा जाता है।

सोशल मीडिया से ही जुड़ा 'शुक्रिया' भी खामोखां टाइप के बहुत काम आता है। जिसके लिए हर खामोखां को मीडिया का शुक्रिया अदा करना चाहिए। एक खामोखां किसी भी ऐरा-गैरा-नत्थू-खैरा की पोस्ट को लाइक करता रहता है या उनकी चाटुकारिता करता रहता है और बदले में अपनी पोस्टों पर उन लोगों से ऐसी ही प्रशंसा पाता रहता है। इन लोगों में कुछ वास्तव में प्रतिष्ठित और वरिष्ठ लोग भी होते हैं। सामान्य फेसबुकिया जब यह कवियों जैसा, 'तु मुझे बुला, मैं तुझे बुलाऊं' वाला, गिव एंड टेक का व्यवहार फेसबुक पर देखता है, तो दांतों तले उंगली दबाता है,'माई गॉड! इस आदमी की इतनी पहुंच है!' लेख में कुछ भी खींचा नहीं है। जो भी लिखा है, सच तथा भुक्तभोग है। लेख और लंबा न हो इसलिए रहीम के इस दोहे के साथ यहीं पर हाथ खींच रहा हूं।

यों रहीम जस होता है, उपकारी के संग।
बांटन वारे को लगै, ज्यों मेंहदी को रंग।। ●

कानों में कंगना

कंगना के 'लड़का' का मतलब 'लड़का' होने से है। समझ गए होंगे, समझदार के लिए इशारा काफी होता है, वैसे लड़के तो हमारे यहां 50-60 साल के भी हैं और बड़े -बड़े ऊंचे खानदानों से वास्ता रखते हैं, पर उनकी हरकतें अभी भी नाबालिग वाली हैं।

कानों में कंगना शीर्षक पढ़कर आप समथिंग नहीं तो यत्किंचित अवश्य विस्मित होंगे। राजा राधिका रमण प्रसाद सिंह की कहानी का शीर्षक, 'कानों में कंगना' पढ़

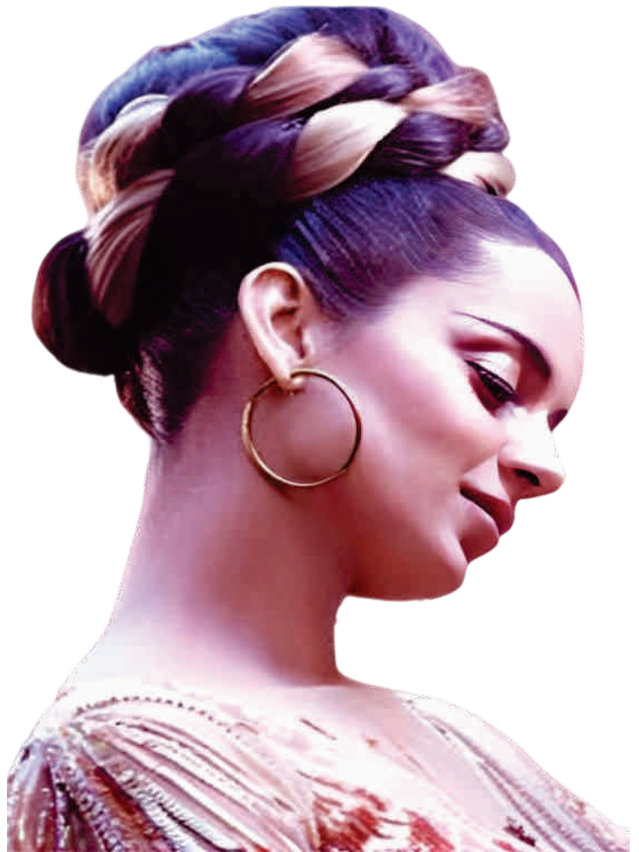

कर फर्स्ट ऑफ आल मैं भी ऐसा ही चकरा गया था। पर कहानी की स्वर्ग से सीधी उतरी निर्दोष सी नायिका किरन, जिस पर दुनियादारी का इतना भी लेष-दोष नहीं था, कि कंगना हाथों में पहने जाते हैं या कानों में, का ज्ञान न हो, को पढ़ना शुरू किया तो उसी में गहरा पैठता चला गया। यह लेख भी कंगना पर ही केंद्रित है। इसकी नायिका भी 'कानों में कंगना' की नायिका की भांति नितांत निर्दोष है, जिसे सिने अभिनेत्री होने के बावजूद शादी के नाम पर मात्र एक अदद लड़के की दरकार है, जबकि फिल्म जगत की एक अदना अदाकारा भी अपनी जिंदगी में औसतन ढाई-तीन मर्दों को लेकर सती होती है। मेरा ख्याल है इस लेख को भी शुरू करते ही आप तब तक नहीं छोड़ेंगे, जब तक कंगना में पूरी तरह न पैठ जाएं। अभी कुछ दिन पूर्व ही कंगना ने जनता की अदालत, जो वास्तव में 'पत्रकार की अदालत' होती है, में कहा था कि, 'उसे कोई लड़का मिल जाए, तो वह अभी शादी कर लेगी।' शादी करने को कोई इतना 'आर्जूमान' या 'त्राहिमाम' यानी आर्त फीमेल पार्ट आपने आज तक कहीं देखा है? अधैर्यमान से अधैर्यमान भी अपने मुंह से नहीं कहती 'आ! मेरे गले अभी लग जा। अब एक पल भी नहीं रहा जा रहा है।' जब से यह कंगना ने कहा है, तब से लोगों के कानों में कंगना की खन...खन गूंज रही है। आज तक इतना सरल, सुरीला और रसीला ऑफर मिला है किसी की ओर से। कोई लड़की हो, वह भी स्वरुपवती हो, स्वरूपवती ही नहीं सत्तावती भी हो और खुद लड़के से कहे, 'विवाह के लिए मंडप, पंडित, गाजा, बाजा सबका इंतजाम मैं कर लूंगी, तुम बस पटा पर बैठकर गांठ बंधाने के लिए आ जाओ।' सच कह रहा हूं। एक अबला के इस आर्तानुरोध (गंभीर अपील) पर मैं दया और हया से पिघला जा रहा हूं। मुझे हया या शर्म इसलिए नहीं आ रही है, कि मैं बुढ़ाने लगा हूं, वरन मुझे एक लाचार-बेचारी मैडम पर दया इसलिए आ रही है, कि मैं पहले से ही किसी के काम आने हेतु रजिस्टर्ड होने के कारण अब किसी दूसरे के काम नहीं आ सकता। वरना शादी के लिए कोई खास उम्र नहीं होती। इसको प्रमाणित करने के लिए एक किस्सा है... एक युवक विवाह के बारे में एक विवाह-विशेषज्ञ से परामर्श लेने गया। विशेषज्ञ ने उससे कहा, अभी तुम्हारी शादी के लायक आयु नहीं है। कुछ समय बाद आना। जब युवक कुछ समय बाद विशेषज्ञ के पास पहुंचा, तो विशेषज्ञ बोला, अब शादी की आयु निकल चुकी है। कहते हैं, इसलिए हकीम लुकमान मरते समय अपनी औलादों से कह गए थे, औलादों मरने की तो उम्र होती है, पर शादी करने की कोई उम्र नहीं होती।

मुफ्त की सलाह

अपने होनहार नौनिहालों को एक निशुल्क परामर्श मैं देना चाहता हूं। वह यह कि कंगना को ऐसी-वैसी तारनहारी या तारिका न समझ लेना, अन्यथा दही की जगह चूने का मजा आ जाएगा। कंगना जब 'लड़का' कहती है, तो उसका कोई अर्थ होता होगा, वरना हम रोज ही करोड़ों लड़के देखते हैं। क्या वे कंगना को नहीं दिखाई दे रहे होंगे? कंगना के 'लड़का' का मतलब 'लड़का' होने से है। समझ गए होंगे। समझदार के लिए इशारा काफी होता है। लड़के तो हमारे यहां 55-60 साल के भी हैं और बड़े -बड़े ऊंचे खानदानों से वास्ता रखते हैं, पर उनकी हरकतें नाबालिग वाली हैं। सो आप लोग कमर कसकर और मूंछों पर ताव देते हुए कंगना के स्वयंवर में आइए, पर आने से पहले यह अवश्य देख लीजिए कि आप इस यूनिवर्सल स्वयंवर में आने लायक भी हैं? अलबत्ता आपको एक मिनी गाइडेंस यह भी अता फरमा रहा हूं कि कंगना के स्वयंवर में सम्मिलित होने से पूर्व उनकी फिल्म, 'इमरजेंसी' को अवश्य देख लेना। कंगना का पूरा नाम, 'कंगना रणौत', यानी रण में दुश्मनों से दो-दो हाथ करने वाली क्षत्राणी है। अभी तक तो आपने कंगना के बस बयान और डायलॉग ही सुने होंगे। ये तो कंगना के मात्र क्षात्र व जौहर धर्मी ट्रेलर हैं, पूरी पिक्चर तो 'इमरजेंसी' है। 'इमरजेंसी' से आप को कंगना का मौलिक स्वभाव जानने में मदद मिलेगी। न मानों तो इमरजेंसी देख लेना।

'हम नेक-ओ-बद हजूर को समझाएं देते हैं,
मानो न मानो, जान-ए-जहां इख्तियार है।' ●

राष्ट्रवाद को समर्पित संघ

सन 1962 के भारत-चीन युद्ध में प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरु संघ की भूमिका से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने संघ को सन 1963 के गणतंत्र दिवस की परेड में सम्मिलित होने का निमंत्रण दिया। केवल दो दिनों की पूर्व सूचना पर तीन हजार से भी ज्यादा स्वयंसेवक पूर्ण गणवेश में वहां उपस्थित हो गये।

कमल कांत शर्मा

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) विश्व का सबसे बड़ा राष्ट्रवादी, अर्धसैनिक, स्वयंसेवक संगठन है। शताब्दी वर्ष में संघ का एक लाख केन्द्रों तक विस्तार किया जायेगा। मुख्य रूप से युवा शक्ति को संघ से जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है। ग्रामीण क्षेत्रों में विकास की दृष्टि से गौसेवा और ग्राम विकास की योजना संचालित की जा रही है। संघ सीधे चुनाव के कार्य में सम्मिलित नहीं होता है, परन्तु लोकमत जागरण का कार्य करता है और संघ की विचारधारा का अनुसरण करने वाली भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) वर्तमान में केन्द्र और कई राज्यों में सत्तारूढ़ है। भाजपा दुनिया की सबसे बड़ी पार्टी बन चुकी है। संघ का गौरवशाली इतिहास है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना 27 सितम्बर, 1925 को विजयादशमी पर डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार द्वारा की गई थी। संघ की शताब्दी को लेकर स्वयं सेवकों में उत्साह है। इसका उद्देश्य निःस्वार्थ भाव से राष्ट्र की सेवा के लिए राष्ट्रभक्त स्वयंसेवक एवं अर्धसैनिक तैयार करना है। स्वयंसेवकों को प्रारंभिक रूप से हिन्दू अनुशासन के माध्यम से चरित्र प्रशिक्षण प्रदान करना और हिन्दू राष्ट्र बनाने के लिए हिन्दू समुदाय को एकजुट करना है। संगठन भारतीय संस्कृति और नागरिक समाज के मूल्यों को बनाए रखने के आदर्शों को बढ़ावा देता है और बहुसंख्यक हिन्दू समुदाय को मजबूत करने के लिए हिन्दुत्व की विचारधारा का प्रचार करता है। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान यूरोपीय अधिकार-विंग समूहों से आरएसएस को प्रेरणा मिली। धीरे-धीरे, आरएसएस एक प्रमुख हिन्दू राष्ट्रवादी छतरी संगठन के रूप में उभरा। कई संबद्ध संगठनों को जन्म दिया, जिसने वैचारिक मान्यताओं को फैलाने के लिए अनेक शाखाएं स्थापित कीं। आरएसएस में संगठनात्मक रूप से सबसे ऊपर सरसंघचालक का स्थान होता है जो पूरे संघ का दिशा-निर्देशन करते हैं। सरसंघचालक की नियुक्ति मनोनयन द्वारा होती है। प्रत्येक सरसंघचालक अपने उत्तराधिकारी की घोषणा करता है। वर्तमान में संघ के सरसंघचालक मोहन भागवत हैं। संघ के ज्यादातर कार्यों का निष्पादन शाखा के माध्यम से ही होता है, जिसमें सार्वजनिक स्थानों पर सुबह या शाम के समय एक घंटे के लिए स्वयंसेवकों का परस्पर मिलन होता है। वर्तमान में पूरे भारत में संघ की लगभग पचपन हजार से ज्यादा शाखा लगती हैं। वस्तुतः शाखा ही संघ की बुनियाद है, जिसके बल पर इतना विशाल संगठन खड़ा है। शाखा की सामान्य गतिविधियों में खेल, योग, वंदना, भारत एवं विश्व के सांस्कृतिक पहलुओं पर बौद्धिक चर्चा-परिचर्चा शामिल है।

दुनियाभर में है संघ परिवार की उपस्थिति

भारत के साथ ही विश्व के अन्य देशों में भी शाखाएं हैं। शाखाओं का नाम अलग-अलग है। कहीं पर भारतीय स्वयंसेवक संघ तो कहीं हिन्दू स्वयंसेवक संघ के माध्यम से राष्ट्रभक्त स्वयंसेवकों को तैयार किया जाता है। शाखा में कार्यवाह का पद सबसे बड़ा होता है। उसके बाद शाखाओं का दैनिक कार्य सुचारु रूप से

1 शताब्दी वर्ष में युवा शक्ति को स्वयंसेवक बनाने पर बल

2 विश्व का सबसे बड़ा राष्ट्रवादी संगठन आरएसएस

3 उपलब्धियों का गौरवशाली इतिहास

संघ की मान्यता है कि हिन्दुत्व एक जीवन पद्धति का नाम है, किसी विशेष पूजा पद्धति को मानने वालों को हिन्दू कहते हों ऐसा नहीं है। हर वह व्यक्ति जो भारत को अपनी जन्म-भूमि मानता है, मातृ-भूमि व पितृ-भूमि मानता है, अर्थात जहां उसके पूर्वज रहते आये हैं तथा उसे पुण्य भूमि भी मानता है, जहां उसके देवी-देवताओं का वास है, वह हिन्दू है।

चलाने के लिए मुख्य शिक्षक का पद होता है। शाखा में बौद्धिक व शारीरिक क्रियाओं के साथ स्वयंसेवकों का पूर्ण विकास किया जाता है। जो भी सदस्य शाखा में स्वयं की इच्छा से आता है, वह स्वयंसेवक कहलाता है। दुनिया के लगभग 80 से अधिक देशों में शाखाएं अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त हैं और लगभग 200 से अधिक संगठन क्षेत्रीय प्रभाव रखते हैं। कुछ प्रमुख संगठन संघ की विचारधारा को आधार मानकर राष्ट्र और समाज के बीच सक्रिय हैं। कुछ संगठन राष्ट्रवादी, सामाजिक, राजनैतिक, युवा वर्गों के बीच में कार्य करने वाले, शिक्षा, सेवा, सुरक्षा, धर्म और संस्कृति के क्षेत्र तथा संतों के बीच देश से लेकर विदेश तक सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं। संघ की राजनीतिक इकाई के अतिरिक्त कई संगठन हैं, जिनमें सहकार भारती, भारतीय किसान संघ, भारतीय मजदूर संघ, सेवा भारती, राष्ट्र सेविका समिति, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद, विश्व हिन्दू परिषद, हिन्दू स्वयंसेवक संघ, स्वदेशी जागरण मंच, सरस्वती शिशु मंदिर, विद्या भारती, वनवासी कल्याण आश्रम, मुस्लिम राष्ट्रीय मंच, बजरंग दल, लघु उद्योग भारती, भारतीय विचार केन्द्र, विश्व संवाद केन्द्र, राष्ट्रीय सिख संगत, विवेकानन्द केन्द्र प्रमुख हैं। संघ के विभिन्न वर्ग बौद्धिक और शारीरिक रूप से स्वयंसेवकों को समाज, राष्ट्र और धर्म की शिक्षा भी देते हैं। दीपावली वर्ग तीन दिनों का होता है। यह वर्ग नगर स्तर पर आयोजित किया जाता है। हर साल दीपावली के आसपास आयोजित होता है। शीत शिविर या (हेमंत शिविर) जिला या विभाग स्तर पर आयोजित किया जाता है। यह हर साल दिसंबर में होता है। निवासी वर्ग शाम से सुबह तक होता है। यह हर महीने होता है। यह वर्ग शाखा, नगर या तालुका स्तर पर आयोजित होता है। बौद्धिक वर्ग हर महीने अथवा दो या तीन माह में एक बार होता है। बौद्धिक वर्ग की तरह शारीरिक वर्ग का आयोजन होता है। संघ शिक्षा वर्ग प्राथमिक, प्रथम, द्वितीय और तृतीय वर्ष कुल चार प्रकार से होता है।

सामाजिक समानता के लिए संघ का योगदान

हिन्दू धर्म में सामाजिक समानता के लिए संघ ने दलितों व पिछड़े वर्गों को मन्दिर में पुजारी पद के प्रशिक्षण का पक्ष लिया है। संघ के अनुसार सामाजिक वर्गीकरण ही हिन्दू मूल्यों के हनन का कारण है। महात्मा गांधी ने 1934 में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शिविर की यात्रा के दौरान पूर्ण अनुशासन देखा और छुआछूत की अनुपस्थिति पायी। उन्होंने व्यक्तिगत रूप से पूछताछ की और जाना कि वहां लोग एक साथ रह रहे हैं तथा एक साथ भोजन कर रहे हैं। स्वयंसेवकों की राहत और पुनर्वास में पुरानी परंपरा रही है। संघ ने 1971 में उड़ीसा के चक्रवात और 1977 में आंध्र प्रदेश के चक्रवात में राहत कार्यों में महती भूमिका निभाई थी। संघ से जुड़ी सेवा भारती ने जम्मू-कश्मीर के आतंकवाद से परेशान अनाथ बच्चों को गोद लिया है, जिनमें अधिकतर मुस्लिम हैं। संघ की उपस्थिति भारतीय समाज के हर क्षेत्र में महसूस की जा सकती है। उदाहरण के तौर पर सन 1962 के भारत-चीन युद्ध में प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू संघ की भूमिका से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने संघ को सन 1963 के गणतंत्र दिवस की परेड में सम्मिलित होने का निमंत्रण दिया। केवल दो दिनों की पूर्व सूचना पर तीन हजार से भी ज्यादा स्वयंसेवक पूर्ण गणवेश में वहां उपस्थित हो गये। दादरा, नगर हवेली और गोवा के भारत में विलय के लिए संघ की निर्णायक भूमिका रही। 21 जुलाई 1954 को दादरा को पुर्तगालियों से मुक्त कराया गया, 28 जुलाई को नरोली और फिपारिया मुक्त कराए गए और फिर राजधानी सिलवासा मुक्त कराई गई। संघ के स्वयंसेवकों ने दो अगस्त, 1954 की सुबह पुर्तगाल का झंडा उतारकर भारत का तिरंगा फहराया, पूरा दादरा नगर हवेली पुर्तगालियों के कब्जे से मुक्त करा कर भारत सरकार को सौंप दिया। इसी प्रकार संघ के स्वयंसेवक 1955 से गोवा मुक्ति संग्राम में प्रभावी रूप से शामिल हुए। गोवा में सशस्त्र हस्तक्षेप करने से जवाहरलाल नेहरू के इन्कार करने पर जगन्नाथ राव जोशी के नेतृत्व में संघ के कार्यकर्ताओं ने गोवा पहुंच कर आंदोलन शुरू किया, जिसके कारण जगन्नाथ राव जोशी सहित संघ के कार्यकर्ताओं को दस वर्ष की सजा हुई। हालत बिगड़ने पर अंततः भारत को सैनिक हस्तक्षेप करना पड़ा और 1961 में गोवा स्वतंत्र हुआ।

आपातकाल में हुई संघ की अग्निपरीक्षा

भारत की तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने 25 जून, 1975 को सभी संवैधानिक व्यवस्थाओं, राजनीतिक शिष्टाचार तथा सामाजिक मर्यादाओं को ताक पर रखकर सिर्फ और सिर्फ अपना राजनीतिक अस्तित्व तथा सत्ता बचाने के लिए देश में आपातकाल थोप दिया। उस समय इंदिरा गांधी की अधिनायकवादी नीतियों, भ्रष्टाचार की पराकाष्ठा और सामाजिक अव्यवस्था के विरुद्ध सर्वोदयी नेता जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में 'समग्र क्रांति आंदोलन' चल रहा था। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, जनसंघ तथा अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद का पूर्ण समर्थन मिल जाने से यह आंदोलन शक्तिशाली, संगठित देशव्यापी आंदोलन बन गया। उस दौरान देश में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ही एकमात्र ऐसी संगठित शक्ति थी, जो इंदिरा गांधी की तानाशाही को टक्कर देकर धूल चटा सकती थी। इस संभावित प्रतिकार को ध्यान में रखते हुए इंदिरा गांधी ने संघ पर प्रतिबंध लगा दिया। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अलावा अन्य छोटी-मोटी 21 संस्थाओं को प्रतिबंधित किया गया। किन्तु राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अलावा किसी की ओर से विरोध का एक भी स्वर नहीं उठा। इंदिरा गांधी ने सभी राज्यों के पुलिस अधिकारियों को संघ के कार्यकर्ताओं की धरपकड़ तेज करने के आदेश दिये। संघ के भूमिगत नेतृत्व ने चुनौती को स्वीकार करके समस्त भारतीयों के लोकतांत्रिक अधिकारों की रक्षा करने का बीड़ा उठाया और एक राष्ट्रव्यापी अहिंसक आंदोलन छेड़ा। थोड़े ही दिनों में देशभर की सभी शाखाओं के तार भूमिगत केन्द्रीय नेतृत्व के साथ जुड़ गए।

स्वयं सेवक ने बताई इमरजेंसी की आपबीती

इमरजेंसी लगने पर आरएसएस से जुड़े लोगों को पकड़कर जेल में डाला जा रहा था। उस दौरान स्वयं सेवक मदन मोहन अग्रवाल किशोर अवस्था में थे। वर्ष 1975 में 27-28 जून की रात ढाई बजे थे। उन्होंने घड़ी की सूई साढ़े चार बजे पर कर ली, जिससे पुलिस पूछे कि रात में कहां जा रहे हो, तो मॉर्निंग वॉक का बहाना बना सकें। दरअसल उनके बड़े भाई आरएसएस के वरिष्ठ पदाधिकारियों थे और अपने साथियों को सचेत करने का काम उन्हें सौंपा था, लेकिन जब तक वह गंतव्य पर पहुंचे, तब तक पुलिस की रेड पड़ चुकी थी और स्वयं सेवक के घर पर ताला लगा था। इमरजेंसी और उसके बाद भी समाचार पत्र और पत्रिकाओं के माध्यम से राष्ट्रवाद की अलख जगाने का काम किया। आरएसएस के मुखपत्र 'पांचजन्य' व 'राष्ट्रधर्म' को न्यूज पेपर एजेंट नहीं वितरित करते थे। मदन मोहन जैसे स्वयं सेवक घर-घर पहुंचाते थे।

हिन्दुओं के बहुमत से है भारत धर्मनिरपेक्ष

संघ के आलोचकों द्वारा संघ को एक अतिवादी दक्षिणपंथी संगठन बताया जाता रहा है एवं हिन्दूवादी और फासीवादी संगठन के तौर पर संघ की आलोचना भी की जाती रही है। जबकि संघ के स्वयंसेवकों का यह कहना है कि सरकार एवं देश की अधिकांश पार्टियां अल्पसंख्यक तुष्टीकरण में लिप्त रहती हैं। विवादास्पद शाहबानो प्रकरण एवं हज-यात्रा में दी जाने वाली सब्सिडी इत्यादि सरकारी नीति इसका प्रमाण हैं। संघ का यह मानना है कि ऐतिहासिक रूप से हिन्दू स्वदेश में हमेशा से ही उपेक्षित और उत्पीड़ित रहे हैं और वह सिर्फ हिन्दुओं के जायज अधिकारों की ही बात करता है जबकि उसके विपरीत उसके आलोचकों का यह आरोप है कि ऐसे विचारों के प्रचार से भारत की धर्मनिरपेक्ष बुनियाद कमजोर होती है। संघ की मान्यता है कि हिन्दुत्व एक जीवन पद्धति का नाम है, किसी विशेष पूजा पद्धति को मानने वालों को हिन्दू कहते हों ऐसा नहीं है। हर वह व्यक्ति जो भारत को अपनी जन्म-भूमि मानता है, मातृ-भूमि व पितृ-भूमि मानता है, अर्थात जहां उसके पूर्वज रहते आये हैं तथा उसे पुण्य भूमि भी मानता है, जहां उसके देवी-देवताओं का वास है, वह हिन्दू है। संघ की यह भी मान्यता है कि भारत यदि धर्मनिरपेक्ष है तो इसका कारण भी केवल यह है कि यहां हिन्दू बहुमत में हैं।

आजादी से राखी का संबंध

एक नई नवेली दुल्हन अचानक विधवा हो जाती है, इस सीन में राखी एक ही पल में अपने हाथ की चूड़ियां तोड़कर, माथे से बिंदिया मिटाकर राखी ने जिस तरह सब कुछ तहस-नहस किया उसे देखकर तो सुनील दत्त ही नहीं, उनकी सारी यूनिट हैरान रह गई थी।

अरुण सिंह
मुंबई ब्यूरो

15 अगस्त, 1947 जब पूरा भारत अंग्रेजों की गुलामी से आजादी मिलने का जश्न मना रहा था, उसी दिन सुबह-सुबह बंगाल के नदिया जिले के राणाघाट में एक साधारण बंगाली परिवार में बेहतरीन अदाकारा राखी का जन्म हुआ था। उनका पूरा नाम राखी मजूमदार है। यह इत्तेफाक ही है कि आजादी के दिन पैदा हुई राखी मजमूदार के ख्याल भी आजाद हैं। उनके पिता का राणाघाट में जूतों का व्यापार था। लेकिन बंटवारे के बाद स्थिति बदल गई और उनका परिवार पश्चिम बंगाल में आकर बस गया। राखी ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा स्थानीय स्कूल से पूरी की। राखी की उम्र सिर्फ 16 साल की भी नहीं थी जब 1963 में उनके पिता ने उनकी शादी बंगाली पत्रकार और फिल्म निर्देशक अजय विश्वास से करवा दी थी। यह विवाह परिवार की इच्छा से हुआ, लेकिन शादी दो साल भी नहीं चल सकी और 1965 में दोनों अलग हो गए। अजय विश्वास ने हिंदी और बांग्ला में 'प्रथम प्रेम', 'संबंध', 'समझौता' और 'भाग्य चक्र' जैसी फिल्में बनाई थीं।

राखी की ये पहली शादी नाकाम हुई तो राखी ने फिल्मों का रुख किया। शुरू में उन्होंने तीन बांग्ला फिल्में कीं, बतौर अभिनेत्री उन्होंने अपने फिल्मी कॅरियर की शुरूआत 1967 में रिलीज हुई बंगला फिल्म 'वधूवरण' से की। इस बीच उनकी मुलाकात निर्माता-निर्देशक सुनील दत्त से हुई जिन्होंने उनकी प्रतिभा को पहचान कर अपनी नई फिल्म 'रेशमा और शेरा' में काम करने का प्रस्ताव दिया, जिसे राखी ने सहर्ष स्वीकार कर लिया। हालांकि फिल्म के निर्माण में देर होने के कारण राखी की हिंदी फिल्म 'जीवन मृत्यु' पहले रिलीज हो गई।

राजश्री प्रोडक्शन के बैनर तले बनी फिल्म 'जीवन मृत्यु' में राखी के नायक की भूमिका धर्मेंद्र ने निभाई। पारिवारिक पृष्ठभूमि पर बनी यह फिल्म सुपरहिट साबित हुई। इस फिल्म में उन पर फिल्माया यह गीत 'झिलमिल सितारों का आंगन होगा...।' श्रोताओं के बीच आज भी लोकप्रिय है। फिल्म और गीत की सफलता के बाद राखी बतौर अभिनेत्री पहचान बनाने में कामयाब हो गई। इसके बाद बॉलीवुड में अभिनेत्री राखी को एक ऐसी अभिनेत्री के तौर पर पहचाना जाने लगा जिन्होंने 70 और 80 के दशक में अपने रूमानी अंदाज और भावपूर्ण अभिनय से सिनेमा प्रेमियों को दीवाना बनाया। 1971 में राखी के फिल्मी कॅरियर की एक और सुपरहिट फिल्म 'शर्मीली' प्रदर्शित हुई। इस फिल्म में उन्होंने जुड़वा बहनों की भूमिका निभाई जिसमें एक किरदार ग्रे शेडस लिए हुए था। अपने शुरुआती कॅरियर में ग्रे शेड्स वाली भूमिका निभानी किसी भी नई अभिनेत्री के लिए जोखिम भरा काम होता था, लेकिन राखी ने इसे एक चैलेंज के रूप में लिया और अपने सधे हुए अभिनय से समीक्षकों के साथ ही दर्शकों का भी दिल जीतकर फिल्म को सुपरहिट बना दिया। 1976 में प्रदर्शित फिल्म 'तपस्या' राखी के फिल्मी कॅरियर की महत्वपूर्ण फिल्मों में से एक है। राजश्री प्रोडक्शन के बैनर तले बनी इस पारिवारिक फिल्म में राखी ने एक ऐसी युवती का किरदार निभाया जो अपने परिवार के लिए जीवन भर शादी नहीं करने का फैसला लेती है और अपने पारिवारिक दायित्व को शिद्दत से निभाती रहती है।

राखी की सफल फिल्मे

अभिनय में एकरूपता से बचने और खुद को चरित्र अभिनेत्री के रूप में भी स्थापित करने के लिए राखी ने खुद को विभिन्न भूमिकाओं में पेश किया। 1980 में रिलीज हुई प्रकाश मेहरा की सुपरहिट फिल्म 'लावारिस' में और रमेश सिप्पी की फिल्म 'शक्ति' में वह फिल्म अभिनेता अमिताभ बच्चन की मां की भूमिका निभाने से भी नहीं हिचकी। इससे पहले राखी ने अमिताभ बच्चन के साथ कई फिल्मों में बतौर नायिका काम किया था। फिल्म 'लावारिस' में उन पर फिल्माया गया यह गीत 'मेरे अंगने में तुम्हारा क्या काम है...' आज भी लोकप्रिय है।

राखी की उम्र 16 साल की भी नहीं थी जब 1963 में उनके पिता ने उनकी शादी बंगाली पत्रकार और फिल्म निर्देशक अजय विश्वास से करवा दी थी, यह विवाह परिवार की इच्छा से हुआ, लेकिन शादी दो साल भी नहीं चल सकी और 1965 में दोनों अलग हो गए।

90 के दशक में राखी ने कई फिल्मों में मां के किरदार को रूपहले पर्दे पर साकार किया। इन फिल्मों में 'राम लखन', 'जीवन एक संघर्ष', 'प्रतिकार', 'सौगंध', 'खलनायक', 'अनाड़ी', 'बाजीगर', 'करण-अर्जुन' और 'सोल्जर' जैसी फिल्में खास तौर पर उल्लेखनीय है। फिल्म 'राम–लखन' के अपने सशक्त अभिनय के लिए राखी को सर्वश्रेष्ठ सहायक अभिनेत्री के पुरस्कार से सम्मानित किया गया। फिल्म इंडस्ट्री में राखी की जोड़ी सुपरस्टार अमिताभ बच्चन के साथ खूब जमी। यह फिल्मी जोड़ी सबसे पहले 1976 में प्रदर्शित फिल्म 'कभी-कभी' में नजर आई। इसके बाद इस जोड़ी ने 'कसमें वादे', 'मुकद्दर का सिकंदर', 'त्रिशूल', 'जुर्माना', 'काला पत्थर', 'बरसात की एक रात', 'बेमिसाल' और 'रिश्ता द बांड ऑफ लव' में एक साथ काम कर दर्शकों का खूब मनोरंजन किया। सुनील दत्त ने एक बार बातचीत में बताया था, कि शूटिंग के दौरान वो क्षण मैं कभी नहीं भूल पाता जब राखी ने ऐसा अभिनय किया कि मेरी आंखें खुली रह गईं। सीन था एक नई नवेली दुल्हन अचानक विधवा हो जाती है। इस पर राखी ने एक ही पल में अपने हाथ की चूड़ियां तोड़कर, माथे से बिंदिया मिटाकर एक झटके में जिस तरह सब तहस-नहस किया उसे देखकर तो मैं ही नहीं, हमारी सारी यूनिट हैरान रह गई थी। मेरी आंखों से तो आंसू ही टपक पड़े। हम सभी को एक पल के लिए लगा कि हम सच में ऐसा कोई हादसा देख रहे हैं क्या? राखी के शुरुआती दौर में ही फिल्मों में विधवा के रोल करने पर कुछ फिल्मकारों का मत था कि यह लड़की पागल है क्या?

पद्मश्री से सम्मानित राखी

राखी अपने फिल्मी कॅरियर में तीन बार फिल्म फेयर पुरस्कार से सम्मानित हो चुकी है। सबसे पहले फिल्म 'दाग' के लिए उन्हें सर्वश्रेष्ठ सहायक अभिनेत्री का पुरस्कार मिला। इसके बाद 1976 में 'तपस्या' के लिए सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री और 1989 में फिल्म 'राम लखन' के लिए सर्वश्रेष्ठ सहायक अभिनेत्री का फिल्म फेयर अवार्ड मिला। 2003 में प्रदर्शित फिल्म 'शुभ मुहूर्त' के लिए राखी सर्वश्रेष्ठ सहायक अभिनेत्री के राष्ट्रीय पुरस्कार से भी सम्मानित की गईं। फिल्म के क्षेत्र में राखी के महत्वपूर्ण योगदान के लिए भारत सरकार ने 2003 में पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित किया। राखी ने अपने तीन दशक लंबे सिने कॅरियर में लगभग 90 फिल्मों में काम किया है। राखी इन दिनों एकाकी जीवन व्यतीत कर रही हैं। हालांकि राखी को शुरुआती तीन बरसों में मिली बड़ी सफलता किसी-किसी को ही नसीब होती है, लेकिन राखी ने इतनी जल्दी सब कुछ पाने के बाद एक और बड़ा फैसला लेकर सभी को चौंका दिया था। वह फैसला था राखी का गीतकार-फिल्मकार गुलजार से शादी करने का। राखी के अभिनय और सुंदरता पर मोहित गुलजार ने उनके सामने शादी का प्रस्ताव रखा तो राखी ने उसे स्वीकार कर लिया, क्योंकि वह भी गुलजार की प्रतिभा को पसंद करती थीं। दोनों ने 15 मई 1973 को विवाह रचा लिया। उसी बरस 13 दिसंबर को इनके यहां बेटी मेघना ने जन्म लिया, लेकिन दिसंबर 1974 आते-आते राखी और गुलजार की राहें जुदा हो गईं।

आजादी चाहती है राखी मजूमदार

1970 से 2000 तक यानी 30 बरसों तक फिल्मों में शानदार अभिनय से फिल्म संसार में अपनी अलग पहचान बनाने वाली राखी मुंबई से दूर एक फार्म हाउस में एकाकी जीवन जी रही हैं। राखी एक किसान की तरह रहती हैं। सब्जियां उगाती हैं, बागवानी करती हैं। उनके इस फार्म हाउस में कितने ही किस्म के कुत्ते और बिल्लियों के साथ बहुत से जानवर रहते हैं जिन्हें वह अपने हाथों से खिलाती-पिलाती हैं और नहलाती-धुलाती हैं। राखी के बारे में यह बात बहुत कम लोग जानते हैं कि स्टार रहते हुए भी वह अपने सभी काम खुद करती रहीं। चाहे घर के कामकाज की निगरानी हो या कानूनी मसले या इनकम टैक्स जमा कराना हो। यहां तक कि राखी ने कभी अपने लिए प्रचार एजेंट नहीं रखा। राखी बताती थीं, मैं समझती हूं कि जो इंसान अपने काम खुद कर सकता है उसे वो काम करने चाहिए। मैं जब लगातार शूटिंग में व्यस्त रहती थी, तब भी रविवार के दिन अपने बहुत से जरूरी काम निपटा लेती थी। 15 अगस्त को आजादी के दिन जन्मी राखी मजूमदार अपनी आजादी को कितनी अहमियत देती हैं, यह सब उनकी जिंदगी को देख कर समझा जा सकता है। कुछ बरस पहले राखी से एक इंटरव्यू में पूछा गया था कि वे इतनी एकांत प्रिय क्यों हो गई हैं? इस पर राखी का जवाब था, मैं अब चकाचौंध की दुनिया में नहीं रहना चाहती। मैं काफी फिल्में कर चुकी हूं। मुझे अब न ज्यादा रुपयों की जरूरत है, न फिल्मों की। मेरी दुनिया अब पनवेल का मेरा फार्म हाउस है। जहां मैं हूं और मेरे प्रिय जानवर। मुझे अपनी आजादी से प्यार है। जहां मुझसे कोई सवाल नहीं कर सकता। मैं अपनी जिंदगी स्वतंत्र ढंग से जीती हूं। कोई मेरे प्रति दया या सहानुभूति दिखाए वो मुझे जरा भी अच्छा नहीं लगता। अगर मुझे कोई दुख मिलेगा तो मैं उससे खुद निपटने में सक्षम हूं। मुझे रोने के लिए किसी के कंधे का सहारा नहीं चाहिए। मैं फिल्में भी वही करती हूं, जो रोल मुझे पसंद हों। मैं कभी मुश्किल हालात में रही तब मैंने पैसों के लिए कोई भी फिल्म साइन नहीं की। मैं अपने मुंह से अपनी तारीफ करना पसंद नहीं करती। लेकिन आप ध्यान से देखेंगे तो मैंने हमेशा लीक से हटकर और चुनौती वाली भूमिकाएं ही की हैं। हालांकि राखी बचपन में वैज्ञानिक बनने का सपना देखती थीं, लेकिन नियति को कुछ और ही मंजूर था।

- **बतौर अभिनेत्री राखी ने अपने फिल्मी कॅरियर की शुरुआत 1967 में रिलीज हुई बंगला फिल्म 'वधूवरण' से की, इस बीच उनकी मुलाकात निर्माता-निर्देशक सुनील दत्त से हुई जिन्होंने राखी को अपनी नई फिल्म 'रेशमा और शेरा' में काम करने का प्रस्ताव दिया, जिसे राखी ने सहर्ष स्वीकार कर लिया।**
- **राखी ने 3 दशकों के सिने कॅरियर में 90 फिल्मों में काम किया, राखी को मिली बड़ी सफलता किसी-किसी को नसीब होती है, लेकिन राखी ने गीतकार-गुलजार से शादी करने का फैसला लेकर सभी को चौंका दिया था, राखी इन दिनों एकाकी जीवन व्यतीत कर रही हैं।**

मासिक राशिफल

पंडित उपेन्द्र कुमार उपाध्याय
9897450817, 9897791284
ज्योतिषाचार्य, आयुर्वेदरत्न, कथावाचस्पति, यज्ञानुष्ठान विशेषज्ञ
अध्यक्ष-श्री शिवशक्ति ज्योतिष पीठ, बदायूं
निवास प्रभातनगर, निकट इंद्राचौक, सिविल लाइंस, बदायूं (यूपी)

मेष-

इस माह आपका आत्मविश्वास और ऊर्जा का स्तर ऊंचा रहेगा, यदि आप मित्रों के साथ यात्रा पर जा रहे हैं तो पैसा सोच समझकर व्यय करें, धन हानि हो सकती है। व्यक्तिगत मामलों को सुलझाते समय उदारता दिखाएं, लेकिन अपनी भाषा पर नियंत्रण रखें। बहुत करीबी प्रियजन से मिलने का योग बन रहा है। मुश्किल मामलों के समाधान के लिए अपने संपर्क का उपयोग करें, प्रेमी के साथ समय बिताने का अवसर मिलेगा। जीवनसाथी के साथ कुछ बेहतरीन पल गुजार सकेंगे। उपायः इत्र, परफ्यूम, कपूर का इस्तेमाल व दान करें कार्य सिद्ध होंगे।

कर्कः-

इस माह शारीरिक श्रम आपके सौंदर्य को निखारेगा। घर के सदस्यों को घुमाने ले जा सकते हैं। यात्रा में धन खर्च होगा। जीवनसाथी के साथ खरीदारी करेंगे। दांपत्य जीवन में गलत फहमी दूर होंगी। प्यार जीवन की डोर को मजबूत बनाए रखेगा। किसी तीसरे व्यक्ति की बाते सुनकर अपने प्यार के बारे में कोई राय न बनाएं। लोग आपको अपने बढ़िया कार्य के लिए पहचानेंगे। यदि आप यात्रा कर रहें है तो सभी जरूरी दस्तावेज साथ रखे और दिक्कत से बचें। उपायः सफेद चंदन की जड़ सफेद कपड़े में लपेटकर अपने पास रखें सभी कार्यसिद्ध होंगे।

तुलाः-

इस माह सेहत का ध्यान रखने की जरूरत है। माह के मध्य में कर्ज चुकाने में परेशानी का सामना करना पड़ेगा। भावनात्मक रूप से खतरा उठाना आपके लिए हितकारी हो सकता है। परिजनों की गैरजरूरी मांगों को नजरअंदाज करने में भलाई होगी। प्रसिद्ध लोगों के मिलन से नई योजना का आइडिया मिलेगा। दूर की यात्रा का योग बन रहा है, लेकिन सफर के दौरान सावधान रहने की आवश्यकता है, धन की हानि हो सकती है। जीवन संगनी से अनबन हो सकती है। उपायः अपने प्रिय को सफेद शंख, शिप की वस्तुएं गिफ्ट करें सभी कार्य सिद्ध होंगे।

मकरः-

इस माह संत महात्मा का आशीर्वाद मानसिक शांति प्रदान करेगा। माता-पिता फिजूलखर्ची से चिंतित हो सकते हैं। आप समूह में हों तो वाणी पर ध्यान रखें वरना कड़ी आलोचना का शिकार हो सकते हैं। यह माह कार्यक्षेत्र में आपकी प्रसिद्धि बढ़ा सकता है। आपके सहकर्मी आपके काम की तारीफ करेंगे। बॉस भी आपके काम से खुश होगा। कारोबारी भी आज कारोबार में मुनाफा कमा सकते हैं। खाली समय में कोई गेम खेलना ठीक रहेगा। जीवनसाथी से विवाद की प्रबल संभावना है। उपायः चंद्रमा की चांदनी में बैठ कर खीर खाएं कार्य सिद्ध होंगे।

वृषभः-

इस माह आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा, इस राषि के जो जातक लघु उद्यमी हैं उन्हें किसी करीबी की आर्थिक लाभ पहुंचाने वाली कोई अच्छी सलाह मिल सकती है। पारिवारिक सदस्य या जीवनसाथी तनाव की वजह बन सकते हैं। आत्मविश्वास में वृद्धि होगी और तरक्की साफ नजर आएगी। कोरोनाकाल में खाली समय का पूरा आनंद उठाने के लिए लोगों से दूर रह कर पसंदीदा और महत्वपूर्ण काम निपटाने चाहिए। प्रेमी युगल सामान्य दिनों की अपेक्षा इस समय आपका अधिक ख्याल रखेगा। उपायः भैरो बाबा के मंदिर में दूध चढ़ाएं कार्य सिद्ध होंगे।

सिंहः-

इस माह आपको आलोचना का शिकार होना पड़ सकता है। धन आपके काम तभी आएगा जब फिजूलखर्ची से बचेंगे। जिस पर भी आप भरोसा करते हैं, मुमकिन है वह आपको धोखा दे दे। न्यायालय संबंधी कार्यों में सफलता से मुश्किले हल करने में कामयाबी मिलेगी। आपका प्रिय आपको सदैव प्यार करता है, उस पर किसी तरह का संदेह न करें। कार्य में धीमी प्रगति हल्का-सा मानसिक तनाव दे सकती है। जीवनसाथी का सहयोग मिलेगा। उपायः तामसिक वस्तुओं मांस-मदिरा का सदैव के लिए त्याग कर दें सभी कार्य सिद्ध होंगे।

वृश्चिकः-

इस माह मजबूत और स्पष्टवादी बनें। कठोर फैसले लेने के साथ उनके परिणामों का सामना करने के लिए तैयार रहें। माह के मध्य में धन लाभ के योग हैं, इसलिए स्वभाव को शांत रखने की जरूरत है। आक्रमकता धन लाभ के योग से वंचित कर सकती है। रिश्तेदारों से कीमती तोहफा मिल सकता है। प्यार के नजरिए से देखें तो आप जीवन के रस का भरपूर आनंद लेंगे। कामकाज में अपनों का सहयोग और स्नेह प्राप्त होगा। जीवनसाथी का आंतरिक सौंदर्य बाहर भी पूरी तरह महसूस होगा। उपायः बिस्तर पर क्रीम कलर की चादर बिछाएं कार्य सिद्ध होंगे।

कुंभः-

इस माह व्यापार को मजबूती देने के लिए कोई अहम कदम उठा सकते हैं, कोई करीबी कारोबार में आपकी आर्थिक मदद कर सकता है। दोस्तों और रिश्तेदारों के साथ मौज मस्ती करेंगे। सामाजिक मान प्रतिष्ठा बढ़ेगी। कारोबार से जुड़ी गोपनियता किसी के साथ साझा न करें। गोपनियता भंग होने पर बड़ी किसी मुश्किल में पड़ सकते हैं। हालात से उबरने के लिए दृढ़ इच्छा-शक्ति बनाए रखें। माह के मध्य में इस राशि के जातकों को वैवाहिक जिंदगी की अहमियत का अहसास होगा। उपायः मसूर की लाल दाल किसी गरीब को दान करने से कार्य सिद्ध होंगे।

मिथुनः-

इस माह सेहत पर ध्यान देने की जरूरत है। आपका धन आपके काम तभी आएगा जब आप फिजूल खर्ची से बचेंगे। आपका कोई दुश्मन आपको नुकसान पहुंचाने की कोशिश कर सकता है। कुछ लोग आपके खिलाफ षडयंत्र रच रहे हैं। ऐसे लोगों से बचने की आवश्यकता है जो आपका अहित चाहते हैं। आपकी ऊर्जा का स्तर ऊंचा रहेगा। आपका प्रिय आपकी खुशी की वजह साबित होगा। आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। तरक्की के रास्ते खुलेंगे। कर्म-कांड, हवन-पूजन आदि का आयोजन करेंगे। उपायः खट्टी-मीठी टॉफियां, छोटी कन्याओं में बांटे कार्य सिद्ध होंगे।

कन्याः-

इस माह धन संचय करने के लिए परिजनों की सलाह लेना आवश्यक है। परिजनों की सलाह से आर्थिक स्थिति में सुधार के योग बन रहे हैं। सभी विवादास्पद मुद्दों पर अनावश्यक बहस से बचें, इस माह जीवन में सच्चे प्रेम की कमी का अनुभव करेंगे। चिंता न करें समय के साथ बदलाव आते हैं और आपकी रोमांटिक जिंदगी में फिर बदलाव आएगा। आफिस से घर आते समय सावधानी से वाहन चलाने की जरूरत है, दुर्घटना की संभावना है। जीवनसाथी आप पर शक कर सकता है। उपायः सूर्यदेव को प्रातःकाल लालपुष्प अर्पित करें कार्य सिद्ध होंगे।

धनुः-

इस माह नफरत से दूर रहे क्योंकि यह आपके मन के साथ शरीर पर भी बुरा प्रभाव डाल सकती है। रात के समय धन लाभ होने की संभावना है, रुके हुए धन की प्राप्ति से मन प्रसन्न होगा। बच्चों की तरफ से कोई खुश खबर मिलने वाली है। शत्रु पक्ष आपके रिश्तों में दरार डालने की कोशिश करेंगे। पेशेवर तौर पर यह माह सकारात्मक रहेगा। अपनी खुशियों का इजहार करने के लिए उतावलापन न दिखाए। जीवनसाथी का रुखापन देखने को मिल सकता है। उपायः लक्ष्मीनारायण मंदिर में नियमित प्रसाद चढ़ाएं सभी कार्य सिद्ध होंगे।

मीनः-

इस माह आपकी प्रगति की बाधाएं दूर होंगी। घर से बाहर निकलते समय सकारात्मक विचार आपकी प्रतिष्ठा बढ़ाएंगे। किसी कीमती वस्तु के चोरी होने से मूड खराब हो सकता है। पुराने संबंधियों के मिलन से पुराने रिश्तों में ताजगी आएगी। किसी प्राकृतिक सौंदर्य से खुद को सराबोर महसूस करेंगे। कार्यालय में सब कुछ आपके पक्ष में रहेगा। जीवन के अहम मुद्दों पर घरवालों के साथ बैठकर बात कर सकते हैं। यात्रा संभव है, जीवनसाथी का आपके ऊपर खास ध्यान रहेगा। उपायः शिव मंदिर में नियमित गंगाजल चढ़ाएं सभी कार्य सिद्ध होंगे।

nupur NRITYA .com

नुपुर नृत्य कला केंद्र
हल्द्वानी

में सभी के लिए
01 फरवरी 2021 से पुनः
कक्षाएं आरंभ
हो गई है।

जिसमें क्लॉसिकल डांस, तबला वादन, सेमी क्लासिकल, गिटार, पेंटिंग आदि का प्रशिक्षण राज्य सरकार द्वारा निर्धारित मानकों का पालन करते हुए तथा कक्षों (क्लास) को नियमित रूप से सेनेटाइज कर आधुनिक तरीके से देने की व्यवस्था पूर्ण कर ली गई है ।

एडमिशन के लिए संपर्क करें।

www.facebook.com/nupurnrityakalakendra
You Tube: Search: nupurnrityakalakendra
nupurnritya99@gmail.com
www.nupurnritya.com

NEAR KANDPAL ENT. Hospital, SHAKTI SADAN GALI, NAWABI ROAD, HALDWANI (NAINITAL), Uttarakahnd

05946 220841, 91 9760590897
91 9411161794